

दोहा—श्रीगणपति मन्दाकिनी, शारद दश दिक् ईश ।

हरिहर ब्रह्मा शेष गुरु, तिनको नावौं शीश ॥ १ ॥

सोरठा—श्रीराजेन्द्र नरेश, ताके सुंदर राजमें ।

नारनौल शुभ देश, इन्द्रप्रस्थमें परदिशा ॥ १ ॥

पंडित रामविलास, तिनके शिष्य जगदीशने ।

भाषा करी प्रकाश, केशवीजातक ग्रंथकी ॥ २ ॥

मोहिं दासानुजदास, जान आप किरपा करी ।

क्षमा करो द्विज तास, मैं मूरख मतिमंद हूँ ॥ ३ ॥

चौपाई—मोर नाम हैगा जगदीश । गुरुचरणनमें नावौं शीशा ॥ १ ॥

रामविलास गुरुजी मेरा । उनके चरणनका हूँ चेरा ॥ २ ॥

मथुरामें मेरी मित्राई । जिन या भाषा साथ बनाई ॥ ३ ॥

ग्रंथ देख मैं अति कठिनाई । संरुतमें निज भाषा गाई ॥ ४ ॥

देख चपलता द्विजसमुदाई । क्षमा करो निजपुत्रकी नाई ॥ ५ ॥

श्लोक—शास्त्रकर्ता भवेद्दयासो लेखको गणनापकः ।

तयोर्विचलिता बुद्धिर्मनुष्याणां तु का कथा ॥ १ ॥

भूमिका ।

ज्योतिषं नयनं स्मृतम् ।

मित्र पाठकगण ! आप सब महाशयोंको विदितही होगा कि, चारेंद्व
वर्णोंको शिक्षाप्रणाली बतलानेवाला दिव्यपुस्तक वेद है और उसके शिक्षा
कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष यह छः अंग हैं और पदंग वेद
पढ़ना ब्राह्मणोंसे लेकर वैश्यों पर्यंत तीनों वर्णोंका धर्म है । उसही हमारे
शिरोधार्य वेदका एक अंग ज्योतिष है उसके दो भाग एक व्यक्त कहिये
प्रत्यक्ष दृष्टफल ग्रहण अस्तोदयादि दूसरा अव्यक्त कहिये अदृष्ट भविष्यफल
जातक और वर्षफलादिक, अब यहां अपनेको जातकके विषे विचार करने
है कि, प्राणीके यादजन्ममें जो शुभ किंवा अशुभ फल होता है कहिये कौन
समयमें किसको लाभ किंवा हानि जय किंवा पराजय किससे सुखोत्पत्ति
किंवा पीडा और कौन समयमें रोगादिकोंसे मरणप्राय संकट और शरीरसुख,
कुटुम्बसुख, भ्रातृसुख, मित्रसुख, पुत्रसुख, कलत्रसुख, पितृमातृसुख इत्यादि
बातोंका ज्ञान जिस ग्रंथसे होता है कहिये ज्योतिषीलोग जिस ग्रंथके आधारसे
जन्मपत्रिका लिखते हैं उसको जातक ऐसा कहते हैं । संस्कृतमें जातकपर
बहुत ग्रंथ हैं परंतु सबमें प्रसिद्ध और विद्वन्मान्य ऐसा ग्रंथ केशवाचार्यकृत
जातकपद्धति जिसको “केशवीजातक ” कहते हैं सो यह ग्रंथ संस्कृतभाषामें है
इस वारते उसका उपयोग मनुष्योंको बहुत होता नहीं इस वारते उसका
सान्त्वय भाषाटीका निर्माण किया कारण इसकी सहायतासे केशवीजातकका
यथार्थ ज्ञान होके पत्रिकाका गणित कैसे करना सो खुलासे मालूम होगा, इसमें
केशवीजातकके मूल श्लोक लिखके वह सब श्लोकोंका अन्वय और खड़ी
भाषामें अर्थ लिखा है तथा ग्रह और पड़बल इत्यादि गणित अल्पायाससे
करनेमें आवें इस वारते सारणीको योजना करके उस सारणीका कैसा उपयोग
करना यह स्पष्ट रीतिसे लिखके उनके पृथक् पृथक् उदाहरण लिखे हैं और

जन्मपत्रिकाका गणित कैसे करना यह समझनेके वास्ते उत्तम उदाहरण लिखा है इसमें वर्गमूल निकालनेकी रीति और उच्चतल तीन प्रकारसे करनेकी रीति लिखी है और ग्रहोपरि तथा जावोपरि दृष्टि करनेको तीन प्रकारसे लिखा है और अष्टोत्तरीदशा और विंशोत्तरीदशा और योगिनी यह तीनों दशाओंकी नक्षत्रोंसे उत्पत्ति और उनके पति और वर्षादि दशा अन्तर्दशा कोष्ठक प्रत्यंतर दशा लिखके जन्मपत्रिका लिखनेका क्रम बनाया है ।

यह ग्रंथ लोकमें उपयुक्त होनेके वास्ते जो परिश्रम किया है सो देखनेसे मालूम होगा अब आशा है कि गुणग्राहक सज्जन पुरुष इसको अवलोकन कर भरे परिश्रमको सफल करेंगे । आशा है कि सज्जन पुरुष मत्सरताको छोड़कर सुझते मनुष्यधर्मातुसार जो भूल हुई है उसको क्षमा करें और सुझको सुचना दें कि जिससे वह भूल पुनरावृत्तिमें दुरुस्त की जायगी ।

श्लोक—विद्वानेव हि जानानि विद्वज्जनपरिश्रमम् ॥ न हि बंध्या विजानाति सुखं प्रमववेदनाम् ॥ १ ॥ करोमि केतकीप्रयोदाहतिं लोककाम्पया ॥ बालानां सुखबोधाय न तु पांडित्यगर्विनः ॥ २ ॥ इत्यलम् ॥

पं० जगदीशप्रसाद.

विशेष द्रष्टव्य—भ्रमवश ११३ से १२८ तक पत्रांक भूलसे नहीं लगाये गये, किन्तु विषय सब बराबर है.

अथ केशवीजातकस्य विषयानुक्रमणिका ।



विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
मंगलाचरण	१	मंगलादिस्पष्टसारणी प्रवेश	२९
अहर्गणादिसाधन	२	शुक्र मंगल इनका विशेष	३०
अहर्गणोदाहरण	३	भौमादि ग्रहोंकी स्पष्टगति	३१
मध्यमग्रहसारणीप्रवेश	४	भौम बुध शुक्र इनकी गतिमें विशेष ..	३१
रविमध्यसारणी	५	पंचताराचक्रम्	३२
चन्द्रमध्यसारणी	६	भौमशीघ्रफलसारणी	३३
चन्द्रोच्चमध्यसारणी	८	भौममंदफलसारणी	४०
राहुमध्यसारणी	१०	बुधशीघ्रफलसारणी	४३
भौममध्यसारणी	२	बुधमंदफलसारणी	४९
शुक्रकेन्द्रमध्यसारणी	१३	शुक्रशीघ्रफलसारणी	५३
शुरुमध्यसारणी	१५	शुरुमंदफलसारणी	५९
शुक्रकेन्द्रमध्यसारणी	१७	शुक्रशीघ्रफलसारणी	६१
शनिमध्यसारणी	१९	शुक्रमंदफलसारणी	६८
मध्यमसूर्यसाधनोदाहरण	२०	शानेशीघ्रफलसारणी	७१
रातकालिकमध्यमग्रहगतिसहित	२१	शनिमंदफलसारणी	७७
मध्यमग्रहसे स्पष्ट ग्रह	११	प्रथमशीघ्रफल	८०
स्पष्टसूर्यसारणीप्रवेश	२२	मंदफल	८१
अयनांशसाधन उदाहरण	११	अंतिमशीघ्रफल	११
चरखंडसाधन उदाहरण	२३	गत्युदाहरण	८२
सूर्यकी स्पष्टगति	२४	वक्रमार्ग अस्त उदय	११
दिनमान रात्रिमान	११	सूर्यादिस्पष्टग्रहगतिसहित	८३
सूर्यस्पष्टसारणीचक्र	११	लंकोदयसे स्वदेशका उदय ल.न।	८४
रश्मिरेखासाधन उदाहरण	२५	लग्न बनानेकी रीति	८५
त्रिफलचन्द्रसंस्कार	२६	लग्नसे अमीष्ट काल करनेकी रीति	८७
रश्मिरेखासारणीप्रवेश	२७	नतोन्नतपूर्वक दशमचतुर्थभाव	८८
चन्द्रकी स्पष्टगति	११	शेष आठ भाव साधन संधि	८९
चन्द्रस्पष्टसारणी	२८	क्षयचय फलसाधन	११
स्पष्टचन्द्र साधनेका उदाहरण	२९	संधिसहित द्वादशभावचक्र	९३

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
जन्मप्रभावोद्गच्छक ९१	मकराशिशसप्त० १९०
ग्रहभावफलचक्र ११	कुंभराशिसप्त० १९२
ग्रहदृष्टिपाधन ९४	मीनराशिसप्त० १९४
दृष्टिफलसारणीप्रवेश ९५	ग्रहसप्तवर्गपतिचक्र १९६
गौरचन्द्रबुधशुक्रदृष्टिगारणी ९७	भावसप्तवर्गपतिचक्र ११
मै.मदृष्टिगारणी ९९	सप्तवर्गयशोदाहरण ११
अनिदृष्टिगारणी १०१	ग्रहसप्तवर्गफलचक्र १९७
गुरुदृष्टिगारणी १०३	युग्मायुग्मबलोदाहरण १९९
दृष्टिका उदाहरण १०५	फन्ट्रादिवलोदाहरण ११
ग्रहदृष्टिचक्र ११	केन्द्रादिफलचक्र ११
भावदृष्टिचक्र १०६	ट्रेण्काणबलोदाहरण ११
फलसाधन १०७	ट्रेण्काणफलचक्र १६०
ग्रहोका उच्चादिकेष्टक १०९	स्थानफलयोगचक्र ११
ग्रहोकी तात्कालिक भैत्रीकरण ११	दिग्बलकालिषल ११
ग्रहोकी पंचधाभिभैत्री ११	दिग्बलसारणीप्रवेश १६१
नितर्गभैत्रीचक्र तत्कालिकपंचधा-		दिग्बलसारणी ११
भैत्री च ११२	दिग्बलोदाहरण १६२
उद्योगलसारणी प्रवेश.... ११	दिग्बलचक्रनतोन्नतबलोदाहरणचक्र	
उद्योगलसारणीराशिफल अंशकला	१२९	सहित १६३
उद्योगलोदाहरण द्वितीय प्रकरण १३०	वर्षपति मासपति दिनपति १६४
उद्योगलचक्र ११	होरापति चानानेकी रीति १६५
मैपराशिसप्तवर्गपतिचक्र १३२	पक्षबलसारणी प्रवेश.... ११
वृषपराशिसप्तवर्गपतिचक्र १३४	पक्षबलसारणी १६६
मिथुनराशिसप्त०.... १३६	पक्षबलोदाहरण ११
कर्कशराशिसप्त० १३८	पक्षबलचक्र १६७
'सहाराशिसप्त० १४०	दिनराशिप्रिभागबलोदाहरण ११
कन्याराशिसप्त० १४२	दिनराशिप्रिभागबलचक्र ११
तुल्याराशिसप्त० १४४	वर्षपतिबलोदाहरण ११
वृश्चिकराशिसप्त० १४६	मासपतिबलोदाहरण ११
धनराशिसप्त० १४८	दिनपतिबलोदाहरण १६८

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
होरापतिबलोदाहरण.... १६८	माषवलसाधन १८७
वर्षमासादिनहोरापतिबलचक्र ११	माषबलोदाहरण १८८
कालबलयोगचक्र ११	माषबलचक्र १८९
चेष्टाबलनिसर्गबल ११	रविचन्द्रका चेष्टाबलकेन्द्र १९०
क्रांति चनानेकी रीति १६९	चेष्टाबलोदाहरण ११
क्रांत्यंकचक्र १७०	रश्मीष्टकृत्साधन १९१
क्रांतिसारणीप्रवेश ११	वर्गमूल निकालनेकी रीति ११
क्रांत्युदाहरण ११	सावयव अंकका मूल निकालनेकी	
क्रांतिसारणी १७१	रीति.... १९२
क्रांतिचक्र ११	सूक्ष्म रीति और सवसे अच्छी रीति १९३
अयनबलसारणीप्रवेश १७७	रश्म्युदाहरण । ११
अयनबलसारणी १७८	चेष्टाबलउच्चबलचेष्टार० उच्चर० च० ११	
अयनबलोदाहरण १७९	इष्टोदाहरण इष्टचक्र १९४
अयनबलचक्र ११	कृष्टोदाहरण ११
भौमादिकोंका शीघ्रोच्च चनाना १८०	कृष्टचक्र.... ११
चष्टाकेन्द्रचक्र ११	इष्टकृष्टबलोदाहरण ११
चेष्टाबलसारणीप्रवेश १८१	इष्टकृष्टबलचक्र १९५
बलसारणी ११	इष्टकृष्टइष्ट्युदाहरण ११
चेष्टाबलोदाहरण १८२	इष्टकृष्टलष्टचक्र ११
चेष्टाबलचक्र ११	सप्तवर्गशुभाशुमसाधन १९६
अयनचेष्टाबलयोगचक्र ११	उच्चमूलत्रिकोणस्वगृहका निर्णय १९७
नैसर्गिकबलोदाहरण ११	उदाहरण.... १९८
नैसर्गिकबलचक्र १८३	वर्गशसाहितसप्तवर्गशुभ० २००
भौमादिकोंका शीघ्रांकादिकीष्टक.... १८४	वर्गशसाहितसप्तवर्गशुभच० २०१
शर करमेके वास्ते शीघ्रकर्ण लगना		उदाहरण.... ११
इ उतकी रीति १८५	शुभाशुमपंक्तिचक्र २०२
भौमादिकोंका शर बनानेकी रीति.... ११	उदाहरण.... ११
हमबलोदाहरण १८६	मध्यमशुभाशुमचक्र २०३
हमबलचक्र ११	इष्टकृष्टलष्टगुणनचक्र.... २०४
पदबलैक्यचक्र १८७	इष्टकृष्टलष्टगुणनपदचक्र २०५

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
सप्तशुभाशुभचक्र	२०६	नितर्गायुके गुणक	२२१
अंशायुसाधनार्थं चेष्टगुणकचक्र		पिंडायुरुदाहरण	११
गुणक	२०७	नितर्गायुरुदाहरण	११
स्फुटगुणक	२०८	जीवायुरुदाहरण	२२२
आश्रयगुणकसाधन	२०९	पिण्डायुचक्र	११
आश्रयगुणकसाधनचक्र	२१०	नितर्गायुचक्र	११
आश्रयगुणके विशेषसंस्कार और		जीवायुचक्र	११
कर्मयोगगुणकायुर्भागसाधन	११	पिण्डायुर्दायत्रये लग्न युर्दायसा-	
आश्रयगुणकचक्र	२१२	धनचक्र	२२३
कर्मयोग्यगुणकोदाहरण	११	चतुर्णामायुपां व्यवस्था	२२४
कर्मयोग्यगुणकचक्र	११	अंशायुश्चक्र	२२५
आयुर्भागोदाहरण	११	पिण्डायुश्चक्र	२२६
आयुर्भागचक्र	११	नितर्गायुश्चक्र	११
हानिसंस्कृतायुभागचक्र	११	अंशपिंडानितर्गायुयोगचक्र	११
चक्रपाताद्देशानि	११	योगतृतीयांशमिश्रायुश्चक्र	११
वर्षाद्यंशायुर्दयानयन	२१४	यलापलक्षण	२२७
आयुर्भागकलाचक्र	२१५	शिष्यसंदेहनिवारण	११
कर्मयोग्यगुणगुणितायुर्भागकलाचक्र ११		आयुर्दयानयन	२२८
वर्षाद्यंशायुचक्र	२१६	दशाध्याय	२२९
पिण्डानितर्गाजीवशर्मायुर्दयानयन ११		दशक्रम	२३०
सूर्यादिग्रह	२१८	लग्नाद्यदशामातृवल	२३१
सचक्र	११	दशाक्रम	२३२
पिंडायायुर्भागचक्र	११	दशाक्रमवलचक्र	११
चक्रार्धहानिसंस्कृतपिंडायायुर्भाग-		जन्मलग्न	११
चक्रम्	११	अंशायुचक्र	२३३
लग्ने पापग्रहे सति विशेषसंस्कारः	२१९	ग्रह और लग्न इनका चलचतुर्थांश	
पूर्वोक्तहानिसंस्कृतपिण्डायायुर्मा-		गृह और तदर्ध होरादि व स्थान २३४	
गचक्र	२२०	वर्गशवलसे गुणक	२३५
पिंडानितर्गाजीवशर्मायुर्दयानयन	११	गुणाकारका ऐक्यदशाक्रमवलचक्र ११	
पिण्डायुके गुणक	२२१	पिण्डायुर्दशाचक्र	२३६

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
निसर्गयुक्ताक २३६	महर्गणप्रयोजन २४९
रिष्टमंगविचारांतर दशाक्रमवलदाढ्य		दशारंभसमये स्पष्टसूर्यादि २५१
मसांतरनिराकरण २३७	दशारंभसमये "
अंतर्दशाकरण "	सूर्यचन्द्रसे तिथि काण नक्षत्र और	
अंतर्दशाक्रम २३८	योग लानेका प्रकार "
समच्छेद करनेकी रीति २३९	ग्रहदशामें प्रतिदिनचन्द्रफल २५४
अंशछेदचक्र २४०	दशाफलदशारिष्टदशामें २५५
समच्छेदचक्र "	अष्टकवर्गफल २५६
सूर्यदशामें अन्वर्दशा "	काचिजातकफलव्यमिचारमें कर्त-	
सूक्ष्मफलज्ञानार्थ विदशादिसाधन २४१	व्यता २५७
सूर्यमहादशांतर्गतसूर्यांतर्दशामध्ये		ग्रंथोपसंहार २५८
विदशाचक्र २४२	ग्रंथप्रशंसा "
लग्नमहादशांतर्गतलग्नांतर्दशामध्ये		चरसंस्कारसारणी २५९
विदशाचक्र "	बहुविधदेशोंकी अक्षभा २६१
चन्द्रमहादशांतर्गतचन्द्रांतर्दशामध्ये		लग्नसारिणीचक्र २६३
विदशाचक्र २४३	दशमभावसारिणीचक्र २६४
भौममहादशांतर्गतभूमिंतर्दशामध्ये		लग्नसारिणीप्रवेश २६५
विदशाचक्र "	दशमभावसारिणीप्रवेश "
शुक्रमहादशांतर्गतशुक्रांतर्दशामध्ये		अष्टोत्तरीमहादशा २६६
विदशाचक्र २४४	अंतर्दशा बनानेका क्रम "
गुरुमहादशांतर्गतगुरुवन्तर्दशामध्ये		अष्टोत्तरीमहादशाचक्र २६७
विदशाचक्र "	विंशोत्तरीमहादशाकरण २६८
शनिमहादशांतर्गतशनेरंतर्दशामध्ये		दशाका उदाहरण २६९
विदशाचक्र २४५	विंशोत्तरीदशाचक्र २७०
बुधमहादशांतर्गतबुधांतर्दशामध्ये		सूर्यमध्येऽन्तर्दशाचक्र "
विदशाचक्र "	चन्द्रमध्येऽन्तर्दशाचक्र २७१
उपदशाचक्र २४६	भौममध्येऽन्तर्दशाचक्र २७३
दशाप्रवेशकालसावनाहर्गणसाधन २४७	राहुमध्येऽन्तर्दशाचक्र २७४
दशाप्रवेशचक्र २४८	गुरुमध्येऽन्तर्दशाचक्र २७५
अर्गण करनेकी रीति "	शनिमध्येऽन्तर्दशाचक्र २७६

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
बुधमध्येऽनर्दशाचक्र २७८	सूर्यसे लग्नसे इष्टकाच बनानेकी रीति २८६	
केतुमध्येऽनर्दशाचक्र २७९	अष्टवर्गीक २८७
शुक्रमध्येऽनर्दशाचक्र २८०	सर्वतोभद्रचक्र २८८
योगिनीदशाक्रम २८१	सूर्यकालानलचक्र २८९
शुभदशाक्रम २८२	चन्द्रकालानलचक्र २९०
जन्मपत्रिका लिखनेका क्रम २८३	श्रीरामचन्द्रस्य जन्मकुण्डली "
कनिषंशमर्शता २८४	श्रीकृष्णचन्द्रस्य जन्मकुण्डली २९१
		उभयोर्जन्मलग्ने "

इति केशवीजातकस्य विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।



॥ श्रीः ॥

अथ ज्योतिर्विद्वत्केशवाचार्यविरचितं

केशवीजातकम् ।

भाषोदाहरणसहितम् ।

अथ मङ्गलाचरणपूर्वकस्पष्टाध्यायः १.

नत्वा विघ्नपशारदाच्युतशिवब्रह्मार्कमुख्यग्रहान्
कुर्वे जातकपद्धतिं स्फुटतरां ज्योतिर्विदां प्रीतये ॥

यंत्रैः स्पष्टतरोऽत्र जन्मसमयो वेद्योऽत्र खेदाः स्फुटा
यत्पक्षे हि घटंत उद्गम इहास्तर्क्ष सपङ्गः स च ॥ १ ॥

हेग्म्वोऽम्वाथ वेधोहरिपशुपतयो मास्कराद्या ग्रहा ये
पंचैते लोरुपाला अथ दश गदिता दिक्प्रपा ये महान्तः ॥

मेपाया राशयश्चाश्विमुखमुखवरा याश्च नक्षत्रतारा
योगा विष्कंमजायाः सकलमुखवराः पांतु मामत्र कृत्ये ॥ १ ॥

नृगिरा केशवं नत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥

जगदीशः प्रकुरुते जगदीशानुवम्पया ॥ २ ॥

अन्वयः—अहं केशवाचार्यः जातकपद्धतिं कुर्वे करोमीत्यर्थः । किं कृत्वा विघ्न-
पशारदाच्युतशिवब्रह्मार्कमुख्यग्रहानत्वा किंविशिष्टां जातकपद्धतिं, स्फुटतराम्,
अतिशयेन स्फुटेति स्फुटतरा तां स्फुटतराम् । किमर्थं ज्योतिर्विदां प्रीतये ज्योतिर्पं
विदंति जानंति ये ते ज्योतिर्विदस्तेषां प्रीतये । अत्र ज्योतिश्शब्देन त्रिस्कन्धो ज्ञेयः
गणितसंहिताजातकरूपमित्यर्थः । होराविद्यामित्यर्थे ये ज्योतिर्विदस्ते एतद्धोरा-
शास्त्रविदो भवन्त्येवेति शम् । स्रग्धरावृत्तम् ॥ १ ॥

भाषाः—गणपति, सरस्वती, विष्णु, शिव, ब्रह्मा और सूर्यादि नव ग्रह इनको
नमस्कार करके ज्योतिर्विद्वत्के संतोषार्थ यह स्पष्ट जातकपद्धति नामक ग्रंथ करते
हैं । इसमें जन्मकालघटी शंकु, चक्र, फलक इत्यादि यंत्रोंसे सूक्ष्म रीतिसे जानना
और स्पष्टग्रह जिस पक्षके प्रत्यक्ष हों उस पक्षके ग्रहाववरीत्या लेना । जन्म-
कालीन लग्न स्वदेशीय उदयसे बनाना, अनंतर जो लग्न आवे उसमें ६ राशि
जोड़ देना तो सप्तमनाव होता है ॥ १ ॥

उदाहरणः—संवत् १९४३ शालिवाहनशक १८०८ इस वर्षमें वैशाखकृष्ण
७ रविवारको ४० । १५ उत्तराषाढा नक्षत्र ५३ । ३३ साध्यनाम योग ५२ ।
४८ इस दिन सूर्योदयके अनंतर ३२ घटी १ पञ्चमर पंडितजी श्रीबालीरामजीके
पौत्र तत्पुत्र पंडितजी श्री चि० गंगाविष्णुजीके पुत्र उत्पन्न भया उस वक्त दिन-
मान ३२ । ४२ रात्रिमान २७ । १८ अक्षमा ७ । १० अयनांश २२ ।
४४ । ३ चरखण्ड ७० । ५६ । २३ चर ८१ ऋग ।

तात्कालिक मध्यमग्रहसाधनके वास्ते अहर्गणादिसाधन ।

“ द्व्यध्विन्द्रो १४४२ नितशक ईशद्वत्फलं स्या-

च्चक्राख्यं रवि १२ इतशेषकं तु युक्तम् ॥

चैत्राद्यैः पृथगमुतः सद्व्यग्रचक्रा-

दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ ”

भाषाः—१४४२ वर्त्तमानशकमें कम करना जो शेष रहे उसको ११ से भाग
देना जो लब्धि आवे वह चक्र जानना और शेष जो रहा उसको १२ से गुण देना
उसमें चैत्रादि मास इष्टमासक युक्त करना वह मध्यम मासगण भया उसको दो
स्थानमें रखना एकमें चक्र दूना और दश १० मिलाकर ३३ का भाग देना जो लब्धि
आवे सो अधिमास जानना उसको दूसरेमें युक्त करना तो मासगण होता है ।

“ खत्रिघ्नं गततिथियुद्धिरग्रचक्रा-

गांशाढ्यं पृथगमुतोऽधिपद्वलब्धैः ॥

ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्दे

वारः स्याच्छाहृतचक्रयुगगणोऽञ्जात् ॥ ”

भाषाः—जो मासगण आवे उसको ३० से गुण देना और शुद्ध प्रतिपदादिसे
इष्ट तिथिवक जोड़के चक्रका जो पञ्चांश सो युक्त करके दो स्थानमें रखना एकमें
६४ से भाग देके जो लब्धि आवे सो ऊनाह जानना उसको दूसरेमें कम करना
तब जो अंक आवे सो अहर्गण जानना जो अहर्गण आया सो शुद्ध किंवा

१ सुधियाऽहर्गण-कायों यदि बारो न लभ्यते । खगमयुक्तो हीनो वा सेको वापि निरुक्तः ॥

मध्यमग्रहसारणीप्रवेगः ।

अहर्णको ६० से भाग देना तो लब्धि और शेष ऐसे २ अंक आते हैं सो आगे मध्यम ग्रहसारणीमें सूर्यादि ग्रहोंका १ से ६७ तक शेषलब्धिकोष्टक है, उसके नीचे वह कोष्टकके राश्यादिक अंक लिखे हैं वह शेषकोष्टकही लब्धिकोष्टक है परंतु उसका फल लेनेकी रीति जुदी है वह प्रकार ऐसा है जो लब्धिका अंक हो सो शेषकोष्टकमें देखना अनंतर वह कोष्टकके नीचे राशिसहित जो अंक है निम्नमें राशिका त्याग करके अंक लेना, अनंतर पहिला अंक जो हो उसको ६ से भाग देके जो शेष रहे निसको दूना करना तो लब्धिकोष्टकका राशि अंक होता है । अनंतर उसके नीचेका अंक अंशस्थानमें आता है इसवास्ते ३० से अधिक हो तो ३० से भाग देके जो अंक आवे उसको राशिस्थानमें जोड़ देना तो लब्धिकोष्टक फल तैयार होता है ।

सारणीका अभीष्टशेषकोष्टकके नीचेका अंक हो सो और अभीष्टलब्धिकोष्टकका जो अंक हो सो दोनोंका योग करना अनंतर उस अंकको चक्रनिघ्नध्रुवोन्क्षेपक तैयारसारणीमें ऊपरके बाजूके नीचे अंक है सो अभीष्टचक्रके नीचेके अंकमें युक्त करना तो प्रातःकालका मध्यमग्रह होता है ।

इष्टकालका मध्य करना हो तो सूर्योदयके अनंतर जो इष्ट घटी और पल हो उसका कोष्टक ग्रहसारणीके पीछे राश्यादि लिखा है, उसमेंसे अपना जो इष्ट घटी, पल हो उसके नीचेके अंकको प्रातःकालका जो ग्रह उसमें युक्त करना तो इष्टकालका मध्यम ग्रह होना है ।

मध्यमराहु बनानेकी रीति कुछ भिन्न है, सो ऐसी है कि शेषलब्धिकोष्टकके योगको १२ में कम करके जो बचे उसको चक्रनिघ्नध्रुवोन्क्षेपकमें मिलाना तो प्रातःकालका राहु होता है, इष्टकालका राहु बनाना हो तो जो अभीष्टघटीकोष्टकके और पलकोष्टकके नीचेके अंकको लब्धिशेषकोष्टकका जो फल सो युक्त करके जो अंक आवे उसको १२ में कम करना अनंतर चक्रनिघ्नध्रुवोन्क्षेपक मिलाना तो इष्ट कालका राहु होता है । इस प्रकार मध्यमग्रह बनाना ।

रविचक्रनिघ्नध्रुवनक्षेपक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१०	१०	१०	१०	१०	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९
७	०६	०६	०२	००	२८	२६	२६	२३	२१	१९	१७	१५	१४	१२	१०	०८	०६	०५
४९	००	११	२२	३३	४३	५६	०६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	०४
४७	३६	२५	१४	०३	५२	४१	३०	१९	०८	५७	४६	३५	२४	१३	०२	५१	४०	२९

रविशेषलघिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४९	४८
०	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५५	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	५८
०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६
०	१४	२४	३४	४४	५४	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६
०	१	३८	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
४०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८
७	१४	२४	३२	४०	४९	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
५६	६	१७	२७	३७	४८	५८	६	१८	२८	३८	४८	५८	६	१८	२८	३८	४८	५८	६	१८	२८	३८
३४	५३	८	१५	२४	३३	४२	५१	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
३७	३६	४५	५४	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६
४५	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
०	३५	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८
१५	२४	३२	४०	४९	५८	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६
१३	३	१३	२४	३४	४४	५४	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
८	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६
४८	३	१२	२१	३१	४१	५१	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६

सविशेषकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८

रविषटीकोष्ठक ।

[illegible]

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

रविपलकोष्ठकः

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१

[illegible][illegible]

चंद्रचक्रनिघण्टुवोनक्षेपक

[illegible]

नंदगोपालविधकोष्ठक.

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

चंद्रपलकाष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४
१३	२६	३९	५२	६	१९	३२	४५	५८	११	२४	३७	५०	६३	७६	८९	१०२	११५	१२८	१४१	१५४
२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	१०	२१	३२	४३	५४	६५	७६	८७	९८	१०९	१२०	१३१	१४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
२६	३९	५२	६५	७८	९१	१०४	११७	१३०	१४३	१५६	१६९	१८२	१९५	२०८	२२१	२३४	२४७	२६०	२७३	२८६

चन्द्रोष्चकनिघ्नध्रुवोनक्षेपक.

۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹	۱۰	۱۱	۱۲	۱۳	۱۴	۱۵	۱۶	۱۷	۱۸	۱۹	۲۰	۲۱	۲۲	۲۳	۲۴	۲۵	۲۶	۲۷	۲۸	۲۹	۳۰	۳۱	۳۲	۳۳	۳۴	۳۵	۳۶	۳۷	۳۸	۳۹	۴۰	۴۱	۴۲	۴۳	۴۴	۴۵	۴۶	۴۷	۴۸	۴۹	۵۰	۵۱	۵۲	۵۳	۵۴	۵۵	۵۶	۵۷	۵۸	۵۹	۶۰	۶۱	۶۲	۶۳	۶۴	۶۵	۶۶	۶۷	۶۸	۶۹	۷۰	۷۱	۷۲	۷۳	۷۴	۷۵	۷۶	۷۷	۷۸	۷۹	۸۰	۸۱	۸۲	۸۳	۸۴	۸۵	۸۶	۸۷	۸۸	۸۹	۹۰	۹۱	۹۲	۹۳	۹۴	۹۵	۹۶	۹۷	۹۸	۹۹	۱۰۰
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

• चन्द्रोच्चशेषलब्धिकोष्ठक.

[illegible]

चन्द्रोच्चशेषलब्धिकोष्टक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	१४	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४
१९	०	७	१४	२२	२९	३४	४०	५	१४	२७	३४	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	८९	९६	१०३	११०
२५	१७	८	०	५	११	१७	२५	३४	४०	५	११	१७	२५	३४	४०	५	११	१७	२५	३४	४०	५
३३	९	३५	०	२६	५१	७७	१०३	१२९	१५५	१८१	२०७	२३३	२५९	२८५	३११	३३७	३६३	३८९	४१५	४४१	४६७	४९३

चन्द्रोच्चघटीकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	६	१३	२०
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२६	३३	४०	४७	५४	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	६	१३	२०	२६	३३	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
३७	४३	०	७	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	७	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०

चन्द्रोच्चपलकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	६	१३	२०
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२६	३३	४०	४७	५४	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	६	१३	२०	२६	३३	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
३७	४३	०	७	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	७	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०

चन्द्रोच्चपलकोष्टक ।

[illegible]

राहुचक्रनिघ्नधुवोनक्षेपक.

[illegible]

राहुशेषलब्धिकोष्टक.

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

राहुघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१

०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२

०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
१०	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५२	५५	५८	१	४	७	११

राहुपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३

मंगलघटीकोष्ठक ।

[illegible]

मंगलग्रहकोष्ठक ।

[illegible]

बुधकेन्द्रचक्रनिघ्नध्रुवोनक्षेपक.

२०	१७	१९	२०	६	३	२२	२५	२७	१९	१६	१०	९	८	२	२८	२०	१९	१९	८
४३	८	११	१२	४७	१८	५१	२६	१७	३०	३	३६	९	४२	१७	४८	५१	१७	३५	५
०	०	■	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	■	०	०	०	०

गुरुशेषलब्धिकोष्ठक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५
४९	५४	५९	६	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९
२०	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	१२	११	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	०
३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	०
१७	५१	२५	०	३४	४	४२	१७	५१	२५	०	३४	८	४२	१७	५१	२५	०	३४	८	४२	१७	०

गुरुघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
६	१०	१६	२०	२५	३०	३६	४०	४६	५०	५६	०	६	१०	१६	२०	२५	३०	३६	४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
२६	३०	३६	४०	४६	५०	५६	०	६	१०	१६	२०	२६	३०	३६	४०	४६	५०	५६	०

गुरुपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३

गुरुपलकोष्ठक.

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५

शुक्रकेन्द्रचक्रनिम्नध्रुवोनक्षेपक.

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
२	०	११	९	८	६	५	४	२	१	११	१०	८	७	५	४	२	१	११	१०	८	७
९	२५	११	२७	१३	२९	१५	१	१७	३	१९	५	२१	७	२३	८	२४	१०	२६	१२	२८	१०
२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	३	१	५९	५७	५५	५३	५१	४९	४७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रकेन्द्रशेषपलधिकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१४	१४
३६	१३	५	२७	४	४९	१८	५५	३२	९	४६	२३	०	३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०
५९	५९	५९	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५६	५५	५५	५५	५४	५४	५४	५३	५३	५३	५२	५२	५२
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४२	२२	२	४२	२२
६	१३	२०	२१	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	१९	२६	३३	३९	४६	५३	५९	६	१३	१९	२६	३३
१५																						

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२८

२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
५८	३५	१२	४९	२६	३	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	०
४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२	४२	४१	४१	४१	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३७	०
२५	५	४५	२५	५	४५	२५	५	४६	२६	६	४६	२६	६	४६	२६	६	४७	२७	७	४७	०
११	१८	२५	३३	४०	४५	५१	५८	६	११	१८	२५	३३	४०	४५	५१	५८	६	११	१८	२४	०

शुक्रकेन्द्रघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	३	३	४	४	५	५	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२
३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१४	१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४
५७	३४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१	५८	३५	१२	४९	२६	३	४०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३५	३५	३६	३६
१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०

शुक्रकेन्द्रपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३५	३५	३६	३६
१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०

शनिचक्रनिघ्नध्रुवनक्षेपक

१०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१
१	१५	२९	१४	२८	१२	२७	११	२५	१०	२४	८	२०	७	२१	५	२०	४	१८	३	१७	१
२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिशेषलविकोष्ठक

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	४	८	८	१०	१२	१७	१६	१८	०	२२	२५	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६
०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	८
२३	४६	१	३२	५	१८	४३	४	०७	५०	१३	३६	५९	२३	४६	१	३२	५५	१८	५९	४	२७	५०
४	९	१५	१८	२३	२७	३२	३७	४३	४६	५३	५५	५९	६४	६९	७४	७८	८३	८८	९३	९७	९९	१००

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	६	६	८	१०	१२	१६	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१८
१३	३६	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	६४	८७	११०	१३३	१५६	१७९	२०२	२२५	२४८	२७१	२९४	३१७	३४०

०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८	७०	७२	७४	७६	७८

...

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०

शुक्रकेन्द्रघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२
३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४	२५
५७	३४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१	५८	३५	१२	४९	२६	३	४०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२५	२६	२७	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३५	३६	३६	३७
१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०

शुक्रकेन्द्रपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२५	२६	२७	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३५	३६	३६	३७

शनिपटीकोष्ठक.

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०

शनिपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	१	१	१	१	१	१	१	०	१
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२

मध्य रवि साधनका उदाहरण.

यहां अहर्गण ११७८ आया है. इसको ६० से भाग देनेसे लब्धि १९ शेष ३८ रहा अब शेष कोष्ठकमें अठतीसके नीचेके अंक १।७।२७।१०।३० को लब्धि अंक १९ के नीचे राश्यंक छोड़के यह १८।४३।३५।१५।२५ अंक है. इसके ऊपरका अंक १८ में ६ से भाग दिया तो शेष ० शून्य रहा दुना किया तो ० शून्य रहा यह राश्यंक गया. अब भागस्थानमें ४३ आया ये ३० से अधिक हैं इसवास्ते इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धि १ यह राशिमें युक्त किया तो १।१३।३५।१५।२५ यह अंक गया इसमें शेष ३८ कोष्ठकका फल युक्त किया तो २।२१।२।२५।५५ यह अंक

१. इसको चक्र सारणीमें ३३ के नीचेका अंक १।११।३७।५७ यह

युक्त किया तो ०।१०।४०।२३ यह प्रातःकालका मध्यम सूर्य्य, बुध, शुक्र मया. अब इसको इष्टकालका मध्यम करना है. इसवास्ते इष्टवटी ३२ है इसके नीचे घटी सारणीमेंका फल ०।०।३१।३३ और पल ०१ है, इसका फल पलसारणीका ०।०।०।०।१ यह है दोनों फल प्रातःकालके मध्यम ग्रहमें युक्त किया तो ०।११।११।५६ यह सूर्य्य इष्टकालका मध्यम ग्रह मया । इसी रीतिसे प्रातःकालका इष्टकालका मध्यम सब ग्रह करना.

प्रातःकालिकसूर्यादिमध्यमग्रहाः ।

सु	च	च उ.	रा	म	बु के	बृ	शुके	श
०	०	९	४	५	१४	५	७	२
१०	२६	१७	०१	२१	५	१२	१३	१६
४०	२६	५८	४१	५०	२३	१५	१९	३८
२३	२९	१०	५०	३८	५१	११	२९	३३

तात्कालिकमध्यमग्रहाः ।

सु	च	च उ	रा	म	बु के	बृ	शुक्र	श
०	९	९	२	५	७	५	७	२
११	३	२८	२१	२०	७	१२	१३	१६
११	२८	१	४०	७	३	१७	४२	३९
५६	२१	४४	८	२४	१९	५१	१३	३७
९८	७९०	६	३	३१	१८६	५	३७	२
१०८	३५	४१	११	२६	२५	०	०	०

श्लोकः—जगदीशेन रचिते केशवीग्रन्थदिष्पणे ।

मध्याधिकारः पूर्णोऽयं तद्रापाथप्रकाशकः ॥

स्पष्टाधिकारः ।

“मंदोच्चं ग्रहवर्जितं निगदितं केन्द्रं तदाख्यं बुधेः ।

केन्द्रे स्यात्स्वमृणं फलं कियतुलाद्ये ” इति ॥

“दोस्त्रिभोनं त्रिभोद्धं विभेण्यं रसेश्वकर्तोऽकाधिकः स्याद्भु-
जोनं त्रिमं कोटिरैकैकं त्रिभिभैः स्यात्पदं सूर्य्यमंदो-
च्चमष्टाद्रयोशः भवेत् ॥ ”

सूर्यकी स्पष्टगति ।

केन्द्रभुजभागकोष्ठके नीचे गतिफल लिखा है। वह केन्द्र कर्कादि ६ राशि तक होय तो धन इसवास्ते राविकी जो मध्यमगति उसमें युक्त करना और केन्द्र मकरादिक ६ राशितक हो तो कण जानना इस वास्ते मध्यमगतिमें कम करना तो सूर्यकी स्पष्टगति होती है।

दिनमान-रात्रिमान साधन ।

जब सायनग्रह मेषादि ६ राशिमें होय तब उत्तर गोलमें जानना और सायनग्रह तुलादि ६ राशिमें होय तब दक्षिण गोलमें जानना। जो चर आया होय उसको पल जानक उत्तर गोलमें होय तो १५ घडीमें युक्त करना और दक्षिण गोलमें कम करना तो दिनार्द्ध होता है। उस दिनार्द्धको ३० में कम करना तो रात्र्यर्द्ध होता है अनंतर दिनार्द्ध और रात्र्यर्द्धको दूना करना तो दिनमान और रात्रिमान होता है।

सूर्यस्पष्टसारणी:

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	मु भा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४०	४२	४४	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	फ०
४५	४४	३	११	१७	२३	२८	३२	३५	३६	३७	३६	३५	३२	२८	२२	१५	७		
१३	३२	३२	२१	२१	३१	३१	४१	२	२	२	२	२	२	२	१९	२८	११	ग.	
६	१५	१५	१०	१०	१५	१५	२०	१	१	१	१	१	१	१	१०	१५	६	ह.	
२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	ग.	
३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४८	४७	४६	४५	फ.	

सूर्यस्पष्टसारणी.

३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	मु.भा.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	फ.
१६	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३०	३२	३४	३६	३७	३८	४०	४१	४२	४४	
५८	४७	३६	२१	६	५२	३१	१२	५१	२८	३	३७	९	३९	८	३४	५९	२२	
११	९	९	७	७	५	५	५	८	८	८	३	३	३	७	७	७	७	गु.
६	५	५	४	४	३	३	३	५	५	५	२	२	२	५	५	५	५	ह.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	ग.
४४	४७	४८	४९	५०	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	३	३	फ०
४५	२	२१	३६	४९	१	१०	१८	२२	२६	३१	३७	२३	१८	११	१	४९	३५	
१३	४	५	५	६	७	७	११	११	१	१	११	११	९	५	४	३	३	गु.
१०	३	४	४	५	६	६	१०	१०	१	१	१२	१२	१०	६	५	४	४	ह.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	ग.
१६	१६	१३	११	१	७	६	४	२	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	फ.
७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	मु.भा.
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	फ
१९	०	४०	१६	५०	२२	५२	२०	४५	८	२८	४६	१	१५	२५	३४	४०	४३	गु.
२	२	३	७	८	१	१	५	५	१	३	१	१	१	१	१	१	१	ह०
३	३	५	५	१५	०	२	१०	१०	३	१०	४	४	६	६	१०	३०	१६०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ग
४२	४०	३८	३५	३३	३१	२८	२६	२४	२२	१९	१७	१५	१०	१०	७	५	२	फ०

स्पष्ट सूर्य साधनका ददाहरण ।

यह सूर्यका मंशोच्च २।१८।०।० इसमें मध्यम सूर्य ००।११।११।
 ५६ कम किया तो २।६।४८।४ यह शेष रहा इसका नाम केन्द्र है अब इसका
 भुज २।६।४८।४ तो यही रहा अंश किया तो ६६।४८।४ यह भया इस
 वास्ते यहां सूर्यस्पष्टसारणी कोष्ठक ६६ के नीचेका अंक १।५९।२३ और
 इसका गुण ११ से ४८ को गुणा तो ५२८ पल ४ को गुणा तो ४४ इसमें
 ६० का भाग दिया तो ० लब्धि हुई अब गुणके नीचे हर १२ से ५२८ में

नीचे जो गुण लिखा है उससे गुण करके ६० से भाग दे जो फल आवे
 सो विकलात्मक वह लिया जो गति फल उसमें कम करके वह गति फल
 सूर्यके ऐसा केन्द्र परसे चंद्रके मध्यम गतिमें धन होय तो धन
 करना, किंवा ऋण होय तो ऋण करना तो चंद्रकी स्पष्टगति होती है.

चन्द्रस्पष्टसारणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	अ. भा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	फ.
०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५	११०	११५	
०	२१	२६	३१	३६	४१	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९६	१०१	१०६	१११	११६	१२१	१२६	१३१	
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	शु.

३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८	७०	७२	७४	७६	७८	८०	८२	८४	फ.
८३	८५	८७	८९	९०	९२	९४	९६	९८	१००	१०२	१०४	१०६	१०८	११०	११२	११४	११६	११८	१२०	१२२	१२४	१२६	१२८	

चन्द्रस्पष्टसारणी-

६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	सु.मा	
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	फ०	
																१०	०	१	१	१	१	०	फ०	
																३०	५५	१५	२९	३७	४०	०	फ०	
																५	१	१	२	२१	०	०	गु.	
६	४	३	५	२	५	३	४	६	१	१	१०	५	१०	५	२	१२	३	४	१५	१	०	०	ह.	
२४	२३	२२	२१	२०	१९	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	३	२	१	१	०	ग.
२३	२०	१७	११	६	१	१५	४४	४	३२	२५	१५	५	५२	४०	२८	२५	१	४६	३१	१७	०	०	फ.	
६३	६३	६३	६६	६६	६७	६७	६८	६९	७०	७०	७०	७२	७३	७३	७४	७५	७५	७६	७७	०	०	०	गु.	

स्पष्टचंद्र साधनेका उदाहरण.

चंद्रोच्च ९।२८।१।४४ इसमें त्रिफलचंद्र ९।३।१५।३८ कम करके बाकी ००।२४।४६।०६ यह केन्द्र इसका भुजभाग किया तो २४।५६।०६ इसवास्ते यहां सारणीकोष्ठक २४ इसके नीचे अंशादिफल २।२।५० इसको गुण हरफल २१९ विकला युक्त किया तो २।६।२९ यह चंद्रफल भया, यह केन्द्र मेपका है इसवास्ते फल धन भया त्रिफलचंद्र ९।३।१५।३८ में लुक्त किया तो ९।५।२२।७ यह स्पष्टचंद्र भया अब यहां केन्द्रभुजभाग कोष्ठक २४ का गतिफलकलादि ५९।१६ है इसमें गतिफलके नीचेका गुण ३१ इससे भुजभागके नीचेकी कला ४६।०६ विकलाको गुणके यह १४२६।१८६ भया इसको ६० से भाग दिया तो फल २४ यह विकलामें कम किया बाकी ५८।५२ यह केन्द्र मेपका है इसवास्ते मध्य-मगति ७९०।३५ में कम किया तो ७३१।४३ यह स्पष्ट चन्द्रगति भई।

मंगल बुध गुरु शुक शनि स्पष्टसारिणी प्रवेशः

मध्यमसूर्यमें मध्यम ग्रह भौम, गुरु शनि कम करना तो भौम गुरु शनि इसका प्रथम शीघ्रकेन्द्र होता है मध्य बुध और शुक इन दोनोंका शीघ्रोच्च पूर्वमें मध्यम ग्रहके साथही बनाना लिखा है उसी शीघ्रोच्चमें घटानेसे शीघ्र-केन्द्र होता है अब अभीष्ट ग्रहका केन्द्र ६ राशिसे अधिक होय तो १२ में कम करना, अनंतर ६ से अल्प जो केन्द्र उसका करना, जो अंश आवे सो आगे लिखा शीघ्र फलग्रहसारिणीका अंशकोष्ठक देना देना

है. अनंतर अभीष्टकोष्ठके नीचेका अंशादि फल लेना, अनंतर अंशफलके नीचे ६० कला विकलाकोष्ठक लिखा है उसमेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका कलाका फल वलादि वैसा विकलासे विकलादि एकत्र करके धन किंवा ऋण सारिणीमें लिखा है उसके प्रमाण लिया जो अंशफल युक्त करना किंवा कम करना तो ग्रहोंका प्रथम शीघ्रफल होता है. शीघ्रफलका अर्थ करके केन्द्रके प्रमाण मध्यमग्रहमें युक्त करना किंवा कम करना तो दल संस्कृत ग्रह होना है. भौमादिग्रहोंका राश्यादि मंदोच्च भौमका ४ बुधका ७ गुरुका ६ शुक्रका ३ शनिका ८ अब अभीष्ट ग्रहका मंदोच्च लेकरके दल संस्कृत ग्रहमें कम करना तो मन्दकेन्द्र होता है. वह केन्द्रका पूर्वोक्त रीति करके भुज करना. भुजका भाग करना जो अंश आवे सो आगे लिखा मंदफलसारिणीका अंशकोष्ठक तयार है अनंतर अभीष्ट कोष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेना. अनंतर फलके नीचे ६० कला विकला कोष्ठक लिखे हैं उसमेंसे अंशके नीचे जो कलाविकला होय तत्परिमित कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फलको एकत्र करके उसको पूर्वफलमें युक्त करना तो उन ग्रहोंका मन्दफल होता है ऋण धन मन्दकेन्द्रपरसे जानिके उस फलको मध्यम ग्रहोंमें धन वा ऋण करना तो मन्दस्पष्ट ग्रह होगा और उसी मन्दफलको प्रथम-शीघ्रफलकेन्द्रमें विलोम अर्थात् धन होय तो ऋण और ऋण होय तो धन करना तो द्वितीय शीघ्रकेन्द्र होता है उस शीघ्रकेन्द्रपरसे प्रथमशीघ्र-फलके रीतिसे फल आनिकर मन्दस्पष्टमें ऋण धन करना तो वह स्पष्ट होता है । यही रीति भौमादिकोंकी है ॥

मंगल शुक्रका विशेष ।

“ शुक्रारयोश्चलभवोन्त्यगतोयदाङ्का० इति ॥ ”

टीका—जब भौम और शुक्रका अंतिम शीघ्रकेन्द्रको पङ्मात्पकारिके

अंश करते हैं तो वह अंश यदि १६५ से १८० तक होय तो संस्कार करनेकी पृथक् पृथक् सारिणी लिखी है उसका नाम अन्त्यांकफलसारिणी है। उसमेंसे शीघ्र फलके सदृश फल ले आना और उस फलको केन्द्रके वश करिके ऋण धन करना तो स्पष्ट शुक्र और भौम ठीक होते हैं ॥

भौमादिग्रहोंकी गति स्पष्ट करनेका प्रकार ।

मन्दफलसारिणीमें दहिनी तरफ गतिफल लिखा है पन्द्रह २ कोष्ठका, उसको कर्कादि मकरादि केन्द्र वश कर धन ऋण जानना और शीघ्रसारिणीमें दहिनी तरफ १५ कोष्ठका गतिफल धन वा ऋण लिखा है उन दोनों गति-फलको एकत्र करना अर्थात् दोनों धन होय वा ऋण होय तो योग करना और एक धन एक ऋण होय तो अन्तर करना तो उस फलके सदृश ग्रह-गति स्पष्ट होती है । जब योग वा अन्तर ऋण बचै तो वक्रगति जानना यह स्पष्टगतिको मध्यमगतिका कारण लगता नहीं ।

भौमबुधशुक्रकी गतिमें विशेष ।

भौम बुध शुक्रका पञ्चात्प अंतिम शीघ्रकेन्द्रका अंश १६५ से १८० तक अंश आवे तो यह संस्कार करनेके वास्ते वह ग्रहोंका शीघ्रफलसारिणीके अन्त्यमें पृथक् अन्त्यांक गतिफलसारिणी लिखी है अनन्तर इस सारिणीमें जो अभीष्ट अंश आवे तत्परिमित कोष्ठके नीचेका कलादि ऋणफल लिखा है वह लेकरके अंशफलके नीचे ६० कोष्ठक लिखा है उसमेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्परिमित कोष्ठके नीचेका कलाका वही कलादि फल विकलाका विकलादि फल एकत्र करके वह सर्वकाल ऋण है इसवास्ते लिया जो अंशफल उसमें युक्त करना तो शीघ्रगति फल तैयार होता है अनन्तर यह पलका पहिले प्रमाण मन्दस्पष्ट गति फलको संस्कार करना तो भौम बुध भृगु इनकी स्पष्टगति होती है।

प्रथमशीघ्रकेन्द्रम् ।

आशुफलमौमादीनाम् ।

म.	बु.	वृ.	शु.	श.	प्र.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.	प्र.
६	७	६	७	९		२८	१७	६	४५	५	
१९	७	२८	१३	२४		८	२२	२२	५६	१	फ.
४	३	५४	४२	३२	फ	०	५३	४२	४०	७	
३२	१९	५	१३	१९							

आशुफलार्द्धम् ।

आशुफलार्द्धसंस्कृता मौमादयः ।

मं.	बु.	बु.	सु.	श.	ग्र.	म.	बु.	सु.	श.	ग्र.
१४	८	३	२२	२		६	०	६	११	२
४	४१	११	२८	३०		८	२	१	१८	१४
९	२६	२४	२०	४३		३	३०	६	१३	९
						२४	३०	२७	३६	४

मन्दकेन्द्रम् ।

मन्दफलम् ।

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.	म	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.
१०	६	०	३	५		७	१	१	१		
२१	२७	२०	११	१५		१४	५६	५४	३०	४७	
५६	२९	५३	४६	५०		५	५८	३९	०	३२	
३६	३०	३३	२४	५६		३६	३	०	०	०	
							३६	२६	०	१५	

मन्दस्पष्टमौमादि ।

२. द्वि० शीघ्रवेन्द्रम् ।

द्वि० शीघ्रफलम् ।

म.	बु.	न.	शु.	श.	ग्र.	म.	बु.	न.	शु.	श.	ग्र.	म.	बु.	न.	शु.	श.	ग्र.
५	०	५	०	२		६	७	६	७	९		३३	१७	५	४५	५	
१४	९	१४	१२	१८		२६	९	२६	१२	२२		५०	५४	५९	४५	५	
५०	१४	१२	४१	२७		१६	०	५९	१२	४४		५४	५	५३	५२	२४	
१०	५८	३०	५६	९		४६	१७	२६	१३	४७		७	११	५	५४	४	
												३८	८	०	३८	२४	
												घ.	घ.		घ	घ	

स्वप्नह भौमशत्रिफलसारिणी.

मकाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.घ.
फ०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५
१६	१५	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	११	१२
१२	३४	५५	२१	४५	७	३०	६३	१७	४०	३४	२६	४२	१३	३६	५९	२२
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९

१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३						
२०	४३	६	२८	५३	१६	३०	२	२५	४९	१०						
अंकोः	१५	१६	१८	२८	१०	२०	२७	२०	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.घ.
फ०	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	१
क०	४८	११	३०	५८	२०	४६	०	३३	५६	०	४४	७	३१	५४	१८	४३
घ०	०	३६	१०	४८	२४	०	३६	१०	४८	०	३६	१०	४८	०	४४	१४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२
१७	४१	५२	२८	५९	१५	३८	२	२६	५०	१३	३७	१	२४	४८	११	३६
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९
५८	२२	४६	९	३३	५८	१०	४४	७	३१	५०	१८	४२	५	२०	५३	१६
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						
१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३						
४०	२	२७	५१	१४	३०	१	२५	४९	१०	३६						

मौमशीघ्रफलसारिणी.

फि०	४८	८	२८	४९	९	३०	६०	१०	३१	६१	१२	३२	६२	१३	३३	४१
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०
२६	४७	७	२८	४८	८	२९	४९	१०	३०	६०	११	३१	६२	१२	३२	१२
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
१३	३४	५४	१४	३५	५५	१६	३६	५६	१७	३७	५८	१८	३८	५९	१०	५०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						
१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०						
१०	२०	४१	१	२०	४२	२	२३	४३	४	२४						
अंका०	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग घ
	२७	२८	२८	२८	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	४०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	३८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
७	२६	४४	२	२१	३९	२८	१६	३६	२३	११	३०	४८	७	२६	४३	२
५०																
१६																
२०	३९	५७	१५	३४	५२	११	२९	४७	६	२४						

सौमशीघ्रफलभारिणी.

म.सं०	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.घ.
पू०	३६	३६	३६	३७	३३	३२	३२	३१	३०	२९	२८	२८	२७	२६	२६	७
	४८	०	१२	२६	३७	५०	२	१४	२७	३९	५२	४	१६	२९	४१	३८
क०	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	१६
सं०	०	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११
	०	४८	३६	२३	१०	५८	४६	३३	२१	८	५६	४४	३१	१९	६	५४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२६
४२	२९	१७	४	५२	४०	२७	१५	२	५०	३८	२६	१३	०	४८	३६	०३

४० २८ १५ ३ ५० ३८ २६ १३ १ ४८ ३६

सं०	०	१	३	४	६	८	९	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२४
	०	४३	१९	५९	३८	१८	५८	३७	१७	५६	३६	१६	५५	३६	१४	५४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२

५७	२६	६	४६	२५	५	४४	२४	४	४३	२६	२	४२	२२	१	४१	२०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						०
८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	०
०	४०	११	५९	३८	१८	५४	३७	१७	५६	३६						०

अंत्यांकफलसारिणी..

अ.क.	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०
फ.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
फ०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६
१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९
३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८

० १२ २४ ३६ ४८ ० १० २४ ३६ ४८ ० १० १५ २० २५ ३० ३५ ४० ४५ ५० ५५ ६० ६५ ७० ७५ ८० ८५ ९० ९५ १००

अ.क.	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अ	३	६	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१६	१७	१९	२०	२२	२३	०
अ	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०
क०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
अ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४९	५०	५१	५३	५४	५५	५७	५८	०	१	३	५	६	७	८	९	११
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०							
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१							
१३	१४	१५	१७	१९	२०	२२	२३	२४	२५							

बुधशनिफलसारिणी.

फ०	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
व०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
घ०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
घ०	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
घ०	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
क०	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	
घ०	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	
अ. व.	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
क०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	
घ०	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४		
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२		
घ०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५		
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७		
	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५		
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२		
	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८		
क०	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४		
घ०	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२		

स्वटग्रहबुधशीघ्रफलसारिणी.

द०	द१	द२	द३	द४	द५	द६	द७	द८	द९	७०	७१	७२	७३	७४	०	ग.घ.
१०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	१२
फ.	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	४४
०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	०
०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	०
४८	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	०
३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	०
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	०
७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	०
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	०
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
०	८	१७	२६	३५	४४	५३	६२	७१	८०	८९	९८	१०७	११६	१२५	१३४	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	०
६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	०
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	०
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	०

बुधमदफल्मारिणी* ।

[illegible]

बुधमंदफलसारिणी.

सं.का.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.फ.
फ०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३४	०
०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	०
०	१०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	६	६	१	७	८	८	९	०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४

अथ गुरुश्रावफलसारिणी.

सं.का.	०.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.घ.
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	१३
०	०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	२०
०	०	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	०
०	१०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	०
०	२	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
०	३०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	०
०	६	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	०
०	१०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५
०	३०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	१०

गुरुशिवफलसारिणी.

फ०.	४८	५१	५४	५७	०	३	७	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९	३२	ग.घ.
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	७
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	४८	५१	५४	५७	१	४	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
०	३६	३९	४२	४५	४९	५२	५५	५८	६१	६४	६७	७०	७३	७६	७९	६
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६
०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१२

फ०.	३६	३९	४२	४५	४९	५२	५५	५८	६१	६४	६७	७०	७३	७६	७९	ग.घ.
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	५
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५८

स्पष्टग्रहगुणविफलसारिणी.

अ.को.	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.ज.
फ०	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	६	६	२
क०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५०
ज०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	०
०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
०	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	०
०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	०
०	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	०
०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	०
०	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	०
०	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	०
०	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	८५	०

अ.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.ज.
०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५०
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ज०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	०
ज०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	०
०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	०
०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	०
०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	०
०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	०
०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	०
०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	०

सुखमंदफलसारिणी ।

अ.को	४३	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
क०	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क०	५४	५७	१	४	८	१२	१६	१९	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	०
क०	०	३६	१०	२८	२४	०	३६	१०	४८	२४	०	३६	१०	४८	२४	१८
घ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	६४	६८	१	५	८	१२	१६	१९	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
०	४८	५२	५६	५९	२	६	१०	१४	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	०
०	४२	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
०	४२	४६	४९	५३	५६	०	४	७	११	१४	१८	२२	२६	२९	३२	३६

सुखमंदफलसारिणी.

अं	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.क.
	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
																१४
																०
न०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
																०
०	४८	५२	५६	५९	२	६	१०	१४	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	४२	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
०	६	९	१२	१४	१७	२०	२३	२६	२८	३१	३५	३८	४०	४२	४६	४८

शुक्रशीघ्रफलसारणी.

म.को.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.घ.
फ०	३०	३०	३०	३१	३१	३०	३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३५	३५	७२
क०	१२	३२	५०	१४	३६	०	१६	३८	५८	१९	४०	३१	५२	१	७२	/
घ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	०
०	०	२१	४२	२	२३	४४	५	२६	४६	७	२८	४९	१०	३०	५१	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	६	६	६	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	०
०	३३	१२	५५	१४	३६	०	१७	३८	५८	१९	४०	३१	५२	१	७२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१०	१०	११	११	११	१०	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	०
०	२५	४५	६	२६	४७	-	२७	४८	१०	३१	५२	१३	३४	५५	१६	०

३६/५७/१८/३८/५९/२०/४२/२ २०/५३/४ ०५/५६/६ २७/ ४८

शुक्रशीघ्रफलसारणी.

म.को.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०
फ०	३५	३५	३६	३६	३७	३७	३८	३८	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४५
क०	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१०	२१	३२	४३	५४	०	११	२२	३३	४४
घ०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	५	६
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
०	५	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११
०	३८	७	३३	४५	५६	०	३९	५०	६१	०	१९	३०	४१	५२	६३	७४	८५	९६	०	१०	२१

२४/५३/२ २०/५३/० १०/३४/२८/१७/३६/२५/१४/३३/२३ १२

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

सं.का.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	ग.घ.
फ०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	६८
०	१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	७७	८२	३८
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
घ०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	०
०	१५	३०	४५	१	१६	३१	४६	२	१७	३२	४७	२	१८	२३	३८	०
०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	०
०	३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६८	७३	७८	८३	८८	९३	०
०	३१	३६	४१	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९६	१०१	०
०	७	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	०
०	६१	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९६	१०१	१०६	१११	११६	१२१	१२६	१३१	०
०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

सं.का.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	ग.घ.
फ०	०	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११४	१२२	६९
०	०	२४	३८	५२	६६	८०	९४	१०८	१२२	१३६	१५०	१६४	१७८	१९२	२०६	२२०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	०
०	६	१७	२३	३१	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	०
०	१२	२०	२९	३७	४६	५४	६२	७०	७९	८७	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	०
०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	०
०	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	०
०	१८	२६	३५	४३	५२	६०	६९	७७	८५	९४	१०२	११०	११८	१२६	१३४	१४२	०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अ को	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग घ.
	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	
	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ख०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	०
	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	०
	२४	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	९	८	०
०	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	६०
	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	६८
	६	५	४	३	२	१	०	९	८	७	६	५	४	३	२	६९

शुक्रशीतलफलसारिणी.

अं.को.	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग. फ.
फ०	३२	३०	२८	२६	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१०	८	६	४	२
३२६	३६	२६	१६	४	६४	४३	३३	२३	१२	२	५२	४१	३१	२०	१०
क०	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
३३०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
३३४	०	५	४	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२३	२६	२८	३०
	०	१०	२१	३१	४२	५२	६२	७३	८३	९४	१०४	११४	१२५	१३५	१४६
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५२	५४	५६	५८	६०	६३
	३६	४४	५७	७	१८	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३०	४०	५१	६२
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
	६५	६७	६९	७१	७३	७५	७८	८०	८२	८४	८६	८९	९१	९३	९५
	१२	२२	३३	४३	५४	६	१४	२५	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
	४८	५८	९	१९	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०

अंत्यांकफलसारिणी.

अं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग. फ.
फ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०
ध०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	०
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	०
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	०
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

अंत्यांकगतिफलसारिणी.

अ.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
	६	०	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	४०	४३
	८	४८	३२	६२	१०	३२	६२	१२	३२	६२	१२	३२	६२	१२	३२	६२
घ.	घ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
अ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	६०	६३	६७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
	४०	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	२	२	२	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३
	३०	३३	३७	४०	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०

शुक्रमंदफलसारिणी.

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	अ.को.
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
	३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	०	०	०	०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१२	१४	१७	१९	२२	२४	२६	२९	३१	३४	३६	३८	४१	४३	४५	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	१४	१७	१९	२२	२४

शुक्रमंदफलसारिणी.

अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ.
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०

शुक्रमंदफलसारिणी.

अं.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.फ.
फ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
क०	०	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	४८
घ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	०

शुक्रमंदफलसारिणी.

अ.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.
फ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१८	१८	१८	१८	१८	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४

शुक्रमंदफलसारिणी.

अ.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.
फ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	२४	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९	२९	२४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४

शुक्रमंदफलसारणी.

अं.को.	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गं. घ.
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिशीघ्रफलसारणी.

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गं. घ.
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	०

३० ३६ ४२ ४८ ५४ ० ६ १२ १८ २४ ३० ३६ ४२ ४८ ५४ ०

अनिशप्रफलसारिणी.

अंको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.ध.
फ०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
क०	३०	३५	४०	४५	५०	५५	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	७
घ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०
	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०

४५

२ २ २ २ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

१५/१६/१७/१८/१९/२०/२१/२२/२३/२४/२५/२६/२७/२८/२९/३०

अनिशप्रफलसारिणी.

अंको	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.ध.
फ०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	०
क०	४८	५२	५६	१	५	१०	१४	१८	२३	२७	३२	३६	४०	४५	४९	५
घ०	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	२४
	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०
	०	४	९	१३	१८	२२	२६	३०	३५	४०	४५	४८	५३	५७	६०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	०
	६	१०	१५	१९	२४	२८	३२	३७	४१	४६	५०	५५	५९	६३	६८	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	०

१८/२०/२४/३०/३६/४०/४५/४९/५३/५७/६०/६३/६८/७०/७२/७४/७६/७८/८०/८२/८४/८६/८८/९०/९२/९४/९६/९८/१००

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अ. को.	४२	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग. घ.
फ०	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५
	५४	५७	१	४	८	१२	१५	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	५
क०	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	३६
घ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अ. को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग. घ.
फ०	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
	४८	५०	५२	५५	५७	०	२	४	७	९	१२	१५	१८	२१	२४	२४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	३६	३८	४१	४३	४६	४८	५०	५३	५५	५८	६०	६३	६५	६८	७०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	१२	१४	१७	१९	२२	२४	२६	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	४८	५०	५३	५५	५८	६०	६३	६५	६८	७०	७३	७५	७८	८०	८३	०

ज्ञानिशीघ्रकटस्तारिणः ।

[illegible]

[illegible]

इति शीघ्रफलभाष्यम् ।

अ.को.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.क्र.
पा.	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१
क०	१८	१८	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१२
झ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०	१४	१७	२०	२३	२७	३०	३३	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०
	३६	३९	४२	४६	४९	५२	५५	५९	६	६	८	११	१४	१८	२१	०

॥ २४ ॥ २७ ॥ ३० ॥ ३४ ॥ ३७ ॥ ४० ॥ ४३ ॥ ४६ ॥ ४९ ॥ ५२ ॥ ५५ ॥ ५८ ॥ ६१ ॥ ६४ ॥ ६७ ॥ ७० ॥ ७३ ॥ ७६ ॥ ७९ ॥ ८२ ॥ ८५ ॥ ८८ ॥ ९१ ॥ ९४ ॥ ९७ ॥ १०० ॥

शनिशीघ्रफलसारिणी ।

अ.को.	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	ग.सं.
फ०	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	२
क०	३०	२६	२०	१६	१०	६	१	६	६	४	४	३	३	२	२	४
सं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	०
	१२	१७	२२	२६	३१	३६	४१	४६	५०	५५	५९	६३	६७	७१	७५	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	०
	२४	२९	३३	३८	४२	४८	५३	५८	६३	६८	७३	७८	८३	८८	९३	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५
	३६	४१	४६	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५	११०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अ.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.सं.
फ०	३	३	३	३	२	२	२	३	२	२	२	२	२	२	१	४
क०	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	०
सं०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	०
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
	३६	४१	४६	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५	११०

शनिशीघ्रफलसारणी.

सं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	सं.को.
फ०	११	११	३३	२६	१९	१२	४	५७	५०	४३	३६	२८	२१	१४	७	६	
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	१२	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	
	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५०	५८	६	१२	१९	२६	३३	४१	४९	
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	
	४८	५५	२	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२०	२९	३६	

०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२०	२९	३६	४३	५०	५८	६	१२	१९	२६

शनिमंदफलसारणी.

सं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.फ.
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
	०	७	१५	२२	३०	३८	४५	५३	०	८	१६	२३	३१	३९	४६	१५
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	१५
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
	०	८	२५	३३	३०	३८	४६	५३	१	८	१६	२४	३१	३९	४६	१५
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३
	५४	२	९	१७	२४	३२	४०	४७	५५	२	१०	१८	२६	३३	४०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	०

१५२/५०/५७/५ १२/२०/२७/३५/४३/५०/५८/६ १३/२१/२८/३६

शनिमंदफलसारिणी.

अ.को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ.
फ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	०
	६	१४	२३	३१	४०	४८	५६	६	१३	२२	३०	३८	४७	५५	६	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
	१२	२०	२९	३७	४६	५४	६	११	१९	२८	३६	४५	५३	६	१	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	१८	२५	३६	४३	५२	०	८	१७	२६	३४	४३	५०	५९	७	१६	२४

शनिमंदफलसारिणी.

अ.को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग. फ.
फ०	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	०
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१६
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	०
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	०
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०

शनिमंदफलसारणी.

सं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.
फ०	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	०
क०	०	०	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	१३
ध०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	०
	४२	४९	५६	६	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५७	६	१०	१७	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३	३	३	३	३	४८	४	४	४	४	४	४	४	४	४	०
	२४	३१	३८	४४	५१	५८	६	१२	१८	२५	३२	३९	४६	५२	५९	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
	६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४८

शनिमंदफलसारणी.

सं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.
फ०	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	०
क०	४२	४९	५६	६३	७०	७७	८४	९१	९८	०	७	१४	२१	२८	३५	१
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	०
	१२	१७	२२	२७	३१	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	९	१४	१८	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	०
	२४	२९	३३	३८	४२	४७	५१	५६	६०	६५	७	१२	१७	२२	२७	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	१०	१४	१८	२२	२६	३०	३४	३८	४२

अर्ध किया तो १४ । ४ । ०० अब केन्द्र तुलाका है इस वास्ते कण यह मध्यमभौम ५ । २२ । ०७ । २४ इसमें अर्द्ध कम किया तो ५ । ८ । ३ । २४ यह दल संस्कृत भौम भया इसी रीतिसे अन्य ग्रहों करना केन्द्रादिसहित ३२ के पत्रमें लिखदिये हैं.

भौमादिमंदोदम् ।				
म.	बु	शु	शु	शु
४	७	६	३	८
०	०	०	०	०
०	०	०	०	०
०	०	०	०	०

भौममंदफल.

भौममंदोच्च राशि ४ । ० । ० । ० इसमेंसे दलसंस्कृत भौम ५ । ८ । ३ । २४ कम किया तो बाकी १ । ० । २१ । ५६ । ३६ यह भौमका मंदकेन्द्र भया इसका भुज १ । ८ । ३ । २४ इसके अंश ३८ । ३ । २४ ह. इसवास्ते यहाँ भौममन्दफल सारिणी कोष्ठक ३८ के नीचेका अंक ७ । ११ । ३६ है अब अंशके नीचे फला ३ है इस वास्ते कलाविकला कोष्ठकके ३ के नीचेका फल कलादि ० । ३४ अब अंश कलाके नीचे विकला २४ है इसवास्ते २४ कलाविकला कोष्ठकके नीचेका फल विकलादि ४ । ०९ एकत्र करके पूर्वफलमें शुद्ध किया तो यह ७ । १२ । १४ भौमका मंदफल भया यह मंदकेन्द्र तुलादि है इसवास्ते कण, यह मध्यम भौम ५ । २२ । ७ । २४ में कम किया तो ५ । १४ । ५५ । १० यह मंदरूप भौम भया इसी रीतिसे बुधादि ग्रह करना + अब यही मंदफल ७ । १० । १४ विगीत कहिये धन इसवास्ते प्रथम शीघ्रकेन्द्र ६ । १९ । ४ । ३२ में शुद्ध किया तो ६ । २६ । १६ । ४६ यह भौमका अंतिम शीघ्रकेन्द्र भया ।

अंतिम शीघ्रफल.

यह केन्द्र पड़धिक है इसवास्ते १२ में घटित किया ५ । ३ । ४ । ३४ यह हुआ अब इसके अंश १५ । ३ । ४ । ३४ इसका पूर्वोक्त शीघ्रफलसारिणी

कोष्ठक १५३ का नीचेका अंशादि फल ३४।२५।१२ यह अब अंशके नीचे कला ४३ है इसवास्ते ४३ कलाविकला कोष्ठकके नीचेका फल कलादि ३४।७ यह अंश कलाके नीचे विकला १४ है इसवास्ते १४ कला विकला कोष्ठकमेंका विकलादि फल ११।६ यह सब फल ज्ञानसारिणीमें लिखा है इसवास्ते प्रथम जो फल ३४।२५।१२ इसमें कम किया तो ३३ ५०।५३।५४ यह अंतिम शीघ्रफल मया यह केन्द्र तुलाका है इसवास्ते ज्ञान, मंदस्वप्न भौम ५।१४।५५।१० में कम किया तो ४।११।४।१६ यह स्वप्न भौम मया जब भौमशुक्रके अंतिमशीघ्रकेन्द्रका अंश १६५ से १८० तक आवे तो उसका शीघ्रफल लेनेके खातिर और उदाहरण कहते हैं मंगलका अंतिम शीघ्रकेन्द्रका अंश १७०।२०।२२ कल्पना करके अब मंगलशीघ्रकेन्द्रसारिणीमें अंश्यांक सारिणीमें १७० अंशके नीचे अंशादिफल १।०।० यह अब अंशके नीचे कला २० इसका फल ४।०।० और कलाके नीचे विकला २२ का ४।०।० फल एकत्र करके ४।४ मया इसको पूर्वमें लाया जो फल है सो सारिणीमें धन लिखा है इसवास्ते कला विकला फल युक्त करके १।४।४ यह फल केन्द्रके वशसे ज्ञान धन ग्रहमें करना ।

गत्युदाहरणम्.

भौमका अंतिम शीघ्रकेन्द्रका अंश १५३ आया है इस वास्ते १५३ कोष्ठकका गतिफल ७।३८ कलादि धन यह और मंदफलसारिणी कोष्ठक ३८ का गतिफल ५।२६ कलादि यह मंदकेन्द्र मकरादिक है इसवास्ते ज्ञान तो पूर्व गति फलमें घटाया तो बाकी २।२ यह धन फल आया यही मंगलकी स्वप्नगति मई यह ऊपरके सारिणीपरसे स्पष्ट बुध, राहु, शुक्र, शनि इनकी स्वप्नगति बनाना, राहु जो मध्यम है वही सर्वदा स्पष्ट समझना, उसमें ६ राशि युक्त करना तो केतु होना है ।

भौमादिकोंका द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांशपरसे अस्तादि

जाननेका प्रकार ।

“त्रिनृपैः शराजिष्णुभिः शराकैर्नगभूपैस्त्रिभ्यैः कृपात्कुजाद्याः ।
चलकेन्द्रलवैः प्रयाति वक्रं भगणात्तेः पातितेर्ब्रजंति मार्गम् ॥

क्षितिजोऽष्टयमैरुदेति पूर्वे गुरुर्दिशे रविजस्तु सप्तचन्द्रैः ।

स्वस्वोदयभागसंविहीनैर्भगणांशैरपरत्र यांति चास्तम् ॥

खशरैश्च जिनैः परे ज्ञभृगोरुदयोस्तोऽक्षदिनेनंगादिभूमिः ।

उदयोक्षनखैरुदयदीन्दुभिः प्रागस्तो दिग्दहनेश्च षट्सुरैः स्यात् ॥”

टीका:—अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे भौमका १६३, बुधका १४५, गुरुका १२५, शुक्रका १६७, शनिका ११३ इतने अंश होय तो क्रमसे वकी ग्रह होते हैं. और क्रमसे भौम १९७, बुध २१५, गुरु २३५, शुक्र १९३, शनि २४७ इतने अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश होय तो क्रमसे वह ग्रह मार्गी होते हैं । अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे भौमका २८ गुरुका १४ और शनिका १७ होय तो क्रमसे इनका उदय पूर्वमें होता है. और अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश अनुक्रमसे ३३२।३४६।३४३ इतने होय तो भौम गुरु शनि इनका अस्त पश्चिममें होता है और अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश बुधका ५० शुक्रका २४ यह होय तो बुधशुक्रका पश्चिममें उदय होता है और अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे १५५।१७७ यह होय तो बुध शुक्रका अस्त पश्चिममें होता है. और अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे २०५।१८३ यह होय तो बुध शुक्रका पूर्वमें उदय होता है+ और अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे ३१०।३२६ यह होय तो बुध शुक्रका पूर्वमें अस्त होता है.

“वक्रोदयादिगदितांशकतोऽधिकाल्पाः केन्द्रांशकाः क्षितिमुतादि-
गुणास्त्रिभक्ताः ॥ सांकांशका दशहतांशकताः कुभका क्वाद्यमा-
तदिवसैः क्रमतो गतेष्यम् ॥”

टीका:—ग्रहोंका वक्र, उदय, अस्त मार्ग इन्होंके जो अंतिम शीघ्रकेन्द्रांशक है वह उक्त शीघ्रकेन्द्रांश और अर्धश्री शीघ्रकेन्द्रांश इनका अंश करके अंतरांश क्रमसे भौमका दूना करना बुधको ३ से भाग देना, गुरुको १० से गुणके ९ से भाग देना शुक्रको २० से गुणके ६ से भाग देना और शनिको १ से भाग देना तो भागाकार जो आवै सो वह क्षिति मया, अंतर उक्त शीघ्रकेन्द्र

अभीष्टशीघ्रकेन्द्रांश अधिक होय तो वक्र उदय अस्त और मार्ग यह होयके उतने दिन मये ऐसा जानना और जो उक्तशीघ्रकेन्द्रसे अभीष्ट केन्द्रांश कमती होय तो वक्र, उदय, अस्त और मार्ग यह होनैका इतने दिन आगे होगा ऐसा समझना.

खगाः स्पष्टाः सजवाः ।

सू	च	म	व	सु	शु	श	रा	क	स्वोदयपल		
०	९	४	११	५	१०	२	४	१०	मे	२७८	मी
१३	८	११	२१	१	२६	१३	२१	२१	वृ	२९९	वृ
१०	२२	४	२०	१२	५६	२१	४०	४०	मि	३९३	म
४२	३५	१६	८३	३७	४	४५	८	८	फ	३९३	फ
५८	७३१	०	१४	५५	५४	४	३	३	सि	२९९	वृ
१६	४३	०	५४	२६	३८	३९	११	११	क	२७८	सु

लग्न बमानेके लिये लंकादयसे स्वदेशोदय लानेकी रीति ।

लङ्कोदया नागपुरद्गदत्ता २७८ गोड्काश्विनो २९९

रामरदा ३२३ विनाडयः ॥ क्रमोत्क्रमस्थाश्चर.

खण्डकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थाश्च विहीनयुक्ताः ॥

लंका में मेघराशिका उदय २७८ पल, वृषभराशिका उदय २९९ पल, मिथुनराशिका उदय ३२३ पल, कर्कराशिका उदय ३२३ पल, सिंहराशिका उदय २९९ पल, कन्याराशिका उदय २७८ पल रहता है और लंका में तुला-राशिसे मीनराशितक उदयके पल कन्याराशिसे उलटा मेघराशितक लिखा है सो जानना जिस देशका उदय करना होय उस देशका चरखंडा लेके क्रमसे मेघ वृष मिथुनका पलात्मक जो उदय उसमें कम करना और वही चरखंडा उलटा कर्क सिंह कन्या इनका जो पलात्मक उदय उसमें युक्त करना तो स्वदेशका उदय मेघसे कन्यातक होता है. और वही उदय उलटा तुलासे मीनतक होता है ।

स्वदेशोदय बनानेका उदाहरण कहते हैं.

मेघका पलात्मक उदय २७८ इसमेंसे प्रथम चरखण्ड ७० यह कम किया

तो २०८ यह पलात्मक स्वदेशका मेषका उदय, वृषजका पलात्मक उदय २९९ इसमें द्वितीय चरखंड ५६ यह कम किया तो २४३ यह स्वदेशका वृषका उदय, मिथुनका उदय ३२३ इसमें तृतीय चरखंड २३ यह कम किया तो ३०० यह मिथुनका स्वदेशी उदय, कर्कका उदय ३२३ सिंहका उदय २९९ कन्याका उदय २७८ इन सबमें क्रमसे २३५६ । ७० यह युक्त किया तो क्रमसे कर्कका २४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ यह पलात्मक स्वदेशका लग्न जया अब यह उलटी रीतिसे तुलाका ३४८ वृश्चिकका ३५५ धनका ३४६ मकरका ३०० कुंभका २४३ मीनका २०८ यह पलात्मक स्वदेशका उदय जया ।

स्वदेशादय.		
मे.	२०८	मी.
वृ.	२४३	कुं.
मि.	३००	म.
क.	३४६	ध.
सि.	३५५	वृ.
कं.	३४८	तु.

लग्न बनानेका प्रकार ।

तात्कालार्कः सायनः स्वोदयग्रा भोग्यांशाः
स्वयुद्धता भोग्यकालः ॥ एवं यातांशैर्भवेद्यात-
कालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥

“तदनुजहीहि ग्रहोदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहलवाद्यम् ।

सहितमजादियुद्धैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥

भोग्यतोल्पेष्टकालात्स्वरामाहतात्स्वोदयातांशयुग्मास्करः ।

स्यात्तनुः निशि तु सप्तभार्गात्स्यात्तनूरिष्टकाले ॥ ”

जिस कालका लग्न करना होय उस कालका सप्त सूर्य करके उसमें अब-
यांश युक्त करना जो अंक आवै उसमेंसे राशिका त्याग करके जो अंश-
दिक फल रहे सो भुक्त होता है और जो भुक्त है सो ३० अंशमें कम
करनेसे अंशादि भोग्यफल होता है अनन्तर पूर्वमें जिस राशिका त्याग किया
है उसमें १ युक्त करके तत्परिमित राशिके उदयसे भुक्त और भोग्य

गुण देना जो गुणाकार आवै उसको ३० से भाग देना जो भागाकार भाग
 सो क्रमसे भुक्तकाल और भोग्यकालका पल होता है अब अभीष्ट घटिका
 जो होय उसका पल करके उसमें भोग्यकालका पल कम करना जो शेष रहे
 उसमेंसे जिस उदयसे गुणन किया होय उसके आगेके जितने पलात्मक
 उदय कम होय उतने कम करना और जो पलात्मक शेष रहै उसको ३० से
 गुणके जो गुणाकार आवै उसको जो उदय कम न गया हो उदय
 भाग देके फल अंशादि आवेगा उसमें भेष राशिसे जितनी राशिका उदय कम
 गया होय उतनी राशि युक्त करना जो फल आवै उसमें अयनांशा कम
 करना तो अभीष्टकालका राश्यादि लग्न होता है ।

भुक्तकालसे लग्न करना होय तो अभीष्टकाल रखते वक्त जो
 घटी पल होय उसको ६० में घटायकर जो शेष रहै उसको अभीष्ट
 रखना । भुक्त घटायकर जब लग्न घटावै उस वक्त उलटा लग्न घटावै जो
 भेषके उदयसे गुण तो मीन कुंभोदिक कमती करै और सब क्रिया भोग्य
 वक्त करै ।

राशिका लग्न करना होय तो स्पष्ट सूर्यमें ६ राशि युक्त करना अन
 तर पूर्व रीति प्रमाण लग्न बनावना परंतु अभीष्टकाल रखते वक्त जो इ
 काल हो उसमें दिनमान कम करके जो शेष रहै सो अभीष्ट रखना ।

जन्मकाल सूर्योदयसे ३२ घटिका १ पल पर है उसी वक्तका ल
 साधन करते तात्कालिक स्पष्ट सूर्य ०० । १३ । १० । ४२ । इसमें अय
 नांशा २२ । ४४ । ०३ यह युक्त करके १ । ५ । ५४ । ४५ यह सायन सूर्य भय
 इसकी राशि त्याग करके ५ । ५ । ४ । ४५ यह भुक्त गया । यह ३० अंश
 कम करके अंशादि २४ । ०५ । १५ यह भोग्य गया यह वृषभराशिका भोग्य
 है जिसलिये पहिले राशिस्थानमें एक अंक था इसलिये वृषके उदय इस २४
 से गुणके अंशादिफल ५८५३ कला १५ विकला ४५ गया इसको ३०
 भाग देके १९५ । ३१ । ५ । ४५ यह पलात्मक भोग्यकाल गया इसही प्रका

युक्त पल साधन करना । अब सूर्योदयसे अभीष्ट घंटा ३२ पल ०१ इसका
 पल किया तो १९२१ इसमें भोग्यकाल १९५।३।१५।४५ यह कम
 करके शेष १७२५।२६।४४।१५ यह इसमें मिथुनोदय ३००, कर्कोदय
 ३४६, सिंहोदय ३५५, कन्योदय ३४८, तुलोदय ३४८ यह कम करके
 शेष २८ पल बचे इसमें वृश्चिकोदय कम होता नहीं इसवास्ते शेष पल २८ को
 ३० से गुणके नीचेका अंश २६ युक्त करके ८६६ यह गया इसको वृश्चिको-
 दय ३५५ से भाग देके अंश २ लब्ध गया शेष १५६ को ६० से गुणा तो
 ९३६० गया इसमें कला ४४ युक्त किया तो यह ९४०४ गया इसमें
 ३५५ से भाग देनेसे कला २६ गया शेष १७४ रहा इसको ६० से गुणा तो
 १०४४० इसमें विकला १५ युक्त किया तो १०४५५ यह गया इसको
 वृश्चिकोदय ३५५ से भाग देनेसे २९ विकला प्राप्त गई अब पूर्वमें प्राप्त
 गया अंशादि ०२।२६।२९ यह है इसमें मेपादि शुद्ध पर्वत राशि ७ युक्त
 किया तो ७।२।२६।२९ गया इसमें अयनांश २२।४४।३ कम किया
 तो राश्यादिक लग्नस्पष्ट गया, ६।१।४२।२६ इसमें ६ राशि युक्त किया तो
 यह ००।१।४२।२६ समं प्राप्त गया।

अभीष्टकालमें भोग्यकाल कमती न होय तो लग्न

वनानेकी रीति ।

पलात्मक अभीष्टकालको ३० से गुणके उसको सायन ग्रहकी जो राशि
 होय उस राशिके उदयसे भाग देके अंशादि फल जो आवेगा वह स्पष्टसूर्यसे
 युक्त करना तो इष्टकालका लग्न होता है ।

लग्नसे अभीष्टकाल करनेकी रीति ।

“अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो युक्तमध्योदयोऽभीष्टका-
 लो भवेत् ॥ यदि तनुदिननायावेकराशौ तदंशान्तरहत
 उदयः स्यात्साधित्विष्टकालः । इत उदय ऊनश्चेत्त
 शोष्यो द्युतात्रात् ॥”

टीका—लग्नमें अयनांश युक्त करके जो अंक आवै उससे भुक्त काल करना और स्पष्ट सूर्यसे भोग्यकाल करना अनंतर सायन लग्न और सायन सूर्य इनके मध्यके जो उदय होय उनका अंक लेके उसमें भुक्तकाल और भोग्यकालका अंक युक्त करना तो पलात्मक अर्भाष्टकाल होता है ।

सायनलग्न और सायन सूर्य एक राशिमें होय तो लग्नसे अर्भाष्टकाल साधनका उपाय यह है कि, सायनलग्न और सायन सूर्य इनका अंतर करके उसको सायन सूर्यके उदयसे गुणके ३० से भाग देना जो भागाकार आवै सो पलात्मक अर्भाष्टका होना है, जो सायन सूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होय तो पूर्व प्रमाण साधन किया जो कला सो ६० मेंसे कम करना तो इष्टकाल होता है, ऊपर कहा वैसा प्रमाण जन्मकालका लग्न ६।९।४२।२६ यह इसमें ६ राशि युक्त किया तो यह सप्तम भाव हुआ ०।९।४२।२६ ॥ १ ॥

जगदीशेन रचिते केशवीग्रंथटिप्पणे ।

स्पष्टाधिकारः पूर्णोऽयं तद्भाषार्थप्रकाशकः ॥ १ ॥

इति स्पष्टाधिकारः ॥ १ ॥

अथ भावाध्यायः २.

नतोन्नतपूर्वकदशमचतुर्थभावसाधन ।

रात्रेः शेषमितं युतं दिनदले नाहो गतं शेषकं
विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं चोन्नतम् ॥

यत्पूर्वोन्नतपङ्कभयुक्तरवितः पश्चात्ततादित्यतो

यल्लंकोदयकैश्च लग्नमिव तन्माध्यं सपङ्कभं सुखम् ॥ २ ॥

अन्वयः—रात्रेः शेषं वा इतं (गतं) दिनार्द्धेन युतम् अहो दिनस्य गतं वा शेषांशं दिनदलेन विश्लेष्यं खल्विति निश्चयेन क्रमेण पूर्वपश्चिमनतं स्यात् तन्नतं युतं च पुनः उन्नतं स्यात् । पूर्वोन्नतपङ्कभयुक्तरवितः लंकोदयैर्लशमिव

मोग्यांश मया इसको लंकोदय वृषका मान २९९ से गुणा तो ७२०२ । ९
 ४५ इसको ३० से भाग दिया तो २४०।२।९।४५ यह मोग्यकाल पला-
 स्मक मया इसको नत १५।४० इसकी पल ९४० में कम किया तो ६९९
 २७।५०।१५ इसमें मिथुनोदय ३२३, कर्कोदय ३२३, यह कम करके
 शेष ५३।२७।५०।१५ इसमें सिंहोदय २९९ कम नहीं होता इसवास्ते शेष
 ५३ को ३० से गुणा तो १५९० इसमें नीचेका अंश २७ युक्त किया तो
 १६।१७ इसको सिंहोदय २९९ से भाग दिया तो अंशदि ५।५४।३८
 इसमें मेपादि शुद्ध पर्यंत राशि ४ युक्त किया तो ४।५।२४।३८ इसमें अय-
 नांश २२।४४।३ डीन किया तो यह ३।१२।४०।३४ दशम मया इसमें ६
 राशि युक्त किया तो ९।१२।४०।३४ यह चतुर्थ भाव मया ॥ २ ॥

भावसन्धिसाधनं क्षयचयफलसाधनं च ।

ऽव्यंशो व्यस्तखभस्य भूयमहतो योज्यस्तनौ द्विच्युतो

बंधौ तेषि च सांगभास्तदुमुखाः संधिर्द्वियोगोद्धितः ॥

शून्यं संधिषु भावगेऽखिलफलं स्याद्भावसंध्यंतरे-

णातं संधिखगांतरं क्षयचयं भावाधिकेऽल्पे खगे ॥ ३ ॥

अन्वयः—व्यस्तखभस्य व्यंशो भूयमहतस्तनौ योज्यस्तदा द्वितीय-तृतीय-
 भावौ भवतः विगतमस्तं यस्मात्खगाच्चद्व्यस्तखभं तस्येत्यर्थः स एव व्यंशो
 द्विच्युतो द्वाभ्यां च्युतो भूयमहतश्चतुर्थभावे योज्यस्तदा पंचपष्ठभावौ भवतः
 पञ्चगुणितयुक्ते पंचमभावः, द्विगुणितयुक्ते षष्ठभावः स्यादित्यर्थः । तेऽनंतरा-
 नीताश्वत्वारो भावाः सांगभाः पञ्चाशिसंहितास्तदाऽष्टमनवमैकादशभावाः स्युः
 अपिचशब्दावलुक्तबोधकौ चत्वारो भावाः प्रथमं साधितास्तद्वोधकमित्यर्थः ।
 अथ संधि—संधिर्द्वियोगोद्धितः, द्वयोर्योगो द्वियोगोद्धितो द्वाभ्यां सन् संधिः
 यात्प्रथमभावरय विरामसंधिर्द्वितीयस्थारामसंधिर्मदतीति । संधिसंज्ञे ग्रहे
 शून्यं फलं स्यात् भावगे भावांशादिसमे अखिलं संपूर्णं रूपफलमित्यर्थः ।
 भावाधिके ग्रहे सति संधिखगयोंतरं भावसंध्यंतरेण मर्कं क्षयार्थं फलं स्यात् ।

होता है । वह यह भावसे अधिक होय तो क्षय (अवरोह) फल, अथवा यह भावसे कमता होय तो चय आरोहफल जानना ।

उदाहरण—यह दशम भाव ३।१२।४०।३४ इसमेंसे सप्तम भाव ०।९४२।२६ कम करके ३।२।५८।८ यह मया इसका तृतीयांश १।०।५९२२।४० इसमें लग्न ६।९।४२।२६।० युक्त करके ७।१०।४१।४८।४० यह द्वितीय भाव मया तृतीयांशको दूना २।१।५८।४५।२० में लग्न ६।९४२।२६।० युक्त करके ८।११।४१।११।२० यह तृतीय भाव मया यह तृतीयांश १।०।५९।२२।४० इसको २ राशिमें कम करके शेष ००।२९०।३७।२० यह इसमें चतुर्थ भाव ९।१२।४०।३४।० युक्त करके १०।११।४१।११।२० यह पंचम भाव मया वही शेष दूना १।२८।११।४।४० को चतुर्थ भाव ९।१२।४०।३४।० युक्त करके ११।१०।४१।४८।४० यह षष्ठभाव मया अब द्वितीय, तृतीय, पंचम, षष्ठ यह भावोंमें ६ राशि क्रमसे युक्त करे तो अष्टम, नवम, एकादश, द्वादश यह स्पष्ट भाव होते हैं ।

लग्न ६।९।४२।२६।० द्वितीय भाव ७।१०।४१।४८।४० इनका योग १३।२०।२४।१४।४० इसका अर्द्ध ६।२५।१२।०७।२० यह प्रथम भावकी विरामसंधि और द्वितीय भावकी आरंभसंधि होती है इसी प्रमाण सर्वभावकी संधि करना अथवा चतुर्थभाव ९।१२।४०।३४।० में लग्न ६।९।४२।२६।० कम किया तो ३।२।५८।८ यह मया इसका षष्ठांश ०।१५।२९।४१।२० इससे लग्न ६।९।४२।२६।० युक्त किया तो ६।२५।१२।०७।२० यही रीतिसे क्रमसे युक्त करना तो संधिसहित चार भाव होते हैं पुनः षष्ठांशको १ में हीन करना चतुर्थ भावसे युक्त करना तो सप्तम भावतक संधिसहित होता है । आगे पूर्वोक्तवत् ।

होते हैं । अनंतर यही षष्ठांश १ में कम करके जो शेष रहै सो चतुर्थ भावमें युक्त करे तो चतुर्थ भावके विरामसंधितक भाव होते हैं अनंतर इन ६ भावोंमें और संधियोंमें ६+६ राशि क्रमसे युक्त करे तो आगेके सर्व भाव संधि सुगम रीतिसे होते हैं ।

१	०	२	०	३	०	४	०	५	०	६	०	भा.
६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	
१	२५	१०	२६	११	२७	१२	२७	११	२६	१०	२५	
४२	१२	४१	११	४१	१०	४०	१०	४१	११	४१	१२	
२६	७	४८	३०	११	५२	३४	५२	११	३०	४८	७	
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	
७	०	८	०	९	०	१०	०	११	०	१२	०	भा.
०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	
९	२५	१०	२६	११	२७	१२	२७	११	२६	१०	२५	
४२	१२	४१	११	४१	१०	४०	१०	४१	११	४१	१२	
२६	७	४८	३०	११	५२	३४	५२	११	३०	४८	७	
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	

जन्मलग्नमिदम् ।



माषोद्वारचक्रमिदम् ।



ग्रहभावफलचक्रम् ।

स.	च.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	
४६	३१	५७	१५	४९	३	५३	फः
३३	४४	२७	५६	४२	४	३१	
क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	क्षय	

जगदीशेन रचिते फेशवीग्रंथटिप्पणे । भाषाधिकारः पूर्णोऽयं तद्भाषार्थप्रकाशकः ॥ २ ॥

इति भाषाध्यायः ॥ २ ॥

अथ द्वाष्टिसाधनाध्यायः ३.

सैकाग्रिद्विखवेदरामयमभूखाभ्राभ्रमेकादिभे

द्रष्टा वर्जितदृश्यकस्य गुरुणा चेदष्टवेदे कृताः ।

मंदेनांकयमेऽसृजा नगगुणैका भादिजाः संस्कृता-

भाग्नक्षयवृद्धिखा नललधेनाब्ध्युद्धता दृग्भवेत् ॥ १ ॥

अन्वयः—पश्यतीति द्रष्टा दर्शनयोग्यो दृश्यः द्रष्टा वर्जितदृश्यकस्यैकादिभे शेषे सति सैकाग्रिद्विखवेदरामयमभूखाभ्राभ्रम् ०।१।३।२।०।४।३।२।१।०।०।० । एते स्युः तत्रैकमे शेषे सं शून्यं द्विभे द्विशेषे एक इत्यादि, द्वादशभेऽर्थात् शून्य-शेषेऽंशं शून्यं किंभूता एते अंका भादिजा राश्यादिजाः गुरुस्थानिभौमानां विशेषः चेद्विती चेदुरुणा द्रष्टा वर्जितदृश्यकस्याष्टवेदेभ्यो कृताश्चत्वारोऽंकाः स्युस्तदा पूर्वोक्तं नेत्यर्थः । मंदेनांकयमे कृताश्चत्वारोऽंकाः । असृजा भौमेन द्रष्टा वर्जित-दृश्यकस्य नगगुणे भे चत्वारोऽंकाः स्युः । पूर्वोक्ता नेति भावः । एवं राश्यादावंकानुक्त्वा राश्यधःस्थांशानां साधनमाह—भाग्नमेति । किंविशिष्टाअंकाः भाग्नक्षयवृद्धिखानललधेन संस्कृता एतदुक्तं भवति भादिजो योऽंकः सोऽग्रिमांका-चेच्छुद्धस्तदा वृद्धिः यदाग्रिमाको राश्यादिजांकाचेच्छुद्धस्तदा क्षयः तेन गुणिता राश्याधःस्थांशयोः त्रिंशद्भाज्या लब्धेन भादिजाः संस्कृताः कार्याः क्षये हीना वृद्धौ युक्ता इत्यर्थः । ततोऽब्ध्युद्धताश्चतुर्त्तका दृग्भवेत् दृष्टिः स्यादिति भावः ।

जिस ग्रहकी दृष्टि बनाना होय तो जिस द्रष्टा ग्रहकी दृष्टि जिस ग्रह पर अथवा भावपर देखना होय तो वह ग्रह किंवा भाव दृश्य होता है द्रष्टा दृश्यभेसे कम करके जो राश्यादिक शेष रहै उस स्थानमें ००।१।३।२।००।४।३।२।१।०।०।०। यह दृष्टिफलांक क्रमसे मेपादि द्वादशराशिके

१ भावोनकः स्वगः पूर्वसंधिना रहितस्तदा । अधिकश्वेदिरामाख्य-संधेः शोध्यस्तदंतरम् ॥ भावसंध्यंतरेणाप्तं तद्भावफलमुच्यते ॥ क्षयं चैव तदा ज्ञेयमधिकेऽल्पे चयं भवेत् ॥ १ ॥

स्थानमें लेना परंतु जिस वक्त गुरु द्रष्टा होय उस वक्त ऊपरका बाकी राश्यंक ८ किंवा ४ आवै तो और शनि द्रष्टा होय तो बाकी राश्यंक ९ किंवा २ और मंगल द्रष्टा होय तो बाकी राश्यंक ७ किंवा ३ होय तो उसी ठिकाने ऊपर लिखा जो दृष्टिफलांक सो न लेना, ४ दृष्टिफलांक लेना अनंतर दृष्टिफलांकको, दृष्टिफलांकके आगेके अंककी क्षय किंवा वृद्धि जो आवै उससे ऊपरका जो शेष राश्यंकके नीचे भागादिक है उसको गुणके जो गुणाकार आवै उनको ३० भाग देके जो फल आवै उससे संस्कार करना आगेका अंक कमती होय तो यह दृष्टिफलांकमेंसे कम करना अथवा आगेका अंक ज्वादा होय तो यह दृष्टिफलांकमें युक्त करना अनंतर यह संस्कृत दृष्टिफलांकको ४ से भाग देना जो फल आवै वह ग्रहकी दृष्टि होती है ऊपरके श्लोकसे यह तथा भावदृष्टि करनेमें बहुत परिश्रम पडता है इसवास्ते नीचे लिखी जो सारणी उसपरसे बहुत जल्दी दृष्टि फल आता है.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
०	१५	४५	३०	६०	४५	३०	१५	०	०	०	०	वृद्धा

श म च

६० ६० ६०

म श

६० ६० ६०

का नीचेका अंक लेके अंतर करै जो अंतर आवै उससे नीचे जो भागादिक होय तो गुण देना फिर ३ से भाग देना आवै मो फलांकमें संस्कार करना सो ऐसा किं आगेका अंक जादा होय तो युक्त करना पिछलेसे आगेका कमती होय तो पिछलेमें घटा देना तो दृष्टि होती है, यह दूसरा प्रकार होगा ।

दृष्टा दृश्यमें कम करके जो १ राशि रहै तो अंशादिकको आधा करै तो दृष्टि होय और २ राशि बचै तो अंशमें १५ युक्त करै तो दृष्टि होय और तीन राशि रहै तो अंशारिक आधा करै और उन अंशोंको ४५ में घटाय दे तो दृष्टि होय और चार राशि रहै तो अंशादिकको ३० में घटावै तो दृष्टि होय । और ५ राशि रहै तो अंशादिक दूना करै तो दृष्टि होय और ६।७।८।९ राशि बचै तो राश्यादिक १० में शेष अंश करै पीछे आधा करै तो दृष्टि होय और १०।११।१२ राशि बचै तो दृष्टि नहीं होय और मंगलकी करै तो ३।७ राशि बचै तो अंशको ६० में घटाय दे तो दृष्टि हो और २ राशि बचै तो अंशादिक आधा करै फेर उत्तरेमें आधा जोड़ै और १५ जोड़ै तो दृष्टि हो और ६ राशि ऊपर होय तो १०० दृष्टि होग और गुरु दृष्टि करै जब तो राशि बचै तो अंशादिक आधा करै अंशमें ४५ जोड़ दे तो दृष्टि होय और चार राशि ऊपर होय तो अंशादिक दूना करै पीछे ६० में घटावै तो दृष्टि होय और ८ राशि ऊपर होय तो अंशादिक आधा कर सहित करै फेर ६० में घटाय दे तो दृष्टि होय शनैश्वरकी दृष्टि करै तो १ राशि ऊपर होय तो अंशादिक दूना करै दृष्टि होय राशि ८ होय तो अंशोंमें ३० जोड़ै तो दृष्टि होय और २ राशि होय तो अंशादिक आधा करै ६० में घटाय दे तो दृष्टि होय और ९ राशि ऊपर बचै तो अंशादिक दूना करै ६० में घटाय दे तो दृष्टि होय ॥ १ ॥

इति दृष्टि सोसरी राति ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दृष्टि उदाहरण ।

द्रष्टा चंद्र १।५।२२।३५ यह दृश्य सूर्य ००।१३।१०।४२ से कम करके शेष ३।७।४८।७ यह है। इसवास्ते चंद्रदृष्टिफलसारिणीमें ३ तृतीयराशि कोष्ठकके सामने ७ अंशके नीचेका फल ०।४१।३० इसको दृष्ट अंशके नीचे कला ४८ विकला ७ है। इसको राशि-कोष्ठक ३ के सामनेका गुण १ से गुणके कला ४८ विकला ७ इसको गुणके नीचेका हर २ से भाग देके २४।०३ यह विकलादि फलसारिणीमें कृष्ण लिखा है इसवास्ते पूर्वमें लिया जो फल ०।४१।३० है इसमेंसे कम करके ०।४१।०६ यह चन्द्रकी सूर्यके ऊपर दृष्टि गई। इसीप्रमाण सर्व ग्रहोंकी दृष्टि ग्रहोंपर और भाव पर सारिणी परसे करना । द्रष्टा दृश्यमेंसे कम करके ३।७।४८।७ इसवास्ते ३ राशिके नीचेका अंक ४५ आगेकी राशि ४ इसके नीचेका अंक ३० इसका अंतर १५ इससे भागादिको गुणके ११७।१।४५ इसको ३० से भागदिया तो ३।५४ अब अगली राशिका अंक कमती है। इसवास्ते ४५ में ३।५४ कम किया तो ४१।६ यह चंद्रकी दृष्टि गई। ऊपर राशिके स्थानमें ०० धर देना तीसरी विधि दृष्टिकी अंशादिक ७।४८।७ अर्द्ध किया तो ३।५४।३ इसको ४५ में कम किया तो ००।४१।०६ पूर्व तुल्य चन्द्र दृष्टि गई ॥ ४ ॥

दूसरी रीति दृष्टि उदाहरण.

सू.	च.	मं.	वृ.	मृ.	श.	ग्रहः
०	०	०	०	०	०	सूर्यः
०	१८	३१	०	४	१५	
०	५४	३	०	५८	११	
०	०	०	०	०	०	चंद्रः
४१	०	४२	३०	२८	१०	
६	०	९	५८	३५	४७	
०	०	०	०	०	१	मंगलः
२८	५	०	४९	०	०	
५७	५२	०	४३	०	०	
०	०	०	०	०	०	बुधः
०	७	१०	०	३३	३७	
०	५९	१७	०	४३	१	
०	०	०	०	०	०	शुक्रः
४७	५८	०	५३	३७	१२	
२९	३५	०	२६	०	२७	
०	०	०	०	०	०	शुक्रः
८	०	२८	०	५४	३६	
७	०	१६	०	२२	४७	
०	०	०	०	०	०	शनिः
०	४८	५५	४४	४७	४३	
२४	५९	२५	२	३४	३४	
१	१	१	१	१	५	शुभेक्यं
३६	६	२०	२४	५६	४८	
४२	३४	४२	२४	४०	१४	११
०	१	१	१	०	१	०
२९	१३	२६	३३	५२	४३	१५
२१	३५	२८	४५	३२	३४	११

भावापरिदृष्टिचक्रम् ।

त	ध	स	सु	सु	रि	ना	मृ	घ	क	आ	व्य	भाव
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२३	४३	३०	१५	०	०	०	०	१४	४४	३०	२	सूर्यः
३	१४	४४	१५	४०	०	०	०	१५	३०	४५	२१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१२	०	०	०	४	२०	२२	२४	१०	५६	४१	२७	चन्द्रः
५१	०	०	०	९	१९	५०	४१	३७	२१	५१	२१	
०	०	०	०	१	१	०	०	०	०	०	०	
१४	५९	२९	३	०	०	३१	१५	०	०	०	०	मौमः
११	०६	२३	१३	०	०	००	१२	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
५०	३४	१९	४	०	०	०	९	३५	३४	९	३८	बुधः
५०	५०	२०	२०	०	०	०	४०	२०	२०	४०	४१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	१७	४६	५१	६	५८	४५	५६	१३	०	०	०	गुरुः
४४	००	४४	५	५७	४२	४५	१६	०४	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३८	२३	७	०	०	०	६	२८	३७	१४	२९	५२	शुक्रः
३७	७	३८	०	०	०	२३	४५	३७	१६	३०	३७	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३१	०	५६	४२	३०	५७	७	०	०	०	५६	४६	शनिः
५०	३०	३८	०	५१	२०	१०	०	०	०	३९	२०	
१	१	१	०	८	१	१	१	१	१	१	१	
४३	१५	१४	५५	१०	१९	३५	५९	३८	४४	२२	५८	शुभैक्य
२	०६	१२	२५	६	४	५	००	५८	५७	१	३२	
१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	१	०	
३९	४८	५६	३	३१	५७	३८	१५	१४	४४	२७	४८	शपेक्य
१२	१८	४५	२९	३६	२०	४१	१२	१५	३०	२५	४९	

जगदीशेन रचिते केशवीग्रन्थटिप्पणे ।

द्वगाधिकारः पूर्णोऽयं तद्भाषार्थप्रकाशकः ॥ ३ ॥

इति दृष्टिसाधनाऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ बलसाधनाध्यायः ॥ ४ ॥

नीचोनो भगणाश्रुतः पडाधिकश्चेत्पट्टदौर्घ्यं बलं
स्वर्क्षेर्द्धं समभेऽष्टमस्त्रिचरणा मूलत्रिकोणे बलम् ॥

मित्रक्षेत्रीरधीष्टभे त्रय इभांशा वैरिभेष्टयंशको
दन्तांशोऽध्यरिभे गृहादिपञ्चाशत्वेदस्य सप्तैक्यजम् ॥ ५ ॥

सप्तवर्गबलमिदम्.

स्वक्षेत्रं	आधिभित्र	मित्रं	समः	शत्रुः	आधिशत्रुः	मूलत्रि.	
०	०	०	०	०	०	०	
३०	२२	१५	७	३	५२	४५	बल.
०	३०	०	३०	४५	३०	०	

अन्वयः--नीचोनो ग्रहश्चेत्पडाधिको द्वादशराशित्यः शुद्धः पट्टदौर्घ्यं और्घ्यं
बलं स्यात् उच्चसंबंधी बलमित्यर्थः । अत्रेदं ध्येयं उच्चोत्तमग्रे शेपं पट्टा-
शिस्तदा पट्टभागे रूपं बलं पूर्णबलमिति चेत्पट्टात्पस्तदा रूपस्थाने शून्यं
स्थाप्यं पुनः शेपं राश्यादिकं पट्ट्या संगुण्योपरि पट्टाक्तः संलब्धं कलास्थाने
स्थाप्यः पुनः शेपं पट्ट्या संगुण्य पट्टभिर्भागे विकलास्थाने स्थाप्यः एवमं-
शाद्यमुच्चबलं स्यात् । स्वर्क्षेर्द्धमित्यस्यार्थः । स्वर्क्षे स्वगृहे ग्रहे सति अर्द्ध-
रूपार्थं बलं लेख्यम्, समराशित्येऽष्टमांशो बलम्, मूलत्रिकोणे त्रयश्चरणाः,
मित्रक्षेत्रं चतुर्थांशो बलम्, अधिभित्रक्षेत्रं त्रयोऽष्टमांशाः, शत्रुराशित्ये षोडशांश-
बलम्, अधिशत्रुराशित्ये द्वाविंशदंशो बलं स्यादिति सर्वत्र क्रियापदं, सर्वत्र
रूपस्यैर्वादिदं ग्राह्यम् । अत्र स्वर्क्षमित्युपलक्षणं किंतु स्वराश्यादिस्थितेऽ-
प्यर्द्धं बलं ग्राह्यं कुतः इत्यतः आह ग्रहारिपञ्चाशदिति आदिशब्दाद्वोरात्रेका-
पादयो ग्राह्याः गृहादीन् पान्ति ये ते गृहादिषाः ग्रहास्त्रिसप्तवर्गस्वामिनो ये सन्ति
तदशास्वर्क्षेर्द्धमित्यादीनि खेदस्य सप्तवर्गबलानि ग्राह्याणि सप्तानामैक्या-
जायत इति सप्तैक्यजम् ॥

अर्थः—अब बलाध्याय लिखते हैं तहाँ बल छः प्रकारके हैं जैसा कि स्थान १ दिक् २ काल ३ निसर्ग ४ चेष्टा ५ और दृष्टि ६ इन भेदों करके छः ६ प्रकारके बल हैं, इसके बीचमें १ स्थानबल उच्च, सप्तवर्ग, युग्मायुग्म, केन्द्रादि, द्रष्टाण इन भेदों करके ५ प्रकारके हैं । २ दिग्बल एक प्रकारका है । ३ कालबल नतोन्नत, पक्ष, दिनरात्रिभाग, वर्षमास द्यु होरेश इन भेदों करके ४ प्रकारके हैं । ४ निसर्गबल एक प्रकारका है । ५ चेष्टाबल अयन और चेष्टाकेन्द्रज इन भेदों करके २ प्रकारका है । ६ दृष्टिबल एक प्रकारका है । जिस ग्रहका उच्चबल बनाना होय उस ग्रहमें उसी ग्रहका नीच घटाय देना शेषको ६ से भाग देना तो उच्चसंबंधी बल होता है। कदाचित् शेष ६ राशिसे अधिक होय तो १२ राशिमें घटायके शेषको ६ से भाग देना यदि शेष ठीक ६ बचै तो ६ से भाग देना पूर्णबल अर्थात् रूप १ बल होगा जब ६ राशिसे कम रहै तब राशिमें ६ से भाग देनेसे अंशस्थानमें शून्य फल आवैगा पुनः राशिको ६० से गुण देना अंश दूना करके युक्त करना फिर ६ से भाग देना, जो पावे सो कलास्थानमें रखना । शेषको ६० से गुण देना विकला दूना युक्त करना ६ से भाग देना लब्धि विकला होगी अथवा नीच ग्रहांतरका कला करना १८० से भाग देना तो कलादि सुगम रीतिसे उच्चबल होगा अथवा नीच ग्रहांतर जो होय उसकी राशिको १० से गुणना अंश कला विकलाको २० से गुणना तो उच्चबल होता है। जो ग्रह स्वगृहमें होय उसका अर्द्ध ० । ३० । ० बल, समके गृहमें होय तो अष्टमांश ० । ७ । ३०, मूलत्रिकोणका होय तो चतुर्थीश त्रिगुणित ० । ४५ । ०, मित्रगृहका होय तो चतुर्थीश ० । १५ । ०, अधिमित्रका होय तो अष्टमांश त्रिगुणित ० । २२ । ३० शत्रुगृहमें होय तो षोडशांश ० । ३ । ४५ अधिशत्रुका होय तो वृत्तीसर्वां अंश ० । १ । ५२ यह बल गृह होरादि सप्तवर्गके स्वामीके अनु-रोधसे कहिये स्वामी अपने गृहमें होय तो अर्द्धबल और स्वामी सप्तगृहमें

होय तो अष्टमांश-बल इत्यादि-ज्ञानना । यह सप्तवर्गजबल एकत्र करनेसे-
ग्रहोंका सप्त योगजबल होता है ॥

ग्रहोंका उच्चादिकोष्ठक-

ग्रहाः		सू.	च	मं.	बु.	बु.	शु.	का.
उच्च	रा.	०	१	९	५	३	११	६
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	रा.	६	७	३	११	९	५	०
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
मूलवि- कोण	रा.	॥	१ नं.	०	५ न.	८	६	१०
	अं.	२०	३ नं.	२०	१५ ५	२०	२०	२०
स्वगृह		सिंह	कर्क.	मे. वृ.	मि. क.	ध. मी.	वृ. तु.	म. क.
नैसर्गिक मित्र		र. मं. गु.	र. बु.	र. च. गु.	र. शु.	र. च. मं.	बु. श.	बु. शु.
नैसर्गिकसम		बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु
नैसागक शत्रु		श. शु.	०	बु.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. च. मं.
लिंग		पु	स्त्री.	पु.	नपुं.	पु.	स्त्री.	नपुं.

ग्रहोंकी तात्कालिकमैत्री ।

जिस ग्रहकी तात्काल मैत्री देखना होय तो वह ग्रह जिस स्थानमें होय
उस स्थानसे २-३-४-१०-११ और १२ इन स्थानोंमें जो ग्रह होय
सो अभीष्ट ग्रहके तत्काल मित्र होते हैं और १-५-७-८ और ९ इन
स्थानोंमें जो ग्रह होय सो अभीष्ट ग्रहके शत्रु होते हैं ।

ग्रहोंकी पंचधा आधिमेत्री ।

ग्रहोंको नैसर्गिक मैत्र्यादि और तात्कालिक मैत्र्यादि इससे ग्रहोंकी पंचधा
आधिमेत्री उत्पन्न होती है सो इस प्रकार अभीष्टग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक
मित्र और तात्कालिक मित्र होय तो अभीष्टग्रहका आधिमित्र होताहै । अ-
भीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिकमें सम और तात्कालिक मित्र होय तो अभीष्ट
ग्रहका मित्र होताहै । अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक

शत्रु होय तो अभीष्ट ग्रहका सम होता है । अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक सम और तात्कालिक शत्रु होय तो अभीष्ट ग्रहका शत्रु होता है । और अभीष्ट ग्रहका नैसर्गिक शत्रु वा तात्कालिक शत्रु होय तो अभीष्ट ग्रहका अधिशत्रु जानना अत्रेदं ध्येयम् । सम-मित्र=मित्र, मित्र=मित्र अधिमित्र, मित्र-शत्रु=सम, सम-शत्रु=शत्रु, शत्रु-शत्रु=अधिशत्रु ॥ इति ॥

टीप-मेप, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन यह १२ राशि हैं इनमेंसे मेप, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ यह विषम ६ राशि और वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन यह ६ राशि सम होती हैं । यहाँ सप्तमंश, १ ग्रह, २ होरा, ३ द्रेष्काण, ४ सप्तमांश, ५ नवमांश, ६ द्वादशांश और त्रिंशांश होते हैं । १ गृह-(राशि कहिये ३० अंश इसके स्वामी पूर्वमें कहे हैं) २ होरा-(कहिये राश्यर्द्ध १५ अंश) विषम राशिमें प्रथम होराका स्वामी सूर्य और द्वितीय होराका स्वामी चंद्र और समराशिमें प्रथम होराका स्वामी चंद्र द्वितीय होराका स्वामी सूर्य । ३ द्रेष्काण-कहिये राशिका तृतीयांश १० अंश इसवास्ते यह तीन हैं । प्रथम द्रेष्काणका स्वामी गृहाधिप, द्वितीय द्रेष्काणका स्वामी गृहसे पंचम राश्याधिप, तृतीय द्रेष्काणका स्वगृहसे नवमराश्याधिप । ४ सप्तमांश-कहिये राशिका सप्तमांश ४ अंश १७ कला विषमराशिमें अपने गृहसे ७ राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांश-पति होते हैं और समराशिमें अपने गृहके सप्तमराशिसे सात राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांशपति होते हैं । ५ नवमांश-कहिये राशिका नवमांश ३ अंश २० कला, मेप, सिंह, धन यह गृह होय तो मेपसे ९ राशिके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपति होते हैं । वृष, कन्या, मकर यह गृह होय तो मकर राशिसे ९ राशिका स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपति होते हैं । मिथुन, तुला, कुंभ यह राशि होय तो तुलाराशिसे ९ राशिके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपति होते हैं । कर्क, वृश्चिक, मीन यह राशि होय तो कर्क राशिसे ९ राशिका स्वामी नवमांशाधिपति होते हैं । ६ द्वादशांश-कहिये राशिका

द्वादश भाग २ अंश ३० कला सब राशिमें स्वस्व गृहसे १२ राशिके स्वामी क्रमसे द्वादशांशपत्ति होते हैं. ७ त्रिंशांश कहिये राशिका त्रिंशद्भाग १ अंश विषम राशिमें प्रथम ५ अंशका स्वामी भौम आगे ५ अंशका स्वामी शनि आगे ८ अंशका स्वामी गुरु आगे ७ अंशका स्वामी बुध आगे ५ अंशका स्वामीशुक सम राशिमें उलटो रीतिसे ५ का शुक ७ का बुध ८ का गुरु आगे ५ का शनि आगे ५ का भौम इसी रीतिसे जानना ॥

होरालग्नम्

द्रेष्काणलग्नम्

सप्तमांशक



नवमांशकल.

द्वादशांशकल.

त्रिंशांशकल.



रचनीचे वराहः—अजवृषभमृगांगनाकुलिरा शपवणिजौ च दिवाकरादि
तुंगाः । दशराशिस्त्रिंशद्विंशतिर्यौद्रियारौस्त्रिनवकविंशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः ॥

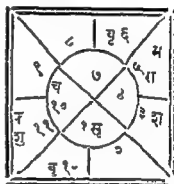
निसर्गमैत्री चक्रम् ।

सू	च	म	बु	वृ	श	ज	ग्रह
च म वृ	सू बु	च व सू	शु सू	सू च म	बु श	ज वृ	मित्र
बु	म वृ श	शु श	म वृ श	श	म वृ	वृ	सम
शु श	०	बु	च	बु श	मृ च	मृ च म	शत्रु

तात्कालमैत्रीचक्रम् ।

सू	च	म	बु	वृ	श	ज	ग्रह
शु बु च श	सू बु श	शु वृ श	सू च श	मृ बु वृ	मृ बु वृ	मृ बु वृ	मित्र
म वृ	श म वृ	शु म वृ	सू म वृ	म वृ श	म वृ श	म वृ श	शत्रु

जन्मलग्नम् ।



पंचधामैत्रीचक्रम् ।

सू	च	म	बु	वृ	श	ज	ग्रह
बु	शु	श	श	श	०	०	मित्र
च	सू बु	वृ	सू च	म	वृ	बु	५ धामैत्र
श म वृ श	सू बु	सू च	च	सू च	सू च	मृ श	मम
०	वृ म श	श	म वृ	०	म वृ	०	शत्रु
०	०	वृ	०	बु श	०	च	५ धिडावृ

उच्चबलसारिणीप्रवृत्ति ।

सूर्यादि ७ ग्रहोंका १२ राशिकोष्ठक लिखके प्रत्येक ग्रहके सामने राशिकोष्ठकके नीचे रूप कलादि बल लिखा है उससे ग्रहका जो इष्ट राशिकोष्ठक होय उसके नीचेका फल लेके राशिकोष्ठकके नीचे ३० अंशकोष्ठक और

६० कलाकोष्ठक लिखा है उससे इहोके जो दशांश और बला होय उसके नीचेके अंशका कलादि और बलाव । विकलादि फल एकत्र करके वह घन किंवा कण राशिफलमें लिखा है उसके प्रमाण लिया जो राशिफल उसमें युक्त करना किंवा कम करना तो उच्चबल होता है परंतु जब यहोकी उच्चनीचराशि धातीहै तब फल लेनेकी जुदी रीति है सो ऐसी कि पृथक् पृथक् इहोका उचरा

रा.	सू.	नं.	मं.	क.	वृ.	शु.	मं.
११	० ५६ ४० घ.	० ३२ ० घ.	० ५२ २० मं.	० ५१ ० मं.	० १८ २० घ.	० ५१ ५० घ.	० १६ ४० घ.
१०	० ३६ ४० घ.	० २२ ० घ.	० ५१ २० मं.	० १५ ० मं.	० ८ २० घ.	० ५१ ० घ.	० २६ ४० मं.
९	० २६ ४० घ.	० ११ ० घ.	० ५० ४० घ.	० २५ ० मं.	० १५ ४० मं.	० ३१ ० घ.	० ३६ ४० मं.
८	० १६ ४० घ.	० १ ० घ.	० ४० ४० घ.	० ३५ ० मं.	० ११ ४० मं.	० २२ ० घ.	० ४६ ४० मं.
७	० ६ ४० घ.	० १ ० मं.	० ३० ४० घ.	० ४५ ० मं.	० २१ ४० मं.	० ११ ० घ.	० ५६ ४० मं.
६	० १०३ २० मं.	० ११ ० मं.	० २० ४० घ.	० ५५ ० मं.	० ३१ ४० मं.	० २ ० घ.	० ६३ २० घ.
५	० १३ २० मं.	० २२ ० मं.	० १० ४० घ.	० ५५ ० घ.	० ४२ ४० मं.	० २७ ० मं.	० ७३ २० घ.
४	० २३ २० मं.	० ३२ ० मं.	० ० ४० घ.	० ६५ ० घ.	० ५२ ४० मं.	० १९ ० मं.	० ८३ २० घ.
३	० ३३ २० मं.	० ४२ ० मं.	० १० ४० मं.	० ७५ ० घ.	० ६० ४० घ.	० २९ ० मं.	० ९३ २० घ.
२	० ४३ २० मं.	० ५२ ० मं.	० १९ २० मं.	० ८५ ० घ.	० ७८ ४० घ.	० ३९ ० मं.	० १०३ २० घ.
१	० ५३ २० मं.	० ६२ ० घ.	० २९ २० मं.	० ९५ ० घ.	० ८८ ४० घ.	० ४९ ० मं.	० ११३ २० घ.
०	० ५५ २० घ.	० ७२ ० घ.	० ३९ २० मं.	० ९५ ० घ.	० ९८ ४० घ.	० ५९ ० मं.	० १२३ २० घ.

अंशफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
५	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

बलफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
५	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

अंशफलमें उक्तोचांश लिखे हैं उतन अंशानुक्रमान्न वह फल अंशांदि धन
 आगे जो अंशादि अधिक आये उतना अंशादिकोंका सारिणामेंका फल लेके वह
 ऊपर कहनेके प्रमाण उक्तराशिफलमें युक्त करके रूप- (१) बलमें कम करना
 जो उच्चबल होता है तैसेही नीचराशिफलमें उक्तोचांश लिखे हैं उतने अंशानु-
 क्रमान्न वह फल आगे जो अंशादि अधिक आये उतना अंशादिकोंका
 सारिणामेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके प्रमाण नीचराशिफलमें कम न करके
 जो फल आये वही उच्चबल जानना ।

उदाहरण—यहां सूर्य ० । १३ । १० । ४२ है इसवास्ते ०० राशिको-
 ष्टके नीचेका सूर्यका फल ० । ५६ । ४० यह लेके अनंतर १३ अंश-
 कोषके नीचेका कलादि फल ४ । २० और कला १ = कोषकके नीचेका फल

३। १२० यह विकलांमें युक्त करके यह राशिफलमें धन लिखा है इसवास्ते ०।५६। ४० यह राशिफलमें युक्त करके ०१। ०१। ३ अब यहां रवि उचराशिका है इसवास्ते ऊपर १ न युक्त करके ०१।३ यह इसको रूप १ में कम करके ०। ५८। ५७ यह सूर्यका उच बल भया इसी प्रमाण चंद्रादि द्वितीयतारिणी गवेश जिस ग्रहका उचबल बनाना होय उस ग्रहमें उसी ग्रहका नीचे कम करना जो ६ राशिसे ज्यादा होय तो १२ राशिमें कम करके जो शेष राशयंक होय उसके नीचेका अंशदिफल लेके उसके नीचे जो अंश कला होय उसका फल लेकर एकत्र करके युक्त करना तो ग्रहोंका उचबल होता है. अंश कला विकलाका फल पूर्वोक्त सारिणोंमेंसे लेना ।

उचराशिफल.

०	१	२	३	४	५	६	रा.
०	०	०	०	०	०	१	
	१०	२०	३०	४०	५०	०	फ.
	०	०	०	०	०	०	

उदाहरण-सूये ०।१३।१०।४२। यह इसमें इसका नीचे ६।१०।०० च.म किया तो ६। ३। १०। ४२ यह ६ से अधिक है इसवास्ते १२ में कम करके ५।२६।४९।१८ है. इसवास्ते ५ राशिकोष्टके नीचेका फल ०।५०।० पहलके अनंतर २६ अंश कोष्टक पूर्वोक्तके नीचेका कलादिफल ८।४० और कला ४८ के नीचे विकलादिफल १६।२० यह एकत्र करके ८।५६ यह राशिफल ०।५०।० इसमें युक्त किया तो ०।५८।५६ यह सूर्यका उचबल भया. इसी रीतिसे चंद्रादिकोंका करना तो स्पष्ट बल होता है। राशिफलमें अंश कला फल सदा युक्त करना ।

उचबलचक्रम्.

स.	व.	मं.	बु.	बु.	शु.	शु.	ग्रहाः
५८	२०	४	२	३८	४९	१७	
५	४७	२१	७	५५	५८	४७	फल

कर्कराशिसप्तवर्णातचक्रम् ।

[illegible]

कन्याराशिमतःपितृचक्रम् ।

कन्या	प्रभु	होरा	दशा.	सप्तम	नवम	दश	विंश
० ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
३ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
४ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
५ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
६ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
७ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
८ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
९ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१० ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
११ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१२ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१३ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१४ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१५ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१६ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१७ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१८ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१९ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२० ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२१ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२२ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२३ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२४ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२५ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२६ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२७ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२८ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२९ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
३० ३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०

(१५६)

केशवीजातकम् ।

इन चवोंमें सप्तवर्षपति मेपादि १२ राशियोंको जुदे जुदे अंशोंके तीन तीन कलाके अंतरसे ६० कोष्टक लिखके उसके नीचे सप्तवर्गके सामने उनके रशमी लिखके उनके स्वगृहके स्पष्टताके वास्ते ग्रहके पास स्वगृहका राशपंक लिखा है इसपरसे सुलभरोतिसे सप्तवर्षपति मालूम होते हैं ।

उदाहरण यहां सूर्य ००।१३।१०।४२ है इसवास्ते मेपराशिका १३ अंश १० कला कोष्टकके नीचेके सप्तवर्षपति आये ।

गृ प हो प	द प म प न प	र प त्रि प
म	सू	च

इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका राश्यादिकसे चक्रपरसे सप्तवर्षपति होने हैं, इसी रीतिसे भावसप्तवर्षपति जानना,

ग्रहसप्तवर्षपतिचक्रम् ।

आश्रयगुणार्थम् ।

ग्र	सूर्य	चंद्र	भाम	बुध	शुक्र	मङ्ग	शनि
स्वगृह	म	स	श	श	सू	स	वृ
११	सू	स्व	च	स्व	सू	स	सू
१२	सू	स्व	श	श	श	मि	म
१३	च	मि	सू	मि	म	मि	म
१४	च	मि	श	श	च	स	च
१५	वृ	मि	वृ	श	म	श	म
१६	वृ	मि	वृ	श	म	श	म

भावसप्तवर्षपतिचक्रम् ।

भावा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वगृह	गृ	म	वृ	ज	ज	उ	म	ज	वृ	च	सू	वृ
होरा	मृ	च	मू	च	सू	च	सू	च	सू	च	मू	च
देखा	ज	वृ	म	श	वृ	च	म	वृ	श	म	च	श
सम	वृ	च	श	वृ	म	म	वृ	श	मू	वृ	श	शु
नव	उ	श	च	म	श	ज	च	म	श	च	म	म
हाद	ज	वृ	म	वृ	वृ	च	च	ज	च	च	च	श
१२	ज	वृ	म	वृ	वृ	च	च	ज	च	च	च	श

सप्तवर्गवलोदाहरण ।

• सूर्यका गृहपति औम समके क्षेत्रमें है इसवास्ते गृहबल अष्टमांश
 • । ७ । ३० होरापति सूर्य समके क्षेत्रमें है इसवास्ते होराबल • अष्टमांश
 • । ७ । ३० द्रष्टाणपति सूर्य समके क्षेत्रमें है इसवास्ते द्रष्टाणबल अष्ट-
 मांश • । ७ । ३० सप्तमांशपति चन्द्र शत्रुक्षेत्रमें है इसवास्ते सप्तमांशबल
 षोडशांश • । ३ । ४५ नवमांशपति चन्द्र शत्रुक्षेत्रमें है इसवास्ते नवमांशबल

अथ ग्रहसप्तवर्गचलचक्रम् ।

सू.	य.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	महा:
मं. ०	श. ०	सू. ०	बु. ०	वृ. ०	शु. ०	श. ०	गुरु
७	२२	७	१	३	२२	३	
मं. ३०	दमि ३०	मं. ३०	दश ५२॥	श. ५५	दमि ३०	श. ५५	
सू. ०	वृ. ०	सू. ०	सू. ०	वृ. ०	शु. ०	सू. ०	होरा
७	३	७	७	३	३	७	
मं. ३०	श. ५५	मं. ३०	मं. ३०	श. ५५	श. ५५	मं. ३०	
सू. ०	श. ०	वृ. ०	मं. ०	वृ. ०	शु. ०	श. ०	देवराण
७	२२	१	७	३	७	७	
मं. ३०	दमि ३०	दश ५२॥	मं. ३०	श. ५५	मं. ३०	मं. ३०	
वृ. ०	सू. ०	शु. ०	श. ०	मं. ०	सू. ०	वृ. ०	महामं.
७	७	७	२२	७	७	७	
श. ५५	मं. ३०	मं. ३०	दश ५२॥	श. ३०	मं. ३०	श. ५५	
मं. ०	श. ०	वृ. ०	श. ०	वृ. ०	शु. ०	श. ०	महामं.
७	२२	३	२२	१	३	२२	महामं.
श. ५५	दमि ३०	श. ५५	दमि ३०	दश ५२॥	श. ५५	दमि ३०	
वृ. ०	वृ. ०	वृ. ०	मं. ०	वृ. ०	वृ. ०	मं. ०	
७	२	७	७	१	१	७	दश ५२॥
श. ५५	श. ५२॥	दश ५२॥	मं. ३०	दश ५२॥	दश ५२॥	मं. ३०	
वृ. ०	वृ. ०	वृ. ०	श. ०	वृ. ०	शु. ०	मं. ०	
७	३	७	२२	३	७	७	महामं.
दश ५२॥	श. ५५	दश ५२॥	दमि ३०	श. ५५	मं. ३०	मं. ३०	
७	२२	३	३१	५५	२२	७	दश ५२॥
३७	२२॥	५२॥	५२॥	५२॥	२२॥	७	दश ५२॥

पोडशांश ०।३।४५ द्वादशांशपति बुध शत्रुक्षेत्रमें है इसवास्ते द्वादशांशबल
 पोडशांश ०।३।४५ त्रिंशांशपति गुरु अधिशत्रु क्षेत्रमें है इसवास्ते त्रिंशांशबल
 ०।१।५२॥ सूर्यके सप्तवर्गके बलका योग ०।३५।३७॥ इसी प्रमाण
 चन्द्रादिकोंका सप्तवर्गबल होता है ॥ ५ ॥

शुक्रेंद्रु समभांशके हि विपमेऽन्ये दद्युरंग्रि बलं
 केन्द्राद्येषु च रूपकार्द्वचरणान्यच्छंति खेटाः क्रमात् ॥
 स्त्रीखेटौ चरमे नराः प्रथमके क्लीबौ च मध्ये तथा
 द्रेष्काणे वितरंति पादमुदितं स्थानारूपधीर्यं त्विदम् ॥६॥

अन्वयः—समभांशके स्थितौ शुक्रेंद्रु हीति निश्चयेनाग्रिं चतुर्थांशं बलं दद्याताम् ।
 अन्ये रविभौमबुधगुरुशनियो विपमभांशे स्थितास्तदाग्रिं बलं दद्युः । भं चांशश्च
 मांशम् । विपमा राशयः १।३।५।७।९।११ शेषाः इति केन्द्रेषु केन्द्रपण-
 फराशोक्तिषु स्थिताः खेटा क्रमाद्वृत्तकार्द्वचरणान्वलानि यच्छंति ददन्ति एतदुक्तं
 भवति केन्द्रे ग्रहे सति रूप १ बलं, पणफरे अर्द्ध ०।३० । बलं, आपोविलमे
 चतुर्थांशं ०।१५ बलं यच्छंति । स्त्रीखेटौ शशिशुक्रौ तृतीयद्रेष्काणे वर्त्तमानौ
 पादं बलं दत्तः । नराः सूर्यमंगलगुरुवः प्रथमद्रेष्काणे पादं बलं वितरंति क्लीबौ
 बुधशनी मध्ये द्रेष्काणे स्थितौ पादं बलं दत्तः इदं यत्तच्च धा बलमुदितं तत्स्था-
 नारूप वार्यं पंचानां योगे स्थानबलं स्यादित्यर्थः ।

अर्थः—शुक्र चंद्र यह समराशिमें निवा समांशमें होय तो और सूर्य, मंगल,
 बुध, गुरु, शनि यह विपम राशिमें व विपमभांशमें होय तो चरण ०।१५।० बल
 देते हैं । ग्रह केन्द्रमें कहिये लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानमें हों तो रूप १
 बल देते हैं । ग्रह पणफरमें कहिये द्वितीय, पंचम, अष्टम, एकादश स्थानमें होंय
 तो अर्थ ०।००।० बल देते हैं । ग्रह आपोविलमें कहिये तृतीय, षष्ठ, नवम,
 द्वादश स्थानमें होंय तो चरण ०।१५।० बल देते हैं । पुरुषग्रह प्रथम द्रेष्का

णमें होंय और नपुंसकग्रह द्वितीय द्रेष्काणमें होंय और सौम्य तृतीय द्रेष्का-
णमें होंय तो चरणवल ०।१५।० देते हैं यह ५ स्थान चलोके योगको
भी स्थान बल पेसा कहते हैं.

युग्मायुग्मवलोदाहरण ।

यहां सूर्य सौम्य और शनि यह विषम राशिमें हैं इसवास्ते इनका चरणवल,
चन्द्र समराशिमें है इसवास्ते चन्द्रका चरण ०।१५।० बल, शुक्र समरा-
शिमें किंवा समनवांशमें नहीं इसवास्ते इसका बल ०।०।० बुध, गुरु
विषम राशिमें किंवा विषमांशमें नहीं इनका बल ०।०।०

युग्मायुग्मवलम् ।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	ग्रह
०	०	०	०	०	०	
१५	१५	१५	०	०	०	बल
०	०	०	०	०	०	

अथ केन्द्रादिवलोदाहरणम् ।

सूर्य चन्द्र केन्द्रमें हैं इसवास्ते इनका रूप बल, सौम्य शुक्र पणफमें हैं
इसवास्ते इनका अर्ध ०।३०।० बुध गुरु शनि यह आपोविलममें हैं
इसवास्ते इनका चरणवल ।

केन्द्रादिवलम् ।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	ग्रह
१	१	०	०	०	०	
०	०	३०	१५	१५	३०	बल
०	०	०	०	०	०	

अथ केन्द्रादिवलोदाहरणम् ।

यहां गुरु प्रथम द्रेष्काणमें है इसवास्ते चरणवल, शुक्र तृतीय द्रेष्काणमें
है इसवास्ते चरणवल, शनि द्वितीय द्रेष्काणमें है इसवास्ते चरणवल सू. मं.

(१६०)

केशवीजातकम् ।

प्रथम द्रेष्काणमें नहीं और बुध द्वितीय-द्रेष्काणमें नहीं और चंद्र तृतीय द्रेष्काणमें नहीं इसवास्ने इनका बल शून्य.०।०।० ॥ ६ ॥

द्रेष्काणमलचक्रम् ।

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	राह	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१५	१५	१५	१५
०	०	०	०	०	०	०	०

स्थानचलयोगचक्रम् ।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	राह	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०
६८	०	४	०	३८	४०	१७	३४३
६६	१०	२१	७	६६	६१	२७	१७३
०	१	०	१	०	०	०	०
३८	०४	३१	३१	२६	६८	०	५६
३७॥	००॥	६२॥	६०॥	१५	५०॥	०	५०॥
०	०	०	०	०	०	०	०
१५	१५	१५	०	०	०	१०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	०	०	०	०	०	०
०	०	३०	१५	१५	३०	१५	१५
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	१६	१५	१५
०	०	०	०	०	०	०	०
२	३	१	१	१	०	०	०
११९	०	०१	०१	३६	५२॥	०	५१
१३॥	१॥	१३॥	६२॥	१०	५०॥	०	५०॥

मन्दसहस्रमिनारकुजाच्च हिवुक शोध्धं विधोर्भागेवान्माध्यं ज्ञाहुरु
तोस्तमत्र रसभात्पुण्यं त्यजेच्चकतः ॥ दिग्धीर्यं रसहृत्वयो समयज्ञ
रूपं सदा स्याद्विद्वद्भिः शङ्कतनोन्नते शङ्किनुवाकीणां परेषां
वदम् ॥ ७ ॥

अन्ययः—शनेः सकाशाद्वयं, सूर्याद्भौमाच्च द्विवृत्तं चतुर्थं, विधोः भार्गवाच्च माध्यं दशमं बुधाद्दुरोः सकाशादस्तं सप्तमं शोध्यमिति सर्वत्र ध्येयं शेषं पट्टा-
स्थधिकं चेत्स्यात्तदा द्वादशराशिभ्यः शोध्यं ततः पट्टहत् पट्टजः सन्
दिग्विं स्यात् । तुशब्दादुच्चबलजागमकारोऽत्रापि बोध्य इति अथेत्यनंतरं
सप्तमजं कालजं बलमुच्यते । विधोः बुधस्य सदा दिनरात्रौ रूपं १ बलं स्यात्
त्रिंशद्भक्तनतोन्नते शशिकुजाकीर्णां परेषां बलं भवतः नतं त्रिंशता भक्तं यष्ट्यं
तच्चन्द्रभौमशनीनां बलं भवेत् उन्नतं त्रिंशद्भक्तं रविगुरुशुक्राणां बलं स्यात् ॥

अर्थः—शनिमेंसे लग्न, सूर्य भौममेंसे चतुर्थ भाव, चन्द्र शुक्रमेंसे दशम
भाव बुध गुरुमेंसे सप्तम भाव यह क्रमसे कम करके शेष ६ राशिके अपेक्षा
अधिक होय तो वह १२ राशिमें कम करके अनंतर जो शेष रहै उसको
उच्चबलमें पूर्वोक्तरीतिप्रमाण ६ से भाग देना तो ग्रहोंका दिग्बल होता है ॥

दिग्बलसारणी प्रवेश ।

ग्रहमेंसे लग्नादि कथित भाव कम करके जो शेष रहै उसको ६ से कम
करना अर्थात् पट्टाहात्प करना अब यहां सारणीमें ६ राशिकोष्टक लिखके
वह कोष्टकके नीचे रूपादिफल उसमेंसे अभीष्ट ग्रहका जो ६ राशिमेंसे राशिकं
होय उसके नीचेका फल लेना राशिकोष्टकके नीचे ३० अंशकोष्टक और
उसके नीचे ६० कलाकोष्टक लिखा है उसमेंसे अभीष्टग्रहका जो अंश और
कला आवे तत्परिमित कोष्टकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विक-
लादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशिफल तिसमें युक्त करना तो
ग्रहोंका दिग्बल होता है ॥

दिग्बलसारणीफलचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७
०	०	०	०	०	०	१	
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	२०
०	०	०	०	०	०	०	

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
८	१०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
६	१७	१८	१०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
२	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

कलाफलचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२

उदाहरण—यहां सूर्य ०।१३।१०।४२ यह इसमेंसे चतुर्थ भाव ९।१२।४०।३४ कम करके शेष ३।०।३०।८ आया अब इसका राशिक ३ है इसवास्ते ३ राशिफल ०।३०।० और अंश ० है इसवास्ते अंशकोशकका फल ०।०।० और कला ३० है इसवास्ते ३० कलाकोशकका फल १०।० यह विकलामें युक्त किया तो ०।३०।१० यह सूर्यका दिग्बल भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका सारणीपरसे दिग्बल करना,

अब कालबल कहते हैं ।

बुधका सर्वदा दिनमें किंवा रात्रिमें रूप १

दिग्बलचक्रम् ।

बल, नतमें ३० से भाग देनेसे चन्द्र भौम और शनि इनका और उन्नतमें ३० से भाग दे तो सूर्य गुरु और शुक्र इनका नतोन्नत बल होता

सू	बु	म	ग	शु	श
०	०	०	०	०	०
३०	२७	२०	६	५२	४२
१८	३४	३०		३०	१४

है अथवा नत द्विगुणित करे तो चंद्र भौम शनि इनका और उन्नत द्विगुण करे तो सूर्य गुरु शुक्र इनका सुगम रीतिसे कलादि बल होता है,

उदाहरण—नत १५।४० इसको ३० से भाग देके ०।३१।२० यह चन्द्र
तौम शनि इनका बल भया उन्नत १४।२० नतोन्नतबलचक्रम् ।

इसको ३० से भाग देके = १।२८।४० यह
सूर्य गुरु शुक इनका बल भया, और बुधका
रूप १ बल ऐसा जानना ॥ ७ ॥

सु	च	म	बु	शु	श
०	०	०	१	०	०
२८	३१	३१	०	२८	३१
३०	२०	२०	०	३०	२०

पक्षबलं त्र्यंशबलं वर्षमासदिनहोराबलम् ।

शुबलेन्ते तिथिहृद्गतैष्यतिथयो वीर्यं सतां भूच्युतं

पापानां द्विगुणं विधोरिदमथाहं ह्यंशकेषु क्रमात् ॥

सौम्यार्काकभुवां निशाः शशिसिताराणां च रूपं सदै-

व्यस्याथाग्निचपाद्गर्भी किल समामासद्यहोरेश्वराः ॥ ८ ॥

अन्वयः—शुक्ले अन्ते कृष्णे गतैष्यतिथयस्तिथिभिः पंचदश १५ तिर्माज्याः
फलं सतां शुभग्रहाणां चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां बलं स्यात् । तदेव बलं भूच्युतं रूपा-
च्युतं पापानां रविभौमशनीनां पापयुतबुधस्य च वीर्यं बलं स्यात् । इदं चन्द्रबलं
द्विगुणं कार्यम् अथ पक्षबलकथनानंतरं त्र्यंशबलमुच्यते अहो दिवसस्य
अंशकेषु क्रमात् बुधसूर्यशनीनां रूपं बलं स्यात् निशो रात्रेह्यंशकेषु क्रमेण
चन्द्रशुक्रभौमानां रूपं १ बलं भवति तद्यथा यदि दिने जन्म तदा दिनमातरय
त्रिभागं कार्यं चेत्प्रथमेशे जन्म तदा बुधस्य रूपबलम्, अन्येषां शून्यं स्यात् ।
यदि द्वितीये जन्म तदा सूर्यस्य रूपं बलम् अन्येषां शून्यं, तृतीये शनेः रूप-
बलम् अन्येषां शून्यं स्यात् । एवं रात्रवपि इज्यस्य गुरोः सदा दिवारात्रौ वा
जन्म स्यात् । तदा रूपं बलं भवति । अथेत्यनंतरम् । अग्निचपाद्वर्षाद्गर्भा
समामासद्यहोरेश्वरौ बलौ स्यात् । एतदुक्तं वर्षास्य बलं पाद ०।१५।०
मासेशस्य ०।३०।० दिनेशस्य ०।४५।० होरेशस्य १।०।० बलम् ।

अर्थ—शुक्ल पक्षे गततिथिको १५ से भाग देना और कृष्ण पक्षे
ऐष्यतिथिको १५ से भाग देना तो शुभग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक) इनका
और यही १ में कम करके पापग्रह है (रवि तौम शनिका) पक्षबल होता है ।

उसमेंसे आया जो चन्द्रबल सौ दूना करना व तात्कालिक सूर्य और चन्द्र इनका अंतर ६ राशिकी अपेक्षा ज्यादा होय तो १२ में कम करना जो शेष रहे उसको उच्चबलमें पूर्वोक्त रीतिके प्रमाण ६ से भाग देना तो शुभ ग्रहोंका और वही ६० मेंसे कम करके पापग्रहोंका पक्षबल होता है । व्यंशबल दिनके प्रथम त्रिभागमें जन्म होय तो बुधका रूप १ बल, द्वितीय त्रिभागमें सूर्यका, तृतीय त्रिभागमें शनिका ऐसाही रात्रिमें प्रथम त्रिभागमें चन्द्रका, द्वितीय त्रिभागमें शुक्रका, तृतीय त्रिभागमें जौमका और सर्वकालमें गुरुका रूप १।०।० जानना, वर्षपतिका चरणबल, मासपतिका अर्धबल, दिनपतिका चरणत्रय बल, होरापतिका रूपबल यह वर्षमास दिनहोरापतिका बल जानना इन चारों बलके योगको कालबल ऐसा कहते हैं ।

वर्षपति बनानेकी रीति ।

“ द्विष्टोऽयं ग्रहलाघवद्युनिचयश्चक्राक्षतैः पदशरैः
पद्मस्रैश्च युतः सवाणतपनः सेषुश्च खांगामिभिः ॥
खाभ्यंशोर्विहृतं फले गुणयमग्रे चक्रनिम्नाक्षरखोपेते
सत्रियुगे नगोर्वरितकेऽस्तोऽर्कात्समामासपौ ॥ ”

अर्थः—अभीष्ट चक्रको ५६ से गुणके उसमें अहर्गण युक्त करना अनंतर उसीमें १२५ युक्त करना ३६० से भाग देना जो भागाकार आवे उसको ३ से गुणके गुणाकारको चक्रके ५ से गुणके उसमें ३ युक्त करके सब अंक एकत्र करके ७ से भाग देके जो शेषांक रहे सो क्रमसे सूर्यादि वर्तमान वर्षाधिप होता है ।

मासपति बनानेकी रीति ।

अभीष्ट चक्रको २६ से गुणके उसमें अहर्गण युक्त करना अनंतर उसीमें ५ युक्त करना ३० से भाग देना जो भागाकार आवे उसको दूना करके उसमें ४ युक्त करके ७ से भाग देके जो शेषांक रहे सो क्रमसे सूर्यादि वर्तमान मासपति होता है ।

दिनपति बनानेकी रीति ।

अपने देशसे दक्षिणोत्तर मध्य रेखाका जो योजन होय उसमें उसका चतुर्थांश कम करके तन्मित फल पूर्व मध्यरेखा होय तो १५ घडीमें कम करना अथवा पश्चिम रेखा होय तो १५ घडीमें युक्त करना अनंतर यह संस्कार युक्त घडी दिनार्थसे जितना पल कमती होय उतना पल सूर्योदयके अनंतर वार प्रवृत्ति होती है । अथवा संस्कृत घडी दिनार्थसे जितना पल अधिक होय उतना पलसे सूर्योदयके पूर्व वार प्रवृत्ति होती है इस प्रकारसे जन्मकालमें जो वार होय सो वारपति जानना ।

होरापति बनानेकी रीति.

वारप्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक जो घडी पल होय उसको दूना करना उसको २ स्थानमें रखना प्रथम स्थानमें ५ से भाग देना शेषको द्वितीय स्थानमें घटाय देना और १ युक्त करना तो वारपतिके क्रमसे अर्थात् १ वचे तो सूर्य २ में शुक्र ३ में बुध ४ में चन्द्र ५ में शनि ६ में गुरु ७ में भौम वह क्रमसे इष्टवार पतिसे गणना करके जो वार आवे उसकी वह गत होरा जानना, अनंतर वर्तमान होराका स्वामी होरापति जानना ।

पक्षवलसारिणीप्रवेश.

तात्कालिक सूर्य और चन्द्र इनका अंतर पङ्जात्य करना अब सारणीमें ६ राशिकोष्ठक लिखके वह कोष्ठकके नीचे रूपादि फल लिखा है उसमेंसे अंतरका जो राशिक होय उसके नीचेका फल लेना राशिकोष्ठकके नीचे ३० अंश कोष्ठक और ६० कलाकोष्ठक लिखा है उसमेंसे अंतरका जो इष्ट अंश और कला आवे उसके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशिफल उसमें युक्त करना तो शुभग्रहोंका पक्षवल होता है और यह रूप १ में कम करे तो पापग्रहोंका पक्षवल होता है इसमेंसे चन्द्रका वल द्विगुणित करना ।

राशिफलचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६
०	१	०	०	०	०	१
०	१०	२०	३०	४०	५०	०
०	०	०	०	०	०	०

अंशफलचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	५०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२	४०	०	०	४०	०	०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

कलाकोष्ठकम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
२०	४०	०	०	४०	०	२०	४०	०	०	४०	०	२०	४०	०

१० १० ११ ११ ११ १२ १२ १२ १३ १३ १३ १४ १४ १४ १५

उदाहरण-सूर्य ०१३१०१४२ चन्द्र ९१५२२३५ इनका अंतर
 ८१२२१११५३ यह ६ से ज्यादा है इसवास्ते १२ मेंसे कम करके ३७।
 ४८।७ यह भया अब राशिकोष्ठक ३ इसका फल ०१३०।० इसको अंशको-
 स्थक ७ इसका फल २।२० और कलाकोष्ठक ४८ इसका फल १६ एकत्र
 करके २।३६ युक्त किया तो ०१३२।३६ यह शुभमहोका पक्षवत् भूता यही

रूपमें कम करके ०।२७।२४ यह पापग्रहोंका पक्षबल और चंद्रका द्विगुणित १।५।१२ जानना।

पक्षबलचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्र.
०	१	०	०	०	०	०	
२७	०५	२७	३२	३२	३२	२७	बल
२४	१२	२४	३६	३६	३६	२४	

दिनरात्रित्रिभागबलोदाहरणम् ।

यहां दिनमान ३२।०१ इसका त्रिभाग १०।४० इस वास्ते दिनके तृतीय त्रिभागमें जन्म इसवास्ते शनिका रूपबल और सुरुका रूपबल जानना और ग्रहोंका शून्यबल जानना।

दिनरात्रित्रिभागबल.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्र.
०	०	०	०	१	०	१	
०	०	०	०	०	०	०	बल
०	०	०	०	०	०	०	

वर्षपतिबलोदाहरणम् ।

चक्र ३३ को ५६ से गुणके १८४८ यह भया इसमें अहर्गण ११७८ युक्त करके ३०२६ यह भया, इसमें १२५ युक्त करके ३१५१ इसको ३६० में भाग देके ८ भया ३ से गुणके २४ भया चक्र ३३ को ५ से गुणके १६५ इसमें ३ युक्त करके १६८ भया पूर्वोक्त अंक २४ युक्त करके १९२ इसको ७ से भाग देके शेषांक ३ इसवास्ते वर्षपति भौम इसका बल ०।१५।० जानना।

मासपतिबलोदाहरणम् ।

चक्र ३३ को २६ से गुणके ८५८ भया इसमें अहर्गण ११७८ युक्त करके २०३६ यह इसमें ५ युक्त करके २०४१ भया इसको ३० से भाग

(१६६८)

। केशवीजातकम् ।

दके ६८ मया इसको दूना करके १३६ यह इसमें ४ युक्त करके १४० इसको ७ से भाग देके शेषांक ० इसवास्ते मासपति शनि इसका बल ०।३०।० है।

दिनपतिबलोदाहरणम् ।

देशांतर योजन ५ इसमें इसीका चतुर्थीश १।१५ कम करके ३।४५ पल यह पश्चिम देशांतर है इसवास्ते १५ घडोंमें युक्त करके १५।३।४५ यह दिनार्थ १६।२१ इससे १ घडी १८ पल कमती है इसवास्ते सूर्योदयके अनंतर १ घडी १८ पलसे चारप्रवृत्ति गई जन्मकाल रविवारको ३२ घडी १ पलपर है इसवास्ते रवि गही दिनपति इसका बल ०।४५।० जानना।

होरापतिबलोदाहरणम् ।

चारप्रवृत्तिसे लेकर इसकालतक ३०।४२ इसको २ से गुणके ६१ घडी २४ पल इसको ५ से भाग देके १२ आये यहां इष्टवारपति रवि इससे गणनामें गत होरापति शनि और वर्तमान होरापति गुरु इसका बल रूप (१) जानना ॥ ८ ॥

वर्षमासदिनहोरापतिचक्रम् ।

सू. दि.	च	म	घ	घ	श	श.	ग्र
दिन	०	६०	०	होरा	०	मास	
०	०	१५	०	१	०	०	बल
६५	०	०	०	०	०	३०	
०	०	०	०	०	०	०	

कालबलयोगचक्रम् ।

मृ	च	म	उ	वृ	ज	श	ग्र
१	१	१	१	१	१	०	
२१	३६	७३	३७	१	१	३७	१८
४	३०	१४४	३६	१६	१६	३८	

इदानीं क्रमप्राप्तचेष्टाबलं विविशुरादावयनबलमाह ।

सदा क्रांतिभागैर्युता ज्ञस्य सिद्धाः शनीन्द्रोर्युतोनाः
क्रमाद्याभ्यसौम्यैः ॥ विलोमं परेषां गजाभ्योधि
४८ भक्ता अवेदायनं वीर्यमर्कस्य द्वाप्तम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—ज्ञस्य बुधस्य दक्षिणैर्वोत्तरैः क्रांतिभागैः सिद्धाश्चतुर्विंशत्यंश-
युताः, शनीन्द्रोर्ध्वतोनाः क्रमात्, याम्यसौम्यैर्याम्यैर्युताः सौम्यैरुनाः, परेषां रवि-
शौमगुरुशुक्राणां विलोमं सौम्यैर्युताः याम्यैरुनाः सिद्धाः २४ कार्या गजा-
म्भोधि ४८ भक्ताः संतः आपन्नं वीर्यं भवेत् । इदमायनबलम् अर्कस्य
द्विगुणितं सद्भवेत् ।

अर्थः—सर्वकाल २४ अंशमें बुधका दक्षिण किंवा उत्तर क्रांतिभाग
युक्त करना २४ अंशमें शनि और चन्द्र इनके दक्षिणक्रांतिभाग युक्त करना
और उत्तरक्रांतिभाग २४ अंशमेंसे कम करना २४ अंशमेंसे रवि, शौम,
गुरु और शुक्र इनका दक्षिणक्रांतिभाग कम करना और उत्तर क्रांति
भाग २४ अंशमें युक्त करना अनंतर सबमें ४८ से भाग देना तो ग्रहोंका
अयन बल होता है, परंतु यह बल सूर्य मात्रका द्विगुणित करना अथवा
क्रांतिभाग संस्कारित २४ अंशमें उसीका चतुर्थांश युक्त करना तो कलादि
अयनबल होगा ।

क्रांति बनानेका श्लोक.

“स्युः खंडानि स्वार्द्धयोम्बरकृताः शैलग्रयोऽव्यग्रय-
स्त्रिंशत्तत्त्वधृती नवारिनिधयस्तेः सायनांशग्रहात् ॥

बाह्वंशाभ्रकु १० भागसंख्यकयुतिः शेषेष्यघातादशा-

साटद्या दिग्बिहता लवादिरपमस्तादिकस्वगोला भवेत् ॥”

अन्वयः—अयनांशयुक्तात्वेदात् ग्रहात् बाह्वंशा भुजभागांस्तेषां दिग्बो

दशमांशः तत्सितखण्डैक्यं कार्यम् । तच्छेषेण घाताद्गुणितादत् एष्यं भोग्यं
खंडं तस्य यो दिग्बो दशमांशः तेन युतं खण्डैक्यं कार्यं ततो दिग्भिर्हृतो दश-
भक्तो लघाद्यः अंशाद्यः स्वदिक् सायनगोलादिक् अपमः क्रांतिः स्यात् ।

अर्थ—ग्रहमें अयनांश युक्त करके उसका पूर्वोक्त रीति करके भुज
करना और उसके अंश करना १० से भाग देना जो भागाकार आवे
तत्परिमित नीचे लिखे अंकमें मिलान करना और भागाकारमें एक युक्त

करके तत्परिमित अंक लेके उसके ऊपरके अंशादि शेषको गुणके उस गुणाकारको १० से भाग देके जो भागाकार आवे उसमें पीछेके अंकरवी मिलान युक्त करना और जो मिलान आवे तिसको १० से भाग देना जो भागाकार आवे सो अंशादि क्रांति जानना जो सायन ग्रह उत्तर गोलमें होय तो उत्तर क्रांति और दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण क्रांति जानना गोल ऐसा कि, मेषसे ६ राशितक सायनग्रह होय तो उत्तर गोल तुलसे ६ राशितक सायन ग्रह होय तो दक्षिण गोल जानना ।

क्रांत्यंकचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	४०	३७	३४	३०	२५	२८	२३	८

क्रांतिसारिणीप्रवेश ।

प्रथम सायन ग्रह करके उसका भुज करके उसका भाग करना अनंतर सारिणीमें अंशकोष्ठक ९० लिखके उसके नीचे अंशादिफल लिखा है और दश दश अंशके अंतरसे अलग अलग ६० कलाविकलाकोष्ठक लिखा है, अब अभीष्ट भुजभागकोष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेके उसको भुजभागके नीचे जो कला विकला हो तत्तत्परिमित कलाविकलाकोष्ठकके नीचेका कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना तो ग्रहोंकी अंगादि क्रांति होती है ।

उदाहरण—सूर्य ००।१३।१०।४२ इसमें अयनांश २५।४४।०३ युक्त करके ०१।५।५४।४५ यह सायन सूर्य इसका भुज किया तो वही रहा ०१।५।५४।४५ इसके अंश ३५।५४।४५ यह हैं इसवास्ते भुजभागकोष्ठक ३५ से नीचेका अंशादि फल १३।२४।०० कला ५४ का कलाविकलाकोष्ठकका कलादि फल १८।२२ विकला ४५ का कलाविकलाकोष्ठकका विकलादि फल १५।१९ यह कलाविकलाकोष्ठकफल एकत्र करके १८।३७

यह पूर्वोक्त अंशफल १३।२४।०० में युक्त किया तो १३।४२।३७ यह सूर्यकी क्रांति भाई इसी प्रमाण सब ग्रहोंकी क्रांति बनाके अब सायन सूर्य उत्तरगोलमें है इस वास्ते उत्तर क्रांति जानना ।

कालिचक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
२३	२०	१०	५	०	४	२३	
४२	५६	१७	३७	२२	७	४५	बलम्
३७	२४	३१	५८	४०	५७	२२	
उत्तर	दक्षिण	उत्तर	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण	उत्तर	उत्तर दक्षिण

क्रातिसारिणी ।

[illegible]

कलःविकलःफलः ।

[illegible]

क्रांतिसारिणी ।

मु. अ	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
अ फ.	ध ० ०	ध २४ ०	ध ४८ ०	द १२ ०	द ३६ ०	द ० ०	द २४ ०	द ४८ ०	उ १२ ०	उ ३६ ०	फ.

कलाविकलाफल !

को	८	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
का	१०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
य. ध	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
की	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. घ															
का															
क. घ.	०	१४	४८	१२	३६	०	१४	४८	१२	३६	०	१४	४८	१२	३६

क्रांतिनारण्यः ।

सु. अ.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
अक्षर	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	
दि	०	०	०	५	५	५	१३	१३	१३	१४	मङ
	०	१०	०	३६	४८	०	१०	०	३६	४८	

कलाविकलाफल ।

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. घ.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. घ.	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०
का.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६

क्रांतिसारिणी ।

मु. अ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
अ. प.	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	क.
	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५५	५५	५५	

कलाविकलाफल ।

का.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४

क. घ.	१२	३२	५२	१४	३४	५५	१६	३६	५६	१७	३७	५७	१८	३८	५८
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. घ.	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९

भाषादाहरणसाहितम् ।

(୨୭୫)

कलाविकलाफल ।

[illegible]

क्रांतिसारिणी ।

[illegible]

कलाविकलाफल ।

क्रो.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. घ.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२
का.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	३०	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
ख. घ.	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५
खो.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
ग. घ.	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
गो.	४०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
घ. घ.	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०

(१७६)

केशवीजातकम् ।

क्रांतिसारिणी ।

मु. सं.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
अ.	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	
फ.	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	फ
	०	१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८	

कलाविकलाफल ।

[illegible]

कलाविकलाफल ।

क्र.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
र. घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मि.	१०	२६	४७	६८	८९	१००	१११	१२२	१३३	१४४	१५५	१६६	१७७	१८८	१९९
म. घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
क्र.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. घ.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घो.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. घ.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१

अयनवलसारिणीप्रवेश.

ग्रहोंके दक्षिणोत्तरक्रांतिसंबंधसे अयनवलसारिणीमें शून्यसे २४ तक २५ क्रांतिभागकोष्टक दो ठिकाने लिखा है. जब सूर्य, मंगल, गुरु, भृगु इनकी उत्तरक्रांति और शनि, चन्द्र इनकी दक्षिणक्रांति और बुधकी दक्षिण किंवा उत्तर क्रांति हो तब प्रथमक्रांतिभागकोष्टकमेंसे अभीष्ट क्रांतिभागकोष्टकके नीचेका रूपादि फलको ले उसको अंशकोष्टकके आगे ६० कलाविकलाकोष्टक लिखा है उसमेंसे क्रांतिभागके नीचे जो कला विकला होय तत्तत्परिमित कलाविकलाकोष्टकके नीचेका ४७ कोष्टकसे कलाका विकलादि और विकलाका प्रतिफलदि और ४८ कोष्टकसे कलाका कलादि वैसाही विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना तो निम्नलिखित ग्रहोंका अयनघल होता है । जब सूर्य, भौम, गुरु, शुक्रकी दक्षिण क्रांति और शनि चन्द्रकी उत्तर क्रांति होय तब द्वितीय क्रांतिभागकोष्टकमेंसे अभीष्टक्रांतिभागकोष्टकके नीचेका रूपादि फल लेना अनंतर आगे ६० कलाविकलाकोष्टक लिखा है उसमेंसे अभीष्ट क्रांतिभागके नीचे जो कला विकला होय तत्तत्परिमित कला विकलाकोष्टकके नीचेका कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके लिखा जो अंशफल उसमेंसे कम करना तो ग्रहोंका अयनवल तैयार होता है. यह अयनवल सूर्यका मात्र दूना करना ।

उदाहरण—सूर्यकी उत्तर क्रांति १३।४२।३७ का अंश १३ है. इसवास्ते यहां प्रथम क्रांतिभागकोटक १३ का फल ० १.४ घटी १५ इसकी क्रांति-भागके नीचेकी कला ४२ विकला ३७ इसका कलाका विकलादि और विकलाका प्रतिकलादि फल एकत्र करके ५३।१६ यह विकलामें युक्त करके ०।४७।८ यह दूना करके १।३४।१६ यह सूर्यका अयनबल भया इसी श्राण सारणीसे चन्द्रादिकोंका अयनबल होता है ॥ ९ ॥

अयनबलचक्रम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	भगवतः	शुक्रः	मङ्गलः	गुरुः	शनिः	ग्रहाः
१	२	३	४	५	६	७	घट
१४	६५	८७	३७	२२	२४	२	घट
१६	१०	८७	१	३६	६०	१८	

इदानीं भौमादीनां चेष्टावलमाह ।

मध्यस्पष्टयुतेर्दलानितचलं चेष्टाख्यकेन्द्रं कुजात्
स्यात्तच्चन्द्रगणाद्भुतं पडधिकं पडहृच्च चेष्टावलं ॥

स्यादेकोत्तररूपमद्रिविहृतं नैसर्गिकं स्याद्बलं

मंदारज्ञसुरज्यशुकशशभृत्तक्षिद्युतीनां क्रमात् ॥ १० ॥

अन्वयः—मध्यस्पष्टयोर्ग्रहयोर्गोर्धनोनितं चलं नाम शीघ्रोच्चं तदा भौमादीनां चेष्टासंज्ञकं केन्द्रं स्यात् तत्केन्द्रं चेत्यडधिकं तदा द्वादशराशिन्यः शुद्धं ततः पडहृच्चेष्टावलं भवति चकारादुच्चबलसाधनवद्भागविधिरत्रापि ज्ञेयः अत्रेदं ध्येयं यदि मध्यस्पष्टयुतौ द्वादशाधिके तदा द्वादशाभिस्तदं न कार्यमिति नैसर्गिकं बलं स्यादित्यस्य पूर्वार्धेन संबंधः एकोत्तररूपमद्रिविहृतं तदा क्रमाच्छनिभौमशुभ-
रुरुशुकचन्द्रसूर्याणां नैसर्गिकं बलं स्यात् तदयथा एकस्मिन् सप्तभक्ते शनैर्नै-
सर्गिकबलं द्वयोः सप्तभक्ते भौमस्य एवं क्रमात्सर्वेषां ज्ञेयम् ॥ १० ॥

भाषाः—मध्यम और स्पष्टग्रहका योगार्द्ध उसी ग्रहके शीघ्रोच्चमें कम करना तो भौमादिग्रहोंका चेष्टाकेन्द्र होता है. यह केन्द्र ६ राशिसे ज्यादा होय तो १२

शीशिमें कम करना अनंतर उच्चबलमें पूर्वरीतिप्रमाण ६ से भाग देना तो चेष्टा-
बल होता है अथवा पञ्चमाल्य देन्द्रका अंशादिक करके इसको ९ से भाग
देना तो सुगम रीतिसे चेष्टाबल होता है यह अयन और चेष्टाबल इनके योगको
चेष्टाबल कहते हैं । अतुक्रमसे १ से ७ तक अंकको ७ से भाग देना तो
क्रमसे शनि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र, सूर्य इनका नैसर्गिक बल होता है ।
अथवा ८ । ३४ । १७ इनको क्रमसे १ से ७ तक अंकसे गुणना तो शनि
भौम इत्यादि ग्रहोंका बलदि नैसर्गिकबल होता है अथवा शनिके बलको
दूना तिगुना चौगुना करते जावे तो वही क्रमसे बल हो जायगा ।

भौमादिग्रहोंका शीघ्रोच्च बनानेकी विधि ।

बुध और शुक्र इनके शीघ्रोच्चकेन्द्रमें मध्यम सूर्य युक्त करनेसे बुध शुक्रका
शीघ्रोच्च होता है और मंगल, बृहस्पति, शनि इनका शीघ्रोच्च मध्यम सूर्य है ।

मध्यमग्रह ।						राशिग्रह ।					
म	बु	बृ	गु	शु	प्र	म	बु	बृ	गु	शु	प्र
५	०	५	०	२		५	११	५	१०	७	
२२	११	१२	११	१६	म	११	२१	८	२६	१३	५८
७	११	१७	११	११		८	२०	१२	२६	२१	
३५	०६	५१	६६	३७		१६	५३	३७	५	५२	
मध्यमग्रहभागः ।						मध्यमग्रहोन्नतचक्रम् ।					
म	बु	बृ	गु	शु	प्र	म	बु	बृ	गु	शु	प्र
१०	१५	१०	११	५		५	६	५	५	३	
३	२	२०	८	०	५	१	१	१०	१९	१५	५०
११	३२	३०	८	१		२२	१६	१५	८	०	
५०	८१	७८	०	२२		६०	२५	१५	०	५३	५
शीघ्रोच्चचक्रम् ।						चेष्टाकेन्द्रचक्रम् ।					
म	बु	बृ	गु	शु	प्र	म	बु	बृ	गु	शु	प्र
०	७	०	७	०		७	१	७	२	१	
११	११	११	०४	११	१	९	१६	०	५	२६	१
११	१२	११	५४	११		३६	५८	५६	५०	११	
५६	१५	५६	७	५६		६	५१	८०	१	१२	

चेष्टावलसारिणी प्रवेश ।

चेष्टाकेन्द्र पङ्क्ताल्प करके सारिणीमें ६ राशिकोष्ठक लिखके उसके नीचे कोष्ठकमें रूपादि फल लिखा है उसमेंसे पङ्क्ताल्प चेष्टाकेन्द्रका जो इष्ट राशयंक होय उसके नीचेका फल लेना अनंतर राशिकोष्ठकके नीचे अंश-कोष्ठक और ६० कलाकोष्ठक लिखा है, उसमेंसे पङ्क्ताल्प केन्द्रके जो इष्टअंश और कला आवे तत्परिमिति कोष्ठकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका दिक्कलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशिफल उसमें युक्त करना तो ग्रहोंका चेष्टावल होता है यह सारिणी प्रवेशसे इष्टकटाध्यापयेंका सूर्यचंद्रका चेष्टावल करनेके वास्ते काम पड़ता है ।

चेष्टाफलसारिणीराशिफल ।

०	१	२	३	४	५	६	०	०
०	०	०	०	०	०	१	०	०
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

अंशफल ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१०	२०	२१	२०	२३	२२	२५	२४	२८	२७	३०	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

टीपः—आगपरेज्यसौरिणां शीघ्रोच्चं स्याद्विवाकरः ॥

कलापिकलाफल ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	०	०	०	३	३	३	४	४	४	५
००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
००	५०	०	५०	५०	०	०	५०	०	२०	०	०	५०	५०	०
०	३२	३	३२	३०	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	११	११	११	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१०
००	४०	०	४०	४०	०	०	४०	०	०	०	०	०	०	०
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८
२०	४०	०	४०	४०	०	०	४०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण-भौमका चेटाकेन्द्र ७।१।३६।६ यह ६ से अधिक है, इस-
वास्ते १२ मेंसे कम करके ४।२०।२३।५४ यह इसका राशयंक ४ है, इस-
वास्ते ४ राशिकोठकला फल ०।४०।० इसका अंश २० इसवास्ते २०
कोठकका फल ६।४० और कला २३ इसवास्ते २३ कलाकोठकका फल
७।४० एकत्र करके ६।४८ यह राशिकालमें युक्त करके ०।४६।४८ यह
भौमका चेटाफल भया, इसही प्रकार बुधादिकोंका करना

चेष्टावलचक्र ।

अयनचेष्टावलचक्र ।

म	बु	बु	यु	श	०	सु	च	म	बु	उ	यु	श
०	०	०	०	०	०	१	०	१	१	१	०	०
४६	४७	४८	४९	५०	०	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
४८	४९	५०	५१	५२	५३	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२

नेसमिद्धवलोदाहरण ।

एकको ७ से भाग देके ०।८।३४ यह शनिका, दोको ७ से भाग देके
०।१७।८ यह भौमका, ३ को ७ से भाग देके ०।२५।४३ यह बुधका,
चारको ७ से भाग देके ०।३४।१७ यह गुरुका, पांचको ७ से भाग देके

यदि पङ्क्ताधिकास्तदा द्वादशराशित्तयः शुद्धाः पङ्क्तात्मा यथास्थित एव ततः पङ्क्त्याः फले दिग्बलं भवेत् अनयोर्योगः कार्यः स तु शुभग्रहद्विचतुर्थांशपाप-ग्रहद्विचतुर्थांशयोरन्तरं धनर्णं पूर्वोक्तवत्कार्यं, बुधपूर्वोद्विष्टयोरैक्यं तृतीयवर्द्धं त्रयाणां योगे स्पष्टं जायबलं स्यात् ।

अर्थः—जब जन्मकालमें २ ग्रहोंका युद्ध होता है कहिये वह ग्रह राशि-भागकलासे सम होते हैं तब ३० ग्रहोंका कलात्मक शर करना अनन्तर वही ग्रहोंका पूर्वोक्त बलका जो ऐक्य उसका अन्तर करके उसको शरके अन्तरसे भाग देना जो फल आवे सो उत्तर दिशामें रहनेवाला जो ग्रह उसके बलमें युक्त करना और दक्षिणदिशामें रहनेवाला जो ग्रह उसके बलमेंसे कम करना यह संस्कार चेष्टाबलका भेद है ।

टीपः—सूर्यसे चंद्रादिकोंका जो समागम उसको अस्त कहना और भौमादि ५ ग्रहोंका परस्पर जो समागम उसको युद्ध कहना ।

शरका आनयन ग्रहलाघवमें कहा है सो ऐसा उसमें प्रथम पातांशादि कहते हैं ।

खाम्बुधयः खयमाः खभुजंगाः खांगमिताः खदश क्रमशः स्युः ॥

पातलवाः कुसुताद्विभृग्वोर्मध्यमचंचलकेन्द्रविह्विताः ॥

कुद्विष्पाविधयुगाश्विनोदलचयश्चेत्पद्मपुष्टं चलं ॥

केन्द्रं चक्रविशुद्धमस्य भद्रिताद्विषयं लवघ्रागतात् ॥

त्रिशूलव्ययुतं कुजात्कुपमलाव्यन्दिद्रिभक्तं क्रमात्

तद्दीना धृतिरिष्विला गुणभुवो गोव्जा इना द्राक्श्रुतिः ॥ १०॥

संख्या	१	२	३	४	५	६
श्रीघ्राद	१	२	३	४	५	६

म.	सु.	बु.	ग.	श.	ग्रहाः
४०	२०	८०	६०	१००	पातांशाः
१	२	४	१	७	मंज्याकाः
१८	२८	१३	१९	१०	श्रीघ्राद कः

शरके लिये शीघ्रकर्णका प्रकार ।

भौमादि जिस ग्रहका कर्ण साधना होय उसका अंतिम शीघ्रकेन्द्र लेके वह ६ राशिकी अपेक्षा अधिक होय तो १२ राशिमें कम करना और वह पञ्चमाल्य केन्द्रके राशिपरिमित कोशकमें लिखा जो शीघ्रांक उसकी मिलान लेना और एकाधिकराशिपरिमित शीघ्रांकमें केन्द्रकी राशि त्याग करके अंशादिकको गुणना और उस गुणाकारको ३० से भाग देना तो फल अंशादि आवेगा उसमें शीघ्रांककी मिलान युक्त करना जो योग आवे उसको क्रमसे कोशकमेंके भाज्यांकसे भाग देना जो फल आवे सो अंशादि जानना वह क्रमसे कोशकमेंके शीघ्रकर्णांकमेंसे कम करना जो शेष रहै सो ग्रहोंका अंशादि शीघ्रकर्ण होता है और जो बुध शुक्रका पातांश कहे हैं उसमें अहर्गणोत्पन्न जो बुध और शुक्रके जो शीघ्रकेन्द्र होय सो ऊपर कहा जो पातांश वसमेंसे कम करके जो शेष अंश रहै सो बुध और शुक्रके पातांश होते हैं ।

भौमादि शर बनानेका प्रकार ।

मंदस्पष्टखगात्स्यपातरहितात्क्रांत्यंशकाः केवला-
त्कर्णांतास्त्रियमाहता अथ गुरोश्चेच्छोचनाताः पुनः ॥
स्वांश्याना असृजोऽहलादिकशरः पातोनादिक स्या-
दसौ विघ्नः स्यात्कलिकादिकः ॥

भाषा:-जिस ग्रहका शर बनाना होय उस ग्रहका पातांश मंदस्पष्ट ग्रहमेंसे कम करके जो शेष रहै सो पातोना ग्रह जया अनंतर पातोनाग्रहको अयनांशा देने बिना उससे क्रांति लाना और उस क्रांतिको २३ से गुण और उस गुणाकारको शीघ्रकर्णसे भाग दे तो अमीष्ट ग्रहका अंशुलादि शर होता है, सो पातोना ग्रह उत्तर गोलमें होय तो उत्तर शर, दक्षिणगोलमें होय तो दक्षिण

शर ऐसा जानना वैसाही गुरुका शर करना होय तो ऊपरकी रीतिसे ले आये जो शर उसको २ से भाग देना तो गुरुका अंगुलादि शर होता है. और शौमका शर करना होय तो ऊपरकी रीतिसे ले आये जो शर उसमेंसे उसीका चतुर्थांश कम करना तो शौमका अंगुलादि शर होता है अनंतर बनाया जो शर उसको ३ से गुण देना तो कलात्मक शर होता है ।

दृढबल ।

यहाँ पर जिन ग्रहकी दृष्टि होवे उनमें शुभग्रहकी दृष्टिका ऐक्य करके उसका चतुर्थांश लेना तो वह धन दृढबल होता है. और पापग्रहके दृष्टिका ऐक्य करके उसका चतुर्थांश लेना तो वह ऋण दृढबल होता है. अनंतर धन दृढबल और ऋण दृढबल इनका अंतर करना तो स्पष्ट दृढबल होता है ।

टिप्पणः—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र यह शुभग्रह और रवि, शौम, शनि यह पापग्रह हैं । बुध पाप ग्रहयुक्त होय तो पाप, शुभग्रह युक्त होय तो शुभ, मिश्रग्रहयुक्त होय तो मिश्र फल जानना ।

उदाहरणः—सूर्यके ऊपर शुभग्रहकी दृष्टिका ऐक्य १।३६।४२ इसका चतुर्थांश ०।२४।१० यह धन दृढबल और सूर्यके ऊपर पापग्रहकी दृष्टिका ऐक्य ०।२९।२१ इसका चतुर्थांश ०।७।२० यह ऋण दृढबल इनका अंतर ०।१६।५० यह धन दृढबल सूर्यका भया इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका करना ।

टिप्पणः—शुभग्रहकी दृष्टिका चतुर्थांश पापग्रहकी दृष्टिके चतुर्थांशमें घट जाय तो ऋण दृढबल अन्यथा धन दृढबल जानना ।

दृढबलचक्राभ्यासम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	शौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
००	०	०	०	०	०	०	
१६	१	१	२	१६	१३	०१	
५०	४७	२६	२०	२	५०	४२	दृढबल
धन	ऋण	ऋण	ऋण	धन	ऋण	धन	

पद्मलैक्यचक्रमिदम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंग.	बुधः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः ८
२ ४९ ३३॥	३ ० ९॥	१ २१ १३॥	१ ४८ ५९॥	१ ३५ १०	२ २९ २०॥	२ २ ४७ स्थानबल १
० ३० १०	० ५७ ३४	० ५० ३२	० ६७ ७	० ४९ ३०	० ४५ १४	० ३८ ४७ दिग्बल २
१ ४१ ४	१ ३६ ३२	१ १३ ४४	१ ३२ ३६	३ १ १६	१ १ १६	२ २८ ४४ कालबल ३
१ ३४ १६	० ५६ १०	१ २९ ४०	१ २१ २१	१ १९ १२	० ४६ ४६	० २९ ३४ वेष्टाबल ४
१ ० ०	० ५१ २६	० १७ ८	० २५ ४३	० ३४ १७	० ४२ ५१	० ८ ३४ निसर्गबल ५
७ ३५ ३॥	७ २१ ५१॥	५ १२ १७॥	५ १४ ४६॥	७ १९ २५	५ ४५ २७॥	५ ४० २६ पाचौका योग
० १६ धन ५०	० १कण ४७	० १कण २६	० २कण २०	० १६घ. २	० १३कण ५०	० २१घन ४५ हयबल
७ ५१ ५३॥	७ २० ४॥	५ १० ५१॥	५ १२ २६॥	७ ३५ २७॥	५ ३१ ३७॥	६ ० ११ पद्मलयोग

भावबल ।

भाषाः—लग्नादि भावोंके स्वामीका जो बल सो लग्नादि भावबल होता है ।
मनुष्यराशिमें मिथुन, कन्या, तुला, धनका पूर्वार्द्ध और कुंभ इनमेंसे सप्तम
भाव कम करना चतुष्पद राशि मेष, वृषभ, सिंह, धनका उत्तरार्द्ध और मकरका
पूर्वार्द्ध इनमेंसे चतुर्थ भाव कम करना कौटाराशि कर्क, वृश्चिकमेंसे तनु भाव

कम करना । जलचर राशि मीन और मकरका पश्चिमाह्न इनमेंसे दशम भाव कम करना अनंतर शेष ६ राशिकी अपेक्षा अधिक होय तो १२ राशिमेंसे कम करके पड़भाल्य शेषसे दिग्बलमें पूर्वोक्त रीतिप्रमाण बल साधन करना तो भाव दिग्बल होताहै । अनंतर यह दिग्बल भावबलमें युक्त करना । भावपर जिन २ ग्रहोंकी दृष्टि होय उसमेंसे शुभग्रहोंके दृष्टिका ऐक्य करना और चतुर्थांश लेना तो वह धनदृग्बल होता है और पापग्रहोंके दृष्टिका ऐक्य करना उसकाभी चतुर्थांश लेना तो वह ऋणदृग्बल होता है । अनंतर धन ऋण दृग्बलका अंतर करना तो स्पष्ट दृग्बल होता है । यह दिग्बल संस्कृत भावबलमें धन होय तो युक्त करना, ऋण होय तो कम करना फिर भावके ऊपरकी बुध गुरुकी दृष्टि युक्त करना तो स्पष्ट भावबल होताहै ।

भावबलोदाहरणम्:—तनुभावस्वामी शुक्र इसका पदलैक्य ५।३१।३७।३० यह तनुभावबल इसी रीतिसे धनादिभावोंका बल जानना । तनुभाव ६।१।४२।२६ यह लग्नराशिमें भनुष्पराशि है । इसवास्ते इसमेंसे सप्तमभाव ०।१।४२।२६ कम करके ६।०।०।० यह ६ से ज्यादा नहीं इसवास्ते ६ इसका फल पूर्वोक्त दिग्बलसारणोपरसे १।०।० यह तनुभावदिग्बल और यह तनुभाव बल ५।११।३७।३० इसमें युक्त करके ६।३१।३७।३० यह दिग्बलसंस्कृत तनुभावबल भया । तनुभावपर शुभग्रहदृष्टियोग १।४३।२ का चतुर्थांश ०।२५।४५ धनदृग्बल और पापग्रहदृष्टि १।३९।१२ योगका चतुर्थांश ०।२४।४८ ऋणदृग्बल इन दोनोंका अंतर ०।०।५७ यह धन स्पष्ट-दृग्बल भया यह दिग्बलसंस्कृत तनुभावबलमें युक्त करके ६।३२।३४।३० यह भया । अब तनुभावपर बुधदृष्टि ०।५०।५० गुरुदृष्टि ०।०।४४ युक्त करके ७।२४।८।३० यह स्पष्टतनुभावपदबल भया इसी रीतिसे धनादिभावोंका स्पष्टफल करना ।

भावबलचक्रम् ।

त.	घ.	स.	सु.	पु.	१.	जा.	मृ.	ध.	क.	आ.	व्य.	भावः
६	६	७	६	६	७	६	६	६	७	७	६	भावस्वाभाविकम्
३१	२०	३६	२	२	३६	२०	३१	२२	२०	६१	१२	
४७	६१	१७	११	११	२०	३१	३७	२६	४	६३	२६	
३०	३०	०	०	०	०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भावदिग्बलचक्रम्
०	१०	३९	०	१९	४०	२९	३०	२०	३२	६०	६०	
०	२०	२०	०	२६	३९	१	२०	३९	१	१९	१९	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
६	६	८	६	६	८	६	६	६	७	८	६	योगः
३१	२१	१४	२	२१	१६	३९	२०	३३	४२	४२	८	
३७	११	७७	१२	३६	६	६२	६७	६	६	१२	४२	
३०	३०	०	०	०	०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भावहावल
०	८	१०	२	२०	९	१४	२६	२१	१६	१	१७	
६७	११	३८	१	२३	३४	६	२	१०	७	२१	२७	
घ.	स.	स.	स.	स.	स.	घ.	घ.	घ.	घ.	त.	घ.	
६	६	८	६	६	८	६	६	६	८	८	६	योगः
३२	२३	४	०	१	६	६३	३६	४४	४	४०	२६	
३४	०	९	१०	१३	३२	६८	६९	१६	१२	६१	९	
३०	३०	०	०	०	०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	बुधदृष्टिः
६०	३४	१९	४	०	०	०	९	३६	३७	९	३८	
६०	६०	६०	२०	०	०	०	४०	२०	६०	४०	४१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गुरुदृष्टिः
०	१७	४६	६१	६	६८	४६	६६	१३	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	स्पष्टभावबलचक्रम्
८	८	७	८	८	७	८	८	८	७	८	८	
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	

जगदीशेन रचिते केशवीग्रंथटिप्पणे ॥

बलाधिकारः पूर्णोऽयं तद्राषार्यप्रकाशकः ॥ ४ ॥

इति बलाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अथेष्टकष्टाऽध्यायः ॥ ५ ॥

इष्टकष्टसाधनार्थरविचन्द्रचेष्टाबलकेन्द्रसाधनम् ।

व्यकेंद्रुस्त्रिभयुक्तसायनरविश्वेष्टाख्यकेन्द्रं तयो-

र्गोक्तेष्टविधौ बले कुरु ततः प्राग्वन्न वीर्याय ते ॥ १२ ॥

अन्वयः—विगतोऽर्को यस्मादिन्द्रोः स चासौ व्यकेंद्रुः त्रिभयुक्तसायनर-
विश्व क्रमेण तयोश्चेष्टाख्यकेन्द्रे भवतः तद्वथा अर्कोनश्चन्द्रश्चन्द्रस्य चेष्टाकेन्द्रं
राशित्रयेणायनांशैश्च युतो रविः सूर्यस्य चेष्टाकेन्द्रं स्यात् ततस्तान्यां केन्द्राभ्यां
प्राग्वद्गौमादिचेष्टाबलसाधनवत् पडधिकं चक्राद्युतं पडहृदित्यादिना रवीदो-
र्बलं कुरु भो गणकेत्यध्याहारः । कस्मिन् विधौ गोकटेष्टविधौ गावो रश्मयः
कष्टं चेष्टं च कटेष्टे कटेष्टयोर्विधिः कटेष्टविधिस्तस्मिन् कटेष्टविधौ अयनयो-
श्चेष्टाबलयोः कटेष्टसाधने उपयोगोऽस्तीत्यर्थः । न वीर्यायेति भावः यतः—
“द्विसंगुणे चायनपक्षवीर्ये चेष्टाबले तिग्मकराब्जयोस्तः” इति ॥

भाषाः—चन्द्रमेते सूर्य कम करना तो चन्द्रका चेष्टाकेन्द्र होता है. और
सायनसूर्यमे ३ राशि युक्त करना तो सूर्यका चेष्टाकेन्द्र होता है अनंतर
इस केन्द्रसे राशि कटेष्टसाधनार्थ उच्चबलमे पूर्वोक्त रीतिप्रमाण चेष्टाबल
बनाना यह चेष्टाबल पूर्वके ऐसा पडबलार्थ नहीं समझना कारण सूर्यका
जो अयनबल वही चेष्टाबल है इसवास्ते दूना करना और चन्द्रका जो
पक्षबल वही चेष्टाबल है इसवास्ते दूना करना ।

उदाहरण—चन्द्र ९ । ५ । २२ । ३५ यह इस्मेसे सूर्य ० । १३ । १० । ४२
यह कम करके ८ । २२ । ११ । ५३ यह चन्द्रका चेष्टाकेन्द्र भया
और ० । १३ । १० । ४२ यह इसको अयनांशा २२ । ४४ । ३ युक्त
करके १ । ५ । ५४ । ४५ यह सायनसूर्य इसको ३ राशि युक्त करके
४ । ५ । ५४ । ४५ यह सूर्यका चेष्टाकेन्द्र अनंतर यह चेष्टाकेन्द्रसे पूर्वोक्तरी-
तिसे पूर्वमे लिखी जो चेष्टाबलसारणी ऊपरसे बनाया सो यह चंद्रचेष्टाबल
० । ३२ । ३६ सूर्यका चेष्टाबल ० । ४१ । ५८ ।

रश्मीष्टकष्टसाधनम् ।

ये चेष्टोच्चबले रसेर्विनिहते सैके निजा रश्मय-
 श्रेष्टातुंगबलाहतेः पदमिदृष्टं स्याद्बलेनैकयोः ॥
 घातान्मूलमिदं हि कष्टमथ तद्रूपं दशायाः फलं
 वीर्यं दृक् पृथगिष्टकष्टगुणिते द्वे चेष्टकष्टाह्वये ॥ १३ ॥

अन्वयः—सूर्यादीनां प्रामाणीते ये चेष्टोच्चबले ते पदमिगुणिते सैके लते
 सति निजा रश्मयः चेष्टाबलाचेष्टारश्मयः, उच्चबलादुच्चरश्मयो भवन्ति इत्यर्थः ।
 चेष्टाबलेनोच्चबलं गुणनीयं गोमूत्रिकागुणनरीत्या, तस्य मूलमिष्टसंज्ञं स्यात्
 चेष्टबलतुंगबलेनैकयोर्घातान्मूलं कष्टसंज्ञं स्यात् दशाफलं तद्रूपं स्यात् अर्था-
 दिष्टकष्टतुल्यफलमिति इष्टेऽधिके सति शुभमधिकं, कष्टेऽधिकेऽशुभमधिकं,
 सान्धे मिथफलं दशायाः स्यात् ग्रहस्य बलं अर्थात्पद्मबलैक्यं स्थानद्वये स्थाप्यं
 तथा ग्रहोपरि या दृश्यस्ता अपि स्थानद्वये ग्रहस्येष्टकष्टेन गुण्यास्तदा क्रमेणैष्ट-
 बलं कष्टबलं, इष्टदृष्टयः कष्टदृष्टयश्च भवन्तीति ॥ १३ ॥

भाषाः—ग्रहोंका चेष्टाबल और उच्चबलको ६ से गुणके गुणाकारमें १
 एक युक्त करना तो ग्रहोंकी उच्चरश्मि और चेष्टारश्मि होती है ग्रहोंका
 चेष्टाबल और उच्चबल इनके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो ग्रहोंका इष्ट
 होता है. एकमेंसे ग्रहोंकी उच्चबल और चेष्टाबल पृथक् पृथक् कम करके
 शेषका जो गुणाकार हो उसका वर्गमूल निकालना तो ग्रहोंका कष्ट होता है.
 इन इष्टकष्टके प्रमाण ग्रहोंका शुभाशुभ दशा फल जानना ग्रहोंका पद्मबलैक्य और
 ग्रहोपरिदृष्टिको पृथक् पृथक् इष्टो और कष्टो गुण देना तो ग्रहोंका इष्टबल
 और कष्टबल और ग्रहोंकी इष्ट दृष्टि और कष्ट दृष्टि होती है ॥ १३ ॥

वर्गमूल निकालनेका प्रकार ।

" अन्त्य यावदिहाद्रव्याकादूर्ध्वतिर्यस्थरेखा ।
 संज्ञा स्थानांककानां च विपमालयसमक्रमात् ॥

त्यक्त्वान्त्याद्विपमात्कृतिं द्विगुणयेन्मूलं समे तद्धृते
 त्यक्त्वा लब्धकृतिं तदाद्यविपमालब्धं द्विनिघ्नं न्यसेत् ॥
 पंक्त्यां पंक्तिहृते समेऽन्त्यविपमात्त्यक्त्वाप्तवर्गं फलं
 पंक्त्यां तद्विगुणं न्यसेदिति सुहुः पंक्तेर्दलं स्यात्पदम् ॥”

अन्वयः—हे गणका ! अंत्याद्विपमात् कृतिं त्यक्त्वा मूलं द्विगुणयेत् समे तद्धृते सति तदाद्यविपमालब्धकृतिं त्यक्त्वा लब्धं द्विनिघ्नं पंक्त्यां न्यसेत् समे पंक्तिहृते सति अंत्यविपमादाप्तवर्गं त्यक्त्वा तत्फलं द्विगुणं पंक्त्यां न्यसेत् इति सुहुः कुर्यात् तदा पंक्तेः दलं पदं स्यात् ।

भाषाः—जिस संख्याका मूल निकालना होय उसके दहने तरफसे विपम समका चिह्न करना जबतक अंककी समाप्ति न होय तबतक करना अंतरका सबसे बाई तरफ जो अंत्य विपम होय उसमें जिस संख्याका वर्ग घटे सो घटाय देना और जिसका वर्ग घटे उस संख्याको मूल कहते हैं उसको दूना करना उसका नाम पंक्ति है, उस करके भाग देना जो विपमके पास सम होय उसमें लब्धि ऐसी लेना कि जिसका वर्ग आगेके विपममें घट जाय तो उस लब्धिका वर्ग आगेके विपममें घटाय देना उसको दूना करके प्रथम जो पंक्ति संज्ञा है उसमें आगे एक स्थानमें घटायके रखना कदाचित् औरभी अंक होय तो उसी पंक्तिसे पुनः पूर्वरीतिसे भाग देना लब्धिका वर्ग आगेके विपममें घटाना लब्धि दूनी पंक्तिमें रखना ऐसा अंक समाप्ति तक करते जाना फिर उस पंक्तिका आधा करना तो मूल होता है ।

सावयव अंकका मूल निकालनेकी रीति ।

“मूलावशेषकं सैकं पष्टिघ्नं विकलान्वितम् ॥

द्वियुक्तेन द्विनिघ्नेन मूलेनाप्तं स्फुटं भवेत् ॥”

अर्थः—जब मूल निःशेष न होय तो शेषमें १ युक्त करके ६० से गुण देना विकला मिला देना तब जो हो उसको आया जो मूल उसमें २ युक्त करके दूना करके भाग देना तो मूलका अवयव होता है यह स्थूल रीति है ।

सूक्ष्म रीति यह है ।

“सैकेन द्विघ्नमूलेन भक्तं मूलावशेषकम् ॥

लब्धं तु तदघः स्थाप्यं मूलं सूक्ष्मतरं भवेत् ॥”

अर्थः—जो मूल आया है उसको दूना करके १ युक्त करके मूलशेषमें भाग देना लब्धिको उस मूलके नीचे रखना तो सूक्ष्म मूलके आसन्न होगा ।

और यह सबसे अच्छी रीति है ।

जिसका मूल लेना होय उसको ६० से गुण देना कला युक्त करना फिर ६० से गुणना उसका मूल लेना उसको ६० से भाग देना तो ठीक मूल होगा यदि ऊपरका अंश भूत्य होय तो नीचेके अंकको ६० से गुणके बिकला युक्त करके मूल लेना उसको ६० से भाग देना तो मूल होता है ।

रश्म्युदाहरण ।

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ इसको ६ से गुणके ४।११।४८ यह भया, इसमें एक युक्त करके ५।११।४८ सूर्यकी चेष्टारश्मि भयी सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ है इसको ६ से गुणके ५।५३।३६ एक १ युक्त करके ६।५३।३६ यह सूर्यकी उच्चरश्मि भयी इसी रीतिसे चंद्रादिकोंकी चेष्टा रश्मि और उच्चरश्मि बनाना ।

चेष्टाबल ।

उच्चबल ।

सु.	च.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	सु.	च.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४१	३२	४६	४८	४९	२१	२१	२८	२०	४	२	४८	४९	१५
५८	३६	४८	२०	४१	२६	२६	३६	४५	२१	७	५५	२८	४७

चेष्टारश्मि ।

उच्चरश्मि ।

सु.	च.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	सु.	च.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.
५	४	०	५	५	३	३	६	३	१	१	४	५	२
११	५	४०	२६	२८	११	७	२३	४	२६	१२	२३	५१	४६
४८	३६	४८	२	६	३६	३६	३६	४२	६	४२	३०	४८	४२

(१९४)

। केसवीजातकम् ।

। इष्टोदाहरणम् ।

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ यह है इसको सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ से गुणके ०।४१।३३ इसका वर्गमूल ०।४१।४३ यह सूर्यका इष्ट भया इसी प्रकारसे चन्द्रादिकोंका इष्ट बनाना ।

चेष्टोच्चयलगुणनचक्रम् ।

इष्टचक्रम् ।

मृ	च	म	बु	बृ	श	सू	च	म	बु	बृ	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	११	३	१	३२	१८	४५	२६	१४	९	४३	३३
१३	१८	२४	३४	१४	१६	४३	३	१५	४२	५८	७

कष्टोदाहरण ।

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ यह एकमें कम करके ०।१८।२ इसको सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ को एकमें कम करके ०।१।४ इससे गुणके ०।०।१९ भया इसका वर्गमूल ०।४।२० यह सूर्यका कष्ट भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका कष्ट साधना ।

एकोनचेष्टोच्चयलगुणनचक्रम् ।

कष्टचक्रम् ।

सू	च	म	बु	बृ	श	सू	च	म	बु	बृ	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१७	१२	१५	३	६	४	२	३७	३०	१४	१९
१९	५४	१५	७	३८	२२	२०	४७	७	७	३०	३

इष्टकष्टबलोदाहरण ।

सूर्यका पङ्कवलैक्य ७।५१।५३।३० को सूर्यका इष्ट ०।४१।४३ से गुणके ६।३१।००।५३ यह सूर्यका इष्टबल, अथवा सूर्यका कष्ट ०।४।२० से सूर्यका पङ्कवलैक्यको १०।४।५२ का कष्टबल भया इसी प्रकारसे चन्द्रादिकोंका कष्ट साधना ।

इष्टचलचक्रम् ।

कष्टचलचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्र.
६	३	१	०	६	३	१		०	३	२	२	१	१	४	
३१	११	१०	२०	३३	३	२७		३३	०	२०	३६	५१	४८	३	
०	३	०	३०	४०	२	१८		४	२७	२९	४८	५८	३	५८	०
५३	५७	६	५१	०	१०	०		५०	८	२६	४२	०	१६	०	

उदाहरण—चंद्रके ऊपर सूर्यकी दृष्टि ० । १८ । ५४ इसको चन्द्रके दृष्टि ० । २६ । ३ यह इसको गुणके ० । ८ । १२ यह चन्द्रके ऊपर सूर्यकी दृष्टिदृष्टि, और चन्द्रका कष्ट ० । ३२ । ४७ यह इससे सूर्यकी दृष्टि ० । १८ । ५४ गुणके ० । १० । १९ यह कष्ट दृष्टिसंज्ञे इसी शीतिसे सर्वग्रहोंपरकी दृष्टि दृष्टि और कष्टदृष्टि करना ॥ १३ ॥

इष्टदृष्टिचक्रम् ।

कष्टदृष्टिचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्र.
०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	
०	८	७	०	३	०	४	सू.	०	१०	१४	०	१	०	१०	
०	१२	२४	०	३८	०	२५		०	१९	२	०	१३	०	१४	
०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	
३४	०	१०	६	२०	६	५	चं.	२	०	१९	१५	७	३	१०	
३	०	२	०	५७	२७	१०		२८	०	३	३२	१	३१	४५	
०	०	०	०	०	३३	०		०	०	०	०	०	०	०	
२३	२	०	८	०	७	०	मं.	३	३	२४	०	१९	०	०	
५९	२८	०	९	०	०	०		१५	७	५७	०	४३	०	४३	
०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	
०	३	२	०	२४	०	११	बु.	०	४	४	०	८	०	२४	
०	२८	२७	०	४२	०	५९		०	२२	३९	०	१७	०	५६	
०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	
३९	२५	०	८	०	२०	४	वृ.	३	३२	०	२६	०	१२	८	
२१	२६	०	३८	०	४०	१		२६	०	३९	०	१२	२२		
०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	
६	०	६	०	३९	०	११	शु.	०	०	४२	०	१३	०	३४	
४३	०	४२	०	२०	०	२५		४६	०	४६	०	२२	०	४७	
०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	
०	२१	१३	७	३४	२४	०	श.	०	२६	२२	११	१४	०	०	
१६	२२	७	५१	३	०	०		२६	३	६	५१	१५	०	०	

सप्तवर्गशुभाशुभसाधनम् ।

स्वोच्चे रूपं त्रिकोणे चरणविरहिते स्वर्क्षगेर्द्धे त्रयोष्ठां-

शाश्चाधीष्टर्क्ष इष्टर्क्षयुजि च चरणः स्यात्सप्तर्क्षेऽष्टमांशः ॥

भूषांशां वैरिगेहेऽध्यरिभयुजि रदांशश्च नीचे खमीशा-

दिष्टं गेहे तदूनैकमसदस्य दलं पदसु कार्यं तदैक्ये ॥ १४ ॥

पंकत्योः सप्तसु कोष्टयोः प्रथमयोरिष्टासदैक्ये कृताऽन्ते

स्थाप्ये भदलादिपदसु च तदर्धे वर्गपानां पृथक् ॥

कृत्वोक्त्या सदसद्युती निजनिजे तन्निम्न इष्टाशुभे

वर्गेऽतस्तत्स्थखगौजसोः सदसतोर्घातात्पदघ्ने स्फुटे ॥ १५ ॥

अन्वयः--स्वोच्चे मूलत्रिकोणे स्वर्क्षादिगते ग्रहे रूपं पादोनं रूपार्द्धमित्यादि ।
गेहे गृहस्थाने ईशात्स्वामिन इष्टं स्यात् । तद्यथा । ग्रहो यस्मिन् गृहे
वर्तते तत्स्वामी यदि स्वयं तदा रूपार्द्धं, बलं, यद्यधिमित्रगृहे तदा
त्रयोष्ठांशां, मित्रगृहे चतुर्थांशः समगृहेऽष्टमांशः, शत्रुगृहे भूषांशः,
अधिशत्रुगृहे दंतांशः, नीचे खं, शून्यम्, एतदूनं रूपार्द्धं गेहे गृहस्था-
नस्थयोरिष्टकोष्टयोर्द्धे होरादिपदसु स्थाप्ये । एतदुक्तम् । सप्तस्थान-
स्थितानां शुभानामैक्यं शुभम् अशुभानामैक्यमशुभं स्यात् ॥ १४ ॥
पंकत्योरिति । इष्टासदैक्ये चतुर्भक्ते पंकत्योः स्थाप्ये एतदुक्तं भवति । प्रागानी-
तमिष्टैक्यं चतुर्भक्तं शुभपंकत्योः स्थाप्यं वष्टैक्यं चतुर्थांशपशुभं पंकौ स्थाप्यं
प्रथमयोगृहकोष्ठयोरित्यर्थः । भदलादिपदसु होरादिपदसु तदर्द्धं गृहस्थापि-
तफलं स्याद्धं स्थाप्यं, वर्गपानां गृहादिसप्तवर्गेशानां पृथक् प्रत्येकं निजनिजे स्वस्वे
सदसद्युती शुभाशुभयोरैक्ये उत्पद्येनेत्यनेन स्वोच्चरूपमित्यादिना स्थापितयोरेवं

शुभाशुभयोरैक्ये कार्ये न चांतरं स्थापितयोरिति कृत्वा तन्निघ्न इष्टशुभे ताभ्यां निघ्ने कार्ये इष्टशुभे षन्त्योः सप्तसु कोष्ठयोः स्थापितफले अनया रीत्या आनीते ये इष्टशुभे वर्गेद्वत्तरन्ध्रस्वर्गौजसोः सदसतोर्धात्वा पदघ्ने स्फुटे स्याताम् । वर्गेद्व वर्गस्वामी, तत्स्थस्वर्गो वर्गस्थग्रहः, ओजसोः बलयोः तयोर्धातपदेन पूर्वफले गुणिते सति स्फुटे स्तः ॥ १५ ॥

भाषाः—गृहेश परमोच्चमें होय तो रूपवल १, त्रिकोणमें होय तो तीन चतुर्थांश ०।४५।०, स्वगृहमें हो तो अर्द्ध ०।३०।०, अधिमिषके गृहमें होय तो तीन अष्टमांश ०।२२।३०, मित्रगृहमें चतुर्थांश ०।३५।०, समके गृहमें अष्टमांश ०।७।३०, शत्रुगृहमें षोडशांश ०।३।४५, अधिशत्रुगृहमें दन्तांश ०।१।५२।३०, परमनीचमें होय तो शून्य० यह गृहस्थानमें शुभ जानना यह शुभ एक १ में हीन करनेसे अशुभ होता है, गृहस्थानमें यह शुभाशुभ होरादि पङ्क्त्योर्स्वामीपरसे गृहस्थानके फल प्रमाणसे जो फल आवे उसका अर्द्ध जानना अनंतर सप्तवर्गोत्पन्न शुभका और अशुभकी ऐक्यता करना।

उच्च मूलत्रिकोण व स्वगृहमेंसे तीनका वा दोका एक स्थानमें संभव होनेमें निर्णय ।

सिंह २० अंशतक सूर्यका त्रिकोण, अनंतर स्वगृह, वृषा ३ अंशतक चन्द्रका उच्च, अनंतर मूलत्रिकोण, मेष १२ अंशतक भौमका त्रिकोण, अनंतर स्वगृह, कन्या १५ अंशतक बुधका उच्च, आगे ५ अंशतक मूल त्रिकोण, आगे स्वगृह, धनु १० अंशतक गुरुका त्रिकोण अनंतर स्वगृह, तुला १५ अंशतक शुकका त्रिकोण अनंतर स्वगृह, कुंभ २० अंशतक शनिका त्रिकोण अनंतर स्वगृह जानना । जब ग्रह उच्च किंवा नीच राशिका उक्तांशमें रहता है ग्रहका परमोच्च किंवा परमनीच जानना ।

भाषाः--दो सात सात कोष्ठकी शुभाशुभ पंक्ति लिखना अनंतर शुभ पंक्तिका प्रथम कहिये गृहकोष्ठकमें ग्रहोंके समवर्गोत्पन्न शुभैक्यका चतुर्थांश लिखना और होरादि ६ कोष्ठकमें इस चतुर्थांशका अर्ध लिखना. और अशुभ पंक्तिके प्रथम कोष्ठकमें ग्रहका समवर्गोत्पन्न अशुभैक्यका चतुर्थांश लिखना और होरादि पट् ६ कोष्ठकमें यह चतुर्थांश अर्ध लिखना अनंतर गृह होरादि समवर्गस्वामीका जुदा जुदा किया जो समवर्गोत्पन्न शुभैक्य उसको क्रमसे इस शुभपंक्तिमें लिखा जो गृहहोरादि समवर्गफल है तिससे अलग अलग गुण देना तो मध्यम शुभ होता है. और गृहहोरादि समवर्गस्वामीका पृथक् पृथक् किया जो समवर्गोत्पन्न अशुभैक्य उसको क्रमसे अशुभपंक्तिमें लिखा जो गृह होरादिसमवर्गफल उससे पृथक् गुण देना तो मध्यम अशुभ होता है ।

अनंतर जिस ग्रहका स्पष्ट शुभ साधन करना हो उस ग्रहके दृढबलको उधी ग्रहके गृहहोरादि समवर्गस्वामीके दृढबलसे पृथक् पृथक् गुणके उनके वर्गमूलसे स्वस्ववर्गस्थ मध्यम शुभको गुणदेना तो ग्रहोंका स्पष्ट शुभ होता है और जिस ग्रहका स्पष्ट अशुभ साधन करना हो उस ग्रहके दृढबलको उसी ग्रहके गृहहोरादि समवर्गस्वामीके दृढबलसे पृथक् पृथक् गुणके उनके वर्गमूलसे स्वस्ववर्गस्थ मध्यम अशुभको गुण देना तो ग्रहोंका स्पष्ट अशुभ होता है ॥ १५ ॥

उदाहरणः--सूर्य मंगलके गृहमें है इसवास्ते गृहस्थामी, जौम सो समके गृहमें है इसवास्ते सूर्यके गृहस्थानमें ०।७।३० शुभ, यह एकमें कम करके ०।५२।३० यह अशुभ, होरास्वामी सूर्य यह समके गृहमें है इसवास्ते सूर्यके होरास्थानमें ०।७।३० शुभ, यह एकमें कम करके ०।५२।३० अशुभ, इनके अर्ध होरास्थानमें ०।३।४५ शुभ और ०।२६।१५ यह अशुभ, द्रेष्काणस्वामी-सूर्य यह समके गृहमें है इसवास्ते सूर्यके द्रेष्काणस्थानमें ०।७।३० शुभ यह एकमें कम करके ०।५२।३० अशुभ, इनके अर्ध

द्वेकाणस्थानमें ०।३।४५ शुभ और ०।२६।१५ अशुभ, सप्तमांशस्वामी चन्द्र यह शत्रुगृहमें है इसवास्ते सूर्यके सप्तमांशस्थानमें ०।३।४५ शुभ यह एकमें कम करके ०।५६।१५ अशुभ इनके अर्ध सप्तमांशस्थानमें ०।१।५२ शुभ, और ०।२८।७ अशुभ नवमांशस्वामी चन्द्र यह शत्रुगृहमें है इसवास्ते सूर्यके नवमांशस्थानमें ०।३।४५ शुभ, यह एकमें कम करके ०।५६।१५ अशुभ इनका अर्ध नवमांशस्थानमें ०।१।५२ शुभ और ०।२८।७ अशुभ द्वादशांशस्वामी बुध शत्रुगृहमें है इसवास्ते सूर्यके द्वादशांशस्थानमें ०।३।४५ शुभ यह एकमें कम करके ०।५६।१५ अशुभ इनका अर्ध द्वादशांशस्थानमें ०।१।५२ शुभ और ०।२८।७ अशुभ त्रिंशांशस्वामी गुरु अधिशत्रुके गृहमें है इसवास्ते सूर्यके त्रिंशांशस्थानमें ०।१।५२ शुभ, यह एकमें कम करके ०।५८।७ अशुभ, इनका अर्ध त्रिंशांशस्थानमें ०।०।५६ शुभ और ०।२९।३ अशुभ सूर्यके सप्तवर्ग शुभका ऐक्य ०।२१।३३॥ और सूर्यके सप्तवर्ग अशुभका ऐक्य ३।३८।२६ यह भया इसी प्रमाणसे चन्द्रादिक ग्रहोंका शुभाशुभ करके उनका ऐक्य करना ।

• टिप्पणः—विंशतिरंशाः सिंहे त्रिकोणमपरे स्वभवनमर्कस्य । उच्चं भाग-
त्रितयं वृष इन्द्रोः स्यात्त्रिकोणमपरेशाः ॥ द्वादश भागा मेपे त्रिकोणमपरे स्वभं
तु भौमस्य । उच्चमथो कन्यायां बुधस्य तुर्गांशकैः सदा चिंत्यम् ॥ परतत्त्रिको-
णजातं पंचभिरंशैस्स्वराशिजं परतः । दशभिर्भागैर्भौमस्य त्रिकोणं ध्रुवपि तत्परं
स्वगृहम् ॥ शुक्रस्य च तिथयोऽंशात्त्रिकोणमपरं स्वभं तुलायां तु । कुंभे त्रिकोण-
स्वगृहे रविजस्य स्वयंथा सिंहे ॥

• टिप्पणः—ग्रह परम उच्चमें किंवा परम नीचमें वा मूलत्रिकोणमें पात होय
तो मित्रादिज फल न लेना, वह उच्च किंवा नीच वा मूलत्रिकोण इसीका
फल लेना ।

सप्तवर्गअशुभचक्रमिदम् ।

ग्रहाः	सू	च	म	रु	शु	शु	श	ग्र.
गृह	० ३२ ३०	० ३७ ३०	० ५२ ३०	० ५८ ७॥	० ५६ १५	० ३७ ३०	० ५६ १५	गृह
होरा	० २६ १५	० २८ ७॥	० २६ १८	० २६ १५	० २८ ७॥	० २८ ७॥	० २६ १५	होरा
द्वेष्माण	० २६ १५	० १८ ४५	० २९ ३॥	० २६ १५	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	द्वेष्मा.
सप्तमांश	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	० १८ ४८	० २६ १५	० २६ १५	० २८ ७॥	सप्त.
नवमांश	० २८ ७॥	० १८ ४५	० २८ ७॥	० १८ ४५	० २९ ३॥	० २८ ७॥	० १८ ४५	नवमां
द्वादशांश	० २८ ७॥	० २९ ३॥	० २९ ३॥	० २६ १५	० २९ ३॥	० २९ ३॥	० २६ १५	द्वाद.
त्रिंशांश	० २९ ३॥	० २८ ७॥	० २२ ३॥	० १८ ४५	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	त्रिंशा.
ऐक्य	३ ३८ ०६	३ ६ ३३	३ ४० १८	३ १३ ७॥	३ ४५ ३३	३ २९ ३३	३ २८ ७॥	ऐक्य

उदाहरण—सूर्यका शुभैक्य ०।२१।३३ इसको ४ से भाग देके ०।५।२३ यह सूर्यके शुभपंचिकके गृहकोष्ठकमें लिखना और इसका अर्ध ०।२।४१ यह शुभपंचिकके होरादि ६ कोष्ठकमें लिखना ।

सूर्यका अशुभैक्य ३।३८।२६ इसको ४ से भाग देके ०।५४।३६ यह सूर्यके अशुभपंचिकके गृहकोष्ठकमें लिखना और इसका अर्ध ०।२७।१८ यह अशुभपंचिकके होरादि ६ कोष्ठकमें लिखना इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका भी जानना ।

शुभपंक्तिचक्रम् ।

अशुभपंक्तिचक्रम् ।

ग्र	सू	च	म	बु	वृ	शु	श	ग्र	सू	च	म	बु	वृ	शु	श
गृ	०	०	०	०	०	०	०	गृ	०	०	०	०	०	०	०
	५	१३	४	११	३	९	७		५	१३	४	११	३	९	७
	२३	२१	२५	४३	४२	३६	५८		३६	३८	४	२७	२५	२४	२
हो	०	०	०	०	०	०	०	हो	०	०	०	०	०	०	०
	२	६	२	५	१	४	३		२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६
	४१	४०	२७	५१	५०	४८	५९		१८	१९	३२	८	७	१२	१
त्रे	०	०	०	०	०	०	०	त्रे	०	०	०	०	०	०	०
	२	६	२	५	१	४	३		२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६
	४१	४०	२७	५१	५०	४८	५९		१८	१९	३०	८	७	१०	१
स	०	०	०	०	०	०	०	स	०	०	०	०	०	०	०
	२	६	२	५	१	४	३		२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६
	४१	४०	२७	५१	५०	४८	५९		१८	१९	३०	८	७	१०	१
म	०	०	०	०	०	०	०	म	०	०	०	०	०	०	०
	२	६	२	५	१	४	३		२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६
	४१	४०	२७	५१	५०	४८	५९		१८	१९	३०	८	७	१०	१
वा	०	०	०	०	०	०	०	वा	०	०	०	०	०	०	०
	२	६	२	५	१	४	३		२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६
	४१	४०	२७	५१	५०	४८	५९		१८	१९	३०	८	७	१०	१
त्रि	०	०	०	०	०	०	०	त्रि	०	०	०	०	०	०	०
	२	६	२	५	१	४	३		२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६
	४१	४०	२७	५१	५०	४८	५९		१८	१९	३२	८	७	१०	१

उदाहरण:-सूर्य मेपका है इसवास्ते गृहेश मंगल है इसका शुभैक्य ०। १९।४१ इसको सूर्यके शुभपंक्तिमेंका गृहफल ०।५।२३ इससे गुणके ०।१। ४६ यह सूर्यका गृहमध्यमशुभ, गृहेश मंगल इसका अशुभैक्य ३।४०।१८ इसको सूर्यके अशुभपंक्तिमेंका गृहफल ०।५।४।३६ से गुणके ३।२०।२८ यह सूर्यका गृहमध्यम अशुभ, इसी रीतिसे होरादिकोंका मध्यम शुभाशुभ करना और चन्द्रादिकोंका भी गृहादि मध्यम शुभाशुभ करना ।

मध्यमशुभचक्रम् ।

मध्यमाशुभचक्रम् ।

ग्र.	सू.	च.	म.	वृ.	तृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	च.	म.	वृ.	तृ.	शु.	श.
शु.	०	०	०	०	०	०	१	शु.	३	३	३	३	३	३	२
	१	७	१	२	२	६	६		१०	९	२०	१	१	९५	१७
	५६	६	५६	५६	५६	६	१७		३८	२३	२८	४	४	५८	२८
शु.	०	०	०	०	०	०	०	शु.	१	१	१	१	१	१	१
	०	६	०	२	१	४	१		५०	१७	५०	२७	२७	१८	३५
	२८	५६	५६	६	५०	१६	२६		१३	३०	१४	२२	२६	४३	५३
२	०	०	०	०	०	०	०	२	१	१	१	१	१	१	१
	०	३	०	१	१	३	२		३९	३८	४३	२८	३०	१४	२७
	२८	३२	३७	५५	७७	४	३३		२३	४१	१०	३५	३०	३०	२३
म.	०	०	०	०	०	०	०	म.	१	१	१	१	१	१	१
	०	२	१	३	०	१	३		२४	२४	३०	१३	४३	३१	२३
	२३	५४	३८	३७	३७	४४	७		५३	५३	२२	४२	१५	५५	४४
म.	०	०	०	०	०	०	०	म.	१	१	१	१	१	१	१
	०	३	२	३	०	३	२		२४	२०	२५	२३	४२	२१	३०
	२३	५५	११	३८	२८	४५	७		५३	५२	३६	४२	२६	६	१४
सा.	०	०	०	०	०	०	०	सा.	१	१	१	१	१	१	१
	०	१	०	१	०	१	१		२७	०	४३	५८	३७	३४	३४
	६	४०	३७	५५	२८	१२	१८		५२	२६	१५	३७	२६	३०	३१
मि.	०	०	०	०	०	०	०	मि.	१	१	१	१	१	१	१
	०	५	०	३	१	३	१		४२	१२	५३	२३	३०	२४	३५
	१८	१२	३७	७	२७	४	१८		२५	३१	४०	३०	३०	३०	३१

सूर्यका स्पष्ट शुभ साधन करना इसवास्ते सूर्यका इष्टवल ६।३१।०।५३
 इसको सूर्य मेपका है इसवास्ते गृहेश भौमका इष्टवल १।१४।० इससे एणके
 ८।२।१६ इसका वर्गमूल २।५०।६ इसको सूर्यका मध्यम गृहशुभ ०।१।
 ४६ से एणके ०।५।० यह सूर्यका स्पष्ट गृहशुभ भया इसी रीतिसे सूर्यके
 होरादिकोंका स्पष्ट शुभ और सूर्यका गृहादि स्पष्ट अशुभ और चंद्रादिकोंका
 स्पष्ट शुभ और अशुभ करना ॥ १४ ॥ १५ ॥

वर्गशुद्धेशेष्टवलगुणनचक्रम् । वर्गशुद्धेशेष्टवलगुणनचक्रम् ।

ग ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥															
स	१४	३०	३७	१८	०	२१	६०		२२	४२	९	१२	६०	३६	२०
	२०	२०	३	१	६	१९	१		२	२	४	१०	४	१	१०
	४६	४६	४६	३८	६१	६०	३८	३	१६	१६	१०	३७	३३	१	३७
न	१०	१०	४४	४६	३७	४२	८१		३६	३६	६०	४२	९	३६	४२
	०	६	३	१	३०	०	३		५	१६	९	१०	३	४	१६
	४६	१३	२६	३८	६०	३४	४९	३	१६	१७	३०	३७	२८	४२	३९
वा.	१०	३०	३९	४६	२९	६	१९		३३	४२	६३	४०	२६	२८	०
	५	१७	६	१	३०	१६	०		१	७	४	६	३	३	९
	२९	४२	५१	२	५६	५८	२४	वा.	१९	२८	२२	७	२८	२१	३९
प्र.	१८	४८	३७	१८	२९	७	३०		७	४२	९	१२	५६	३८	१३
	३६	२	६	१	४	१	२		१	१७	४	१०	४	२	९
	१६	४०	२१	३८	४१	१८	२४	प्र.	३	२८	२०	३७	५०	१४	३९
	२	२२	३७	३६	०	२१	६०		३६	३०	९	४२	६०	३६	१३

वर्गेशगृहेशोष्ठवलगुण-
नपदचक्रम् ।

वर्गेशगृहेशोष्ठवल-
गुणनपदचक्रम् ।

प्र	सु	च	म	वु	वृ	शु	श	प्र	सु	च	म	वु	वृ	शु	श
गृ	२	२	२	२	२	२	१	गृ	१	४	१	२	२	२	३
	६०	२९	६०	९	९	२६	१६		११	२२	११	१२	१२	१०	१६
	६	४२	६	६०	६०	३२	०८		११	२२	११	३१	३१	२१	४०
हो	६	३	२	२	४	३	३	हो	०	४	१	१	२	२	१
	३१	११	६०	२०	१२	७	३७		३७	०	९	१३	४७	४१	३१
	१	६	६	३२	०८	१	९		६	३७	११	८	६	११	११
प्र.	६	२	२	१	२	३	०	प्र.	०	४	२	०	२	२	२
	३१	२९	३७	१	९	३	२६		३७	२	६	२८	१२	६०	४०
	१	४२	९	९	६०	३	३२		६	१२	२६	२७	३२	२१	२१
स	४	४	१	१	२	४	१	स	१	१	२	३	२	१	३
	३७	३३	१६	१६	३७	२७	१६		३०	३०	३	१६	६	०	१६
	१९	१९	२०	६८	९	३०	६८		३७	३७	२२	४०	२०	४१	४०
न	४	०	१	१	६	१	१	न	१	४	३	३	१	०	०
	३३	२९	६८	१६	३३	६६	६७		३०	२	३	१६	३१	१०	६
	१९	४०	६४	६८	४६	९	१८		३७	१०	४८	४०	६७	११	६१
श	२	४	२	१	६	४	१	श	१	२	२	२	१	१	३
	२०	१०	३७	१	३३	७	३३		१३	४४	६	२८	६१	४१	६
	३१	०८	९	९	४६	९	१०		८	६	२६	२७	६७	६८	८
अ	६	१	२	१	२	३	१	अ	१	३	२	३	२	२	३
	१६	२८	३७	१६	९	३३	३३		३३	१४	६	१६	१२	४०	४०
	१६	१४	९	६८	६०	३	३३		११	११	२०	४०	३१	२१	४०

स्पष्टशुभचक्रम् ।

स्पष्टशुभचक्रम् ।

प्र.	सू.	च.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.	प्र.	सू.	च.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.
गृ.	०	०	०	०	०	०	०	गृ.	३	१२	३	६	६	७	९
	६	१७	६	६	६	१२	७		३१	४४	६१	३९	३९	६३	६
	०	४०	०	२१	२१	२७	५०		९	४८	९	२४	२४	१६	७
हो.	०	०	०	०	०	०	०	हो.	०	४	१	१	३	३	२
	६	१८	३	४	७	१३	५		६६	५०	५५	४७	५९	३०	२१
	१८	५४	३१	५५	१	१८	७		२७	३३	३४	६	६	३४	५७
प्रे.	०	०	०	०	०	०	०	प्रे.	०	६	३	३	३	३	३
	६	६	३१	१	३	९	६		६६	२२	३५	३९	१६	४६	५६
	१८	४२	३७	५७	८	२१	१३		२७	१९	४९	१६	५३	१३	२५
स.	०	०	०	०	०	०	०	स.	२	२	३	४	३	१	४
	१०	१०	३	३	१	७	४		८	८	९	३२	३५	३२	३३
	५१	२६	२	५८	३८	४४	०		२३	१७	२४	५८	४९	४७	४
न.	०	०	०	०	०	०	०	न.	०	५	४	४	३	०	५
	१०	८	४	३	२	६	४		८	३६	२९	३७	१६	५५	५
	५१	४९	१९	५८	३६	१	८		१२	२६	१३	५८	४३	५८	२९
हा.	०	०	०	०	०	०	०	हा.	१	३	३	३	३	२	४
	४	७	१	१	२	४	२		४७	२९	३५	३९	१६	५३	५४
	५८	१	३७	३७	३६	२६	१		६	६	४९	१६	४३	१०	४७
त्रि.	०	०	०	०	०	०	०	त्रि.	३	४	३	४	३	४	४
	४	८	१	३	३	९	२		१३	२	३५	३७	१६	४६	५६
	१	३१	३७	५८	८	२१	१		३	५३	४९	५८	२३	१८	५३
उ.	३	१	८	०	०	१	०	उ.	१६	३९	२४	२९	५८	२६	२९
	४८	१८	१९	२४	५६	३	३१		०	१३	६	०६	२७	१८	५६
	१८	४	५	५	१५	८	४४		३६	५०	१८	२१	१	२३	०

जगदीशेन रचिते केशवीयंघटिप्पणे ॥

इएकएपापिकारोऽयं पूर्णो भूतप्राकाशकः ॥ ५ ॥

इतीएकएपायायः पञ्चमः ॥ ५ ॥

अथायुर्दायाध्यायः ॥ ६ ॥

ग्रहोंका सर्व शुभाशुभ फल दशमें ही होता है और दशाविभाग आयुर्दा-
या विना मालूम होता नहीं, इसवास्ते आयुर्दायाध्याय आरंभ करते हैं
आयुर्दाय दो प्रकारका है ग्रहयोगज और गणितागत, उसमें ग्रहयोगज-
आयुर्दाय, परमायुर्दाय और अमितायुर्दाय ऐसा तीन प्रकारका है । गणि-
त अंशोद्भव, पिण्डज, नैसर्गिक और जीवशर्मोदित ऐसा चार प्रकारका है ।
प्रथम योगजायुर्दायमेंसे अमितायुर्दायका उदाहरण कहते हैं ।

कर्कोद्गीर्ज्ययुतोदये बुधसितौ केन्द्रे व्यरीशेतै-

रायुर्विद्वचमितं हि योगजमिवान्यत्रोच्यतेथोन्मितम् ।

अन्वयः—चन्द्रेज्ययुक्ते कर्किलग्रे यदि बुधशुक्रौ केन्द्रे एकत्र वा पृथक्
नाम् इतैः सूर्यसौममन्दैरुपरीशस्थानेषु तृतीयपदैकादशस्थादेश्विहारमिन्न
अमितमायुर्विद्धि जानीहि अन्यत्र ग्रंथे योगजमायुर्विद्धि । अथास्मिन् ग्रंथे
तागतोन्मितमायुरुच्यते ॥

भाषाः—कर्क लग्नमें जन्म होय उसमें चन्द्र और गुरु युक्त होयें, बुध और
केन्द्रमें होय और इतर ग्रह (रवि, मंगल, शनि) ३।६।११ स्थानमें
इस प्रमाण सातों ग्रहोंका योग होय तो अमित आयुष्य जानना इस
से योगजायुर्दायके भेद जातकशास्त्रमें कहे हैं यहाँ जातकपद्धतिमें
तायुर्दाय मात्र कहा है ।

अंशायुःसाधनार्थचेष्टागुणक्रोच्चगुणकस्फुटगुणकसाधनम् ।

अपल्पाश्चेत्किरणाः सरूपाकिरणाग्रिश्चेत्रयोर्द्धा

विभू गोर्द्धे चैष्टिकतुंगसंभवगुणौ तद्वातमूलं स्फुटः ॥ १६ ॥

अन्वयः—यदि पूर्वोक्ताः चेष्टारश्मयः अक्षरश्मयश्चपल्पाश्चेत्तदा सैकचतुर्थीशः
पैः, चेष्टयोर्द्धास्तदा विभूः एकरहितार्द्धे कार्यं तदा चेष्टातुंगसंनको गुणकौ
तस्य मूलं स्फुटो गुणः स्यात् ॥ १६ ॥

सु	च	म	बु	वृ	शु	श
३	०	१	०	१	२	३
५६	४०	११	४१	५४	३०	१३
५०	३३	४०	१७	१८	०	३३

कर्मयोग्यगुणकोदाहरण ।

सूर्यका आश्रय गुणक २।५६।४ और स्फुटगुणक २।२९।१
गुणाकार ७।१९।१९ इसका वर्गमूल २।४२।२१ यह सूर्यका कर्मयोग्य
भया इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंका कर्मयोग्य गुणक करना ।

कर्मयोग्यगुणकचक्रम् ।

सु	च	म	बु	वृ	शु	श	ग्र
२	०	१	०	२	२	१	—
४०	५६	११	५०	२	२	४७	०
२१	१६	३७	०५	१८	३	५३	—

आयुर्भागोदाहरण ।

सूर्य ०।१३।१०।४२ इसके अंश १३।१०।४२ इसको ४० व
देके शेष १३।१०।४२ यह सूर्यका आयुर्भाग भया इसी रीतिसे चंद्रा
आयुर्भाग करना तथा लग्नकाभी ॥ १८ ॥

आयुर्भागचक्रम् ।

हानिसंस्कृतायुर्भागचक्रम् ।

सु	च	म	बु	वृ	शु	श	मृ	च	म	बु	वृ	शु	श	ल
१०	३६	५	३१	२०	६	२४	१३	२६	११	३१	३८	६	३३	२९
५६	२०	२६	२०	१	५६	४०	१०	५२	४	४	१०	५६	२१	४२
३०	३६	३४	५३	५	४	४६	२०	३५	१६	२३	३७	४	४५	२६

चक्रपाताद्धदानिः ।

पक्षात्पे सति खेचरोन लदयेऽस्यांशोद्धतेः स्वाग्निभि-
स्त्वकाले सति स्वाग्निभाजितल्वैः सौम्योनिते त्वर्धितैः

ऊना भूर्युणएकमे द्विबहुषु त्वेकस्य बहोजसः

कार्यास्तद्वणिताः स्वदायजलवाचक्रार्द्धहानिस्त्वियम् ॥ १९ ॥

अन्वयः—ग्रहोद्देश्ये पट्टमाल्ये सति, अस्यांशोद्धतैः स्वाग्निभिः खेचरोन
एकाल्ये सति अस्यांशाः स्वाग्निभिर्नाजितलवैरुना भूरेको गुणः स्यात्
गुणकेन गुणिता स्वदायजलवा आयुर्भाग इयं चक्रार्द्धहानिर्भवेत् यद्येकमे
बहुषु तदा बहोजस एकस्य ग्रहस्येयं चक्रार्द्धहानिः कार्या बलसाम्ये
नैकबलमपि ध्येयं सौम्योनिवैस्त्वर्थितैरित्यपि ध्येयम् ॥ १९ ॥

भाषाः—लग्नमेंसे ग्रह कम करके बाकी ६ राशिसे कमती रहतेही चक्रार्द्ध-
हानी होती है, अनंतर पट्टमाल्य ग्रहोन्नि लग्नकी पलसे ३० अंशकी पलको
देना जो भागाकार आवे सो एकमें कम करना तो गुण होता है परंतु
निज लग्न एकसे कमती होय तो ग्रहोन्नि लग्नके अंशको ३० अंशसे भाग
जो भागाकार आवे सो एकमें कम करना तो गुण होता है परंतु लग्नमेंसे
ग्रह कम करके पूर्वोक्त रीतिसे भाग देके जो भागाकार आवे उसका अर्ध
मेंसे कम करना तो गुणक होता है एक राशिमें दो किंवा दोसे अधिक
होय उसमें जो ग्रह बलिष्ठ होय उसका मात्र गुण करना अनंतर इस गुणको
कीय आयुर्भागको गुणना कहिये रविके गुणको रविके आयुर्भागको
गुणा इसी प्रमाण यहां गुणकरके चक्रार्द्धहानि कथित किया है ॥ १९ ॥

उदाहरणम्—यहां रवि, भौम, गुरु, शनि इन्होंका चक्रार्द्धहानि संभव
इसवास्ते लग्न ६।१।४२।२६ यह इसमें सूर्य ०।१३।१०।४२ कम
के ५।२६।३१।४४ इसकी पल ६३५५०४ इसमें ३० अंशका १०।
०० इसमें भाग दिया तो ०।१०।११ यह एकमें कम करके ०।४९।४९
सूर्यका गुणक, इससे सूर्यका आयुर्भाग १३।१०।४२ यह गुणके १०।
६।३० यह सूर्यका हानि संरुलन आयुर्भाग मया इसी प्रमाणसे भौमका
गुणक ०।२९।१९ गुरुका ०।३२।२६, शनिका ०।४४।३२ इन गुणकोंसे
उनके आयुर्भागको गुणा तो भौमका ५।२४।३४, गुरुका २०।१।५,

शनिका २४।४५।४४, यह हानिसंस्कृत इनोका आयुर्भाग गया इसी
णसे जिसका संभव होय उसका आयुर्भाग करना यहां जो ३० अंशकी
१०८००० का भाग दिया है यह पल सिद्ध है ॥ १९ ॥

वर्षादयंशायुर्दायानयनमाह ।

दायांशोत्थकलाः स्वयोग्यगुणकम्नाः खाभनेत्रोद्धृता

अंशायुर्द्युसदां समादि तु तनोर्दायांशकाह्याहताः ॥

दिग्भक्ता हि समादि चेतु बलवल्लभं तदा लग्नभे-

स्तुल्याब्दैः सहितं द्विनिघ्नशरत्तद्भागादितो मासयुक् ॥ २० ॥

अन्वयः—चक्रार्धहानिकृतानां दायांशानां कलाः कार्याः स्वयोग्यगुण
गुण्या द्विशतया भक्ता फलं वर्षाद्यमंशायुर्भवति । एतदुक्तं भवति दायांशका
शतद्वयेन भक्ते फलं वर्षं, शेषमंशाद्यं द्वादशभिः संगुण्य तेनैव हरेण भक्ते
मासः एवं त्रिंशता गुणिते भक्ते दिनानि पष्ठ्या गुणिते भक्ते धृत्चः पुनर्गुण्य
गुणिते हरेण भक्ते फलं पलानि । लग्नस्य दायांशास्त्रिभि ३ गुण्या ७
दशभिर्भक्ते वर्षादि लग्नायुर्भवेत् यदि बलवल्लभं षडधिकबलं तदा लग्नराशि
त्यैर्वर्षयुक्तं कार्यम् अपि तु लग्नस्य भागाद्यं द्विगुणं तत्पंचभक्ते सति मास
भवति तद्युक्तं तदा लग्नायुः स्पष्टं स्यात् अधिकबलज्ञानं तु अल्पे हीनबल इत्य
दिना ॥ २० ॥

भाषाः—पूर्वानीत केवल और हानिसंस्कृत आयुर्भागकी कला क
उसको स्वकर्मयोग्यगुणकसे गुणके जो गुणाकार आवे उसको २०० से
करके जो भागाकार आवे सो ग्रहोंकी वर्षादि अंशायु होता है लग्नके अ
र्भागको ३ से गुणके गुणाकारको १० से भाग देके जो भागाकार आवे
लग्नका वर्षादि अंशायु होता है और जो लग्नबलवत् कहिये ६ तककी अंश
अधिकबल होय तो लग्नराशितुल्य वर्ष पूर्वानीत लग्नायुमें युक्त करके जो
लग्नके भागादिकोंको २ से गुणके ५ से भागके मासादि फल युक्त क
तो लग्नायु होता है ॥ २० ॥

सुरादिग्रहाः ।						चक्रम् ।						
सू.	र.	म.	व.	शु.	श.	म.	सू.	र.	म.	व.	शु.	श.
०	१	२	३	४	५		०	१	२	३	४	५
१०	११	१२	१३	१४	१५		१०	११	१२	१३	१४	१५
२०	२१	२२	२३	२४	२५		२०	२१	२२	२३	२४	२५
३०	३१	३२	३३	३४	३५		३०	३१	३२	३३	३४	३५

उच्च कम करके ।						पदपत्ता १२ राशिम कम करके ।						
सू.	र.	म.	व.	शु.	श.	म.	सू.	र.	म.	व.	शु.	श.
०	१	२	३	४	५		११	१२	१३	१४	१५	१६
१०	११	१२	१३	१४	१५		२१	२२	२३	२४	२५	२६
२०	२१	२२	२३	२४	२५		३१	३२	३३	३४	३५	३६
३०	३१	३२	३३	३४	३५		४१	४२	४३	४४	४५	४६

विंशत्यायुर्भागचक्रम् ।							
म.	सू.	व.	म.	व.	शु.	श.	श.
पि.	३५६	२५२	१९३	१८६	२९६	३२३	२३३
भा.	४९	३३	२४	२०	४७	५६	२१
भा.	१८	३२	१६	५३	३३	४	४९
चक्रार्द्धहानिमंस्तरविंशत्यायुर्भागचक्रम् ।							
म.	सू.	व.	म.	व.	शु.	श.	श.
पि.	२९६	२४२	१४	१८६	१५५	३२९	१७३
भा.	१५	२२	६०	२०	२९	५६	१२
भा.	४०	३२	१२-	५३	५	४	२४

यहां कोई ग्रह अस्तादि नहीं है और शत्रुराशिकां भी नहीं इस वास्ते संस्कार नहीं गया केवल चक्रार्द्धहानिका संस्कार है उसका उदाहरण कहते हैं।

सूर्यका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।४९।४९ इससे सूर्यके आयुर्ग ३५६
०९।१८ इसको गुणके २९६।१५।४० यह सूर्यका स्पष्ट आयुर्भाग भया ।

भौमका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।२९।१९ इससे भौमके आयुंश १९३ ।

४।१६ इसको गुणके ९४।२०।१२ यह भौमका आयुंश जया ।

गुरुका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।३१।२६ इससे गुरुके आयुंश २९६ ।

४७।२३ इसको गुणके १५५।२९।५ यह गुरुका स्पष्ट आयुर्भाग जया ।

शनिका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।४४।३२ इससे शनिके आयुंश २३३।

२९।४५ इसको गुणके १७३।१२।२४ यह शनिका स्पष्ट आयुर्भाग जया बाकी ग्रहोंका पूर्वोक्त ही आयुर्भाग लेना ॥ २१ ॥

लग्ने पापग्रहे सति विशेषसंस्कारः ।

दायांशा द्युसदां पृथक्त्तनुलवादिघ्नाः खपट्पुद्गता

आस्यानास्तनुगे खले च यदि सट्टेर्धयाथोपरे ॥

निघ्नोद्योदयभावजेन तनुगोत्रो चेद्वलिष्ठस्य तव

साम्ये पुष्टफलेन नेति तनुपेऽस्मीन्नांशजेऽसौ क्रिया ॥ २२ ॥

अन्वयः—लग्ने पापे सति चक्रार्द्धहानिगुणिता ग्रहाणां दायांशाः पृथक् स्थान्याः, लग्नस्य राशिं विहाय अंशादितिगुण्णा पट्टयधिकशतत्रयेण भाज्याः आस्या लब्धफलेमांशादिना पृथक्स्था हीनाः कार्याः । पापग्रहास्तु रावितौमश-नयः सौम्येक्षिते त्वर्धया, शुभग्रहदृष्टे लग्नस्थकूरस्तगे तदा लब्धफलस्यार्थं पात-येनायुर्विडादीत्यर्थः । अथापरेपां मतम् निघ्नोद्योदयभावजेनेति केचिदेवं व्रवंति लग्ने कूरे तदा पृथक्स्थाः आयुर्भागाः उद्योदयभावजेन गुण्याः पूर्वहरेणास्या क्ताः कार्याः शुभदृष्टेऽर्धया उद्योदयभावजं तु उग्रग्रहस्य पापग्रहस्य यो भाव-स्तरपावरोहारोहफलेनेत्यर्थः । यदि लग्ने द्वित्राः कूरास्तदा बलिष्ठस्य भावजेन गुण्याः तत्साम्ये बलसाम्ये पुष्टफलेन अधिकावरोहारोहफलेन फलसाम्ये द्वा-दिगुणनं कार्यमिति भावः तदसत् एकदेशत्वात् अस्मिन् लग्ने कूरे लग्नाधीने लग्ने सति असौ हानिर्न कार्या अंशजे कूरलग्नेऽसौ न कार्या ॥ २२ ॥

भाषाः—जो लग्ने पापग्रह होय तो ग्रहका पिंडायायुर्भाग पृथक् रखना उसको लग्नका राशिक छोटके भागाधिके गुणके गुणाकारको ३६९

से भाग देके जो लघ्वि आवे सो पृथक् रक्खा जो भाग उसमेंसे कम करना परंतु जो पापग्रह शुभग्रहकरके दृष्ट हो तो लघ्विका अर्ध पूर्वोक्त भागमें कम करना तो पिंडायुर्भाग होता है ।

दूसरे आचार्योंका मत यह है कि पृथक् रक्खा जो आयुर्भाग उसको लग्नस्थ पापग्रहका जो भाव उसका जो फल उससे गुण देना और ३६० से भाग देना लघ्वि पूर्वस्थापित भागादिमें हीन करना तो पिंडाद्यायुर्भाग होता है शुभग्रह देखता होय तो लघ्विका आधा घटाना और लग्नमें दो या तीन पापग्रह होय तो जो बली होय उसीका भावफल लेना पापग्रह लग्नपति होकर लग्नमें होय तो यह क्रिया न करना ॥ २२ ॥

उदाहरण—यहां लग्नमें पापग्रह कोई नहीं इसवास्ते विशेष संस्कार नहीं गया ॥ २२ ॥

पूर्वोक्तहानिसंस्कारपिंडाद्यायुर्भागचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	घ.	शु.	शु.	शु.	ल.
१९६	२४२	९४	१८६	१५५	३२९	१७३	
१५	२२	२०	२०	२९	५६	१२०	
६४०	३६	१२	५३	५	॥	२४	

इदानीं पिंडानेसर्गजीवशर्मायुर्दशानयनमाह ।

गोब्जास्तत्त्वतिथिप्रभाकरतिथिस्वर्गा नखाः पेण्डजे

नैसर्गे नखभूद्विगोधृतिनखाः पञ्चाशदकर्काक्षणाः ॥

दायांशाः स्वगुणैर्हता हि भगणांशाः समाद्यायुषी

स्वर्गांशाश्च समादि जैवमिभहत्स्वांशेषेष्टान्वितम् ॥ २३ ॥

अन्वयः—गोब्जेति अर्कादिति अर्कमारभ्य पिंडाद्यायुर्दशे गोब्जा इत्या-

रभ्य नखा इत्यन्तांका गुणकाः, नैसर्गे नखभूरित्यारयो गुणकाः ३, दायांशाः स्वगुणगुणा भगणांशे ३६० भाज्याः फलानि वषांद्यायुर्दशा भवन्ति । गोब्जा इत्यादिभिरैकैर्गुणिने पिंडायुः नखभूरित्यादिभिर्गुणितं निसर्गायुः स्यात् । दायांशाः स्वर्गांशा एकविंशत्या भाज्याः फलानि वषांदि जीवशर्मायुः स्यात् पुनर्दायांशा घट्यादिभ्योऽष्टमकेभ्यो यल्लब्धं घट्यादिकं तद्युक्तं घटा ॥ २३ ॥

भाषाः—१९।२५।१५।१२।१५।२१।२० यह क्रमसे सूर्यादि सात
ग्रहोंके पिंडायुर्दायिके गुणक और २०।१।२।९।१८।२०।५० यह क्रम-
से रव्यादि सातग्रहोंके निसर्गायुर्दायिके गुणक जानना ग्रहोंका आयुर्भाग स्व
(अपना) गुणकसे गुणके गुणाकारको ३६० से भाग देना तो क्रमसे वर्षादि
पिंडायु और निसर्गायु होता है पूर्वोक्त आयुर्भागको २१ से भाग देना जो
वर्षादि फल आवेगा उसमें पूर्वोक्त आयुर्भागको ८ से भाग देके जो फल आवे
सो घटोंमें युक्त करे तो जीवशर्मोक्त आयु होता है यहां भासादिफल अंशायुर्दा-
यमें कथितप्रमाण लेना ॥ २३ ॥

पिंडायुके गुणक ।

निसर्गायुके गुणक ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१९	२५	१५	१२	१५	२१	२०	२०	१	२	९	१८	२०	५०

पिंडायुरुदाहरण ।

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इसको सूर्यका गुणक १९ इससे
गुणके ५६२८।५७।४० इसको ३६० से भागके लब्धि १५ वर्ष शेष २२८।
५७।४० इसको १२ से गुणके २७४७।३२ इसको ३६० से भाग देके
लब्धि मास ७ शेष २२७।३२ इसको ३० से गुणके ६८२६ इसको ३६०
से भागके लब्धि दिन १८ शेष ३४६ इसको ६० से गुणके २०७६०
इसको ३६० से भागके लब्धि घटी ५७ शेष २४० इसको ६० से गुणके
१४४०० इसको ३६० से भागके लब्धि पल ४० इसी प्रकारसे सूर्यके
वर्षादि पिंडायु ज्ञेय १५।७।१८।५७।४० इस प्रमाण चन्द्रादिकोंका करना ।

निसर्गायुरुदाहरण ।

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इसको सूर्यका गुणक २० इससे
गुणके ५९२५।१३।२० इसको ३६० से भागके लब्धि वर्ष १६ शेष
१६५।१३।२० इसको १२ से गुणके १९८२।४० इसको ३६० से
भागके लब्धि मास ५ शेष १८२।४० इसको ३० से गुणके ५४८० इसको

(२२२)

केशपीजातकम् ।

३६० से भागके लब्धि दिन १५ शेष ८० इसको ६० से गुणके ४८००
इसको ३६० से भागके लब्धि घटी १३ शेष १२० इसको ६० से गुणके
७२०० इसको ३६० से भागके लब्धि पल २० इसी रीतिसे सूर्यका वर्षादि
निसर्गायु भया १६।५।१५।१३।२० इसी रीतिसे चंद्रादिकोंका करना ।

जीवायुरुदाहरणः—सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इसको २१ से
भागके लब्धि वर्ष १४ शेष २।१५।४० इसको १२ से गुणके २७।८
इसको २१ से भागके लब्धि मास १ शेष ६।८ इसको ३० से गुणके १८४
इसको २१ से भागके लब्धि दिन ८ शेष १६ इसको ६० से गुणके ९६०
इसको २१ से भागके लब्धि घटी ४५ शेष १५ इसको ६० से गुणके ९००
इसको २१ से भागके लब्धि पल ४२ इसी रीतिसे सूर्यका वर्षादि जीवायु
भया १४।१।८।४५।४२ इसके घटीमें सूर्यके आयुर्भाग २९६।१५।४०
को ८ से भागके लब्धि ३७ शेष ०।१५।४० इसको ६० से गुणके १५।४०
इसको ८ से भागके लब्धि २ यह युक्त करके सूर्यका वर्षादि १५४ जीवायु
भया १४।१।९।२२।४४ इसी रीतिसे चंद्रादिकोंका करना ॥ २३ ॥

पिण्डायुचक्रम् ।

निसर्गायुचक्रम् ।

सू	च	म	पु	शु	श	ल	सू	च	म	पु	शु	श		
१५	१६	३	६	१९	९	२	१६	०	०	४	७	१८	१४	
७	९	११	०	६	७	७	१०	६	८	६	७	९	३	०
१८	२९	५	१६	२२	२८	१४	१८	१५	२	८	२७	८	२८	२०
५७	७४	३	१०	१६	३७	८	२२	१३	२०	१०	७	१३	४	२०
४८	३०	८	३६	१८	१५	०	४८	२०	३५	१५	१७	३०	२०	०

जीवायुचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	ध	६.	शु.	श.	छ.
१४	२१	४	८	७	१५	८	२
१	६	५	१०	४	८	२	१०
९	१५	२७	१३	२६	१६	२२	२८
२२	३१	२३	५२	२६	४०	३७	२२
४४	६२	५०	३४	३१	००	४	७८

पिण्डायुर्द्वयत्रये लग्नायुर्द्वयषाधनक्रमम् ।

स्याल्लिताः स्वनस्तोद्धृता विभक्तनोर्वर्षादिपैडात्रिके
लग्नायुर्निखिलैस्तदंशकसमं कैश्चिद्रतुल्यं स्मृतम् ॥
यस्येशोधिबलस्तदेव हि परैस्तेनाद्वयमन्यैर्यदं-
शायुर्वन्वथ चांशतुल्यमखिलोक्तं ग्राह्यमेवादिमम् ॥ २४ ॥

अन्वयः—विभक्तनोल्लिता राशिं विहाय लग्नस्य, कलाः कार्याः द्विशत्या
भाज्याः फलं वर्षादिपैडनिसर्गजीवशर्मायुर्द्वयेषु स्यात् सर्वराचार्यैस्तदंशक-
समं नवमांशसमम् उक्तं लग्नभुक्तनवमांशतुल्यं कैश्चिदायुर्द्वयं लग्नेशनवमांशयोर्मध्ये यो बली
तदेव ग्राह्यमित्यन्यो तेनाद्वयमिति स्याल्लिता स्वनस्तोद्धृता इत्यादिनानीतं तत्र
तेनाद्वयराशीशो बली तदा राशितुल्यवर्षनवमांशे बलवति तदा नवमांशतुल्यं
वर्षम् आदयं कुत्र अंशायुवदानीते लग्नायुषि इत्यपरमतम् अथ निखिलोक्तम्
अंशसममादिममेव ग्राह्यमिति यावत् ॥ २४ ॥

भाषाः—राशिको छोडके भागादि लग्नकी कला करके उसको २००
से भाग देना तो पिण्ड निसर्ग और जीवशर्मायुर्द्वयमें लग्नायु होती है यह
अंशतुल्य अर्थात् लग्नभुक्तनवमांशतुल्य आयु सर्वाचार्य समत है कोई आचार्य
लग्नके राशितुल्य कहते हैं । लग्नपति अंशपतिमें जो बली होय ततुल्य (अर्थात्)
लग्नाति बली होय तो लग्नके राशितुल्य आयु अंशपति बली होय तो अंश-
तुल्य आयु यह कोई आचार्यका मत है । आयुर्द्वयमें कथितरीतिसे जो
आयु आवे उसमें अंशपति बली होय तो अंशतुल्य, लग्नाति बली होय तो
लग्नतुल्य वर्ष युक्त करना, यह परमत है । ऐसा पृथक् पृथक् सब आचार्योंने
कहाहै तथापि प्रथम प्रकार जो है सोई सबका मत है । इसलिये उसीको
मानना इति ॥ २४ ॥

उदाहरणः—राशिरहित भागादि लग्न १।४६।२६ इसकी कला ५८२।२६
इसको २०० से भागके २।१०।२८।२२।४८ यह पिण्ड, निसर्ग,
जीवायुर्द्वयके विषे लग्नायु जानना ॥ २४ ॥

चतुर्णामायुषां व्यवस्थामाह ।

अंशायुश्च तनाविनेऽधिकबले षण्ठं निसर्गं विधौ
स्याच्चेत्तुल्यबलं द्वयोर्युतिदलं तज्जागुपोऽत्रयः ॥
त्रयायुषि त्रिबलेर्निहत्य च युतिर्वीर्यैक्यहृद्वा त्रिजा-
युर्युत्याह्निर्योऽथ जैवमुदितं चेद्दीनवीर्यास्त्रयः ॥ २५ ॥

अन्वयः—अधिकबलायां तनावंशायुः, इने सूर्येऽधिकबले पिंडायुः, विधा-
वधिकबले निसर्गायुः साध्यम् । यदा द्वौ सबलौ तदा तत्तदायुषो योगदलं
मिश्रायुः स्यादिति गौणः, मुख्यस्तु तत्तदायुस्तत्तद्वलेन संगुण्य तयोर्योगं तयोर्ब-
लैक्येन भजेत्तदा मिश्रायुः स्यादित्यर्थः । यदि लग्नार्कचन्द्रादयोरपि तुल्य-
बलास्तदा लग्नबलेन दिनादिकर्मशायुः संगुण्यः सूर्यबलेन पिंडायुः संगुण्य
चन्द्रबलेन निसर्गायुः संगुण्य सर्वेषां योगं लग्नार्कचन्द्रबलयोगेन भजेत्फलं
मिश्रायुः स्फुटं स्यात् । अथवा त्रयाणामायुषां योगस्य तृतीयांशो मिश्रायुः
स्यात् । चेत्लग्नार्कचन्द्रादयोरपि हीनबलास्तदा जीवशर्मायुः स्यादिति ॥ २५ ॥

भाषाः—लग्न बली होय तो अंशायु, सूर्य बली होय तो पिंडायु, चन्द्र
बली होय तो निसर्गायु लेना, जो दो समबल कहिये पहिलवाधिक बल होय
तो उसीसे उत्पन्न आयुष्यका योगार्ध आयु होता है, लग्न और सूर्य समबल
होय तो अंशायु और पिंडायुका योगार्ध करना, लग्न और चंद्र समबल हो तो
अंशायु और निसर्गायुका योगार्ध करना सूर्य और चन्द्र समबल होय तो
पिंडायु और निसर्गायुका योगार्ध करना तो लग्न सूर्य और चन्द्र यह समबल
होय तो तीनों आयुष्यको तीनोंके बलसे गुणके ऐक्य करके उसको तीनोंके
बलैक्यसे भागके जो भागाकार आवे सो । अथवा तीनोंके आयुष्यके योगका
तृतीयांश आयुष्य लेना वह मिश्रायु होता है, जो लग्न, सूर्य और चन्द्र
यह तीनोंही हीनबल होयके रूपत्रयात्प बल होय तो जीवशर्मांक आयु
लेना ॥ २५ ॥

उदाहरणः—सूर्यका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ यह दिनादि करके ३१९७।२९।२४ इसको लग्नबल ७।२४।८।३० से गुणके २३६६८।५८।३२ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु गुणना ।

रविका पिंडायु १५।७।१८।५७।४० यह दिनादि करके ५६२८।५७।४० इसको रविवल ७।५१।५३।३० से गुणके ४४२७०।५९।५० वह भया, इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका व सूर्यका निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह दिनादिकरके ५९२५।१३।२० इसको चन्द्रबल ७।२०।४।३० से गुणके ४३।४५९।२।१० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका निसर्गायु करना ।

रविका यह गुणित तीनों आयुर्दायका योग दिनादि १११३९९।०।३२ इसके पल ४०१०३६४३२ इसको लग्नबल ७।२४।८।३० रविवल ७।५१।५३।३० चन्द्रबल ७।२०।४।३० इनका योग २२।३।६।६ इसकी विकला ८।३६६ इससे भागके लब्धि दिनादि ४९२८।४७।४६ यह वर्षादि करके १३।८।८।४७।४६ यह सूर्यका मिश्रायु भया इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंका मिश्रायु साधन करना । अथवा रविका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४, पिंडायु १५।७।१८।५७।४० निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह तीनों आयु-र्यका योग ४०।११।२१।४०।२४ इसका तृतीयांश १३।७।२७।१३।२८ यह रविका वर्षादि मिश्रायु भया, इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना ॥ २५॥

अंशायुश्चक्रम् ।

सू.	खं.	मं.	सु.	घृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
८	९	१	८	११	४	१३	१५	७२	वर्ष
१०	११	११	२	२	२	४	२	११	मासा
१७	१२	७	१३	१	२३	८	२४	१९	दिन
२९	५५	१९	५५	१२	२५	३४	५२	४४	पक्ष
२४	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२	पल

(२२६)

केशवीजातकम् ।

पिण्डायुश्चक्रम् ।

सू.	च.	मं.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१२	१६	३	६	१२	९	२	८०	वर्ष
७	९	११	५	२	७	१०	१०	मास
१८	२१	५	१६	२७	१४	२८	१३	दिन
५७	२४	३	१०	१६	८	२२	०	घटी
४०	३५	०	२६	१८	०	४८	२१	पञ्च

निसर्गायुश्चक्रम् ।

सू.	च.	मं.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१६	०	०	४	१८	२५	२	७५	वर्ष
५	८	६	७	९	०	१०	४	मास
१५	२	८	२७	८	२०	२८	१९	दिन
१३	२२	४०	७	४३	४१	२०	३१	घटी
२०	३६	२४	५७	३०	०	४८	५४	पञ्च

अंशपिण्डनिसर्गायुर्योगचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
४०	२७	६	१०	२५	४१	४७	२१	वर्ष
११	५	४	०	५	९	०	२	मास
२१	१४	२१	२७	२	२०	१३	२१	दिन
४०	२२	२	१३	११	४४	२	३७	घटी
२४	५८	३६	४५	४८	३२	४८	३६	पञ्च

योगतृतीयांशमिश्रायुश्चक्रम् ।

सू.	च.	मं.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१३	९	०	६	८	१३	१५	७	वर्ष
३	१	१	५	५	११	८	४	मास
२७	२४	१७	९	२०	६	७	२७	दिन
१३	५५	०	४	४३	५४	२०	१०	घटी
५८	१०	५२	३२	५६	५१	६६	३२	पञ्च

इदानीं बलावलज्ञानं तथेदमायुः केषां घटत इति वदति ।

ज्यल्पे हीनबले बली पडाधिके वीर्ये ग्रहश्चोदयो

भिन्नं स्वस्वमते स्मृतायुरिति तत्प्राज्ञैर्व्यवस्थापितम् ॥

अंशायुर्बहुसंमतं भवति तत्सत्यं च सत्योदितं

स्याद्धर्मिष्ठसुशीलपथ्यसुभुजां न स्यादितं पापिनाम् ॥२६॥

अन्वयः—ग्रह उदयो लग्नं वा ज्यल्पे सति हीनबलः, ज्यधिके पड्भाल्पे मध्य-
बलः, पडाधिके बली स्यादिति प्राज्ञैः श्रोतव्यादिभिर्व्यवस्थापितं व्यवस्था कृता
निर्णीतमिति यावत् । अंशायुश्च तनाविनेत्यादिना भिन्नमिति स्वस्वमते चतु-
र्विधमायुः स्मृतमुक्तम् अंशायुर्बहुसंमतं बहूनामाचार्योणां संमतं भवति, सत्यं
च, तदेव सत्योदितं स्यात् बहुसाम्यं समुपैति सत्यवाक्यम् । इदमायुर्धर्मिष्ठानां
सुशीलघतां पथ्यसुभुजां पथ्याहितं यद्भोजनं तत्सेवनं येषां भवति तेषां स्यात्
गणितागतमायुः न पापिनां स्यात् ॥ २६ ॥

भाषाः—ग्रह या लग्नका पड्बलैक्य ३ से कम होय तो हीनबल होते हैं ।
३ से अधिक होय तो मध्यबल और ६ से अधिक होय तो बली होता है ।
सब आचार्योंने पृथक् ६ आयु कहा है । लग्न बली होय तो अंशायु, सूर्य
बली होय तो विण्डायु इत्यादि कहा है । ऐसा है तथापि सत्याचार्यका मत
अंशायुपर है । बहुत आचार्योंकाही मत है और जो धर्मिष्ठ, सुशील, पथ्यभोजी
हैं जन्हीकी आयु मिलती है, पापियोंकी नहीं और पथ्यापथ्यसे रहित जो हैं
वह अकालमें भी मरते हैं ॥ २६ ॥

शिष्यसंदेहनिवारणमाह ।

हानिर्वास्तमितेऽग्निभेऽप्यनुमतांशोत्थेऽल्पबुद्ध्या न तद्य-

स्माच्चैष्टिक आश्रयेऽस्ति निखिलेः पण्डादिपूक्ता ततः ॥

आयुः सौरमिदं यतोऽब्दगणना सौरात्ततः सूरिभिः

प्रोक्तं सत्यमसद्यदर्पकृतं नाक्षत्रकं साधनम् ॥ २७ ॥

अन्वयः—या अस्तमितेऽर्द्धहानिः शत्रुमे व्यंशहानिः सा तु पैण्डादिभिर्वा-
युर्दाये उक्ता, केनचिश्चायैर्ष्यांशायुर्दाये कृता सात्वल्बुद्ध्या हेतुभूतया अल्पा-
चासौ बुद्धिश्चाल्पबुद्धिस्तपाल्पबुद्ध्याऽसत् यस्मात्कारणादस्तम् इते हानिश्चे-
ष्टिके चेष्टागुणके यतोऽस्तं गतस्य चेष्टागुणके रूपार्द्धमेव हानिः, अस्मिन्ने-
व्यंशहानिरुक्तास्तीति भावः । आयुः सौरमितमेव ग्राह्यं यनोद्गणनां सौरात्
उक्तं च 'वर्षायर्नेतुंयुगपूर्वकमत्र सौरान्भासास्तथा च तिथयस्तुहिनांशुमानात् ॥
यत्कच्छ्रसूतकचिकित्सितवासराद्यं तत्सावनाच्च घटिकादिकमार्क्षमांनात् ॥'
ततः सूरिभिः सत्यं प्रोक्तम् अल्पकथितं नाक्षत्रकं सावनमिति केचिदल्पज्ञेन
नाक्षत्रसावनेनायुः कथितं तदप्रवृत्ति शम् ॥ २७ ॥

भाषाः—पिण्डादि आयुर्दायमें अस्तंगत ग्रह होय तो अर्ध हानि और शत्रु
ग्रहमें होय तो व्यंश हानि जो सब आचार्योंने कहा है उसको अनुमानसे कोई
अल्पबुद्धिसे अंशायुर्दायमें करेंगे तो वह करना नहीं, कारण अर्ध हानि चेष्टा
गुणकमें और व्यंश हानि आश्रय गुणकमें है, वर्षगणना सौरसे है इसवास्ते
विद्वान्से यह आयुर्दाय सौर मानसे कथित है और वही सत्य है, नाक्षत्र
किंवा सावन मान लेना ऐसा जो कोई कहते हैं सो असत्य जानना क्योंकि
महामतसे विरोध है सो ठीक नहीं है ॥ २७ ॥

इदानीं मनुष्यपरमायुरन्यप्राणिनां परमायुः-

कथनपूर्वकमायुर्दायानयनमाह ।

पंचाहं नखभूसमा नृकरिणां व्याघ्राद्यजादेर्नृपाः

गोकाल्योश्च जिनास्तयोऽष्टखरयोस्तत्त्वानि सूर्यां शुनाम् ॥

अश्वायुः परमं रदा नृवदिहानीयायुरेषां परा-

युर्निघ्नं नृपरायुषा च विहृतं तेषां स्फुटायुर्भवेत् ॥ २८ ॥

अन्वयः—पंचदिनाधिकनसम्भूतपाणि १२०।०।५ नृकरिणां परमायुः
११।५ व्याघ्राद्यजादेर्नृपाः १६, गोकाल्योर्गोमहिष्योर्जिनाश्चतुर्विंशति २४

मितापरमायुः, हीति निश्चयार्थे बोधकः । तथोद्भूतस्योस्तत्त्वानि पंचविंशति २५ वर्षाणि परमायुः, शुनां कुकुराणां द्वादशवर्षाणि परमायुः स्यात् अश्वानां रदा द्वाविंशत् ३२, एषां नृवत् मनुष्यवदायुरानीय स्वस्वपरमायुर्द्वयैः संगुण्य नृपरायुषा भजेत्तदा तेषां स्फुटायुर्भवेत् इति आयुर्द्वयाध्यायः पंचमः ॥ २८ ॥

भाषाः—मनुष्य और हाथी इनका परमायु १२० वर्ष ५ दिन, व्याघ्रादि और अजादि इनका १६ वर्ष, गौ मँस इनका २४ वर्ष, ऊँट और गर्दभ इनका २५ वर्ष, कुत्तेका १२ वर्ष, घोड़ेका ३२ वर्ष यह प्राणीका मनुष्यके प्रमाण आयुर्द्वय बनायके उसको स्वस्वपरमायुसे गुणके गुणाकारको मनुष्यके परमायु १२० वर्ष ५ दिनसे भाग देना तो उस २ प्राणीका स्पष्टायु होता है इति ॥ २८ ॥

जगदीशेन रचिते केशवीग्रंथटिप्पणे ॥

पूर्णाऽयमायुरध्यायो भाषार्थस्य प्रकाशकः ॥ ६ ॥

इत्यायुर्द्वयाध्यायः पष्ठः ॥ ६ ॥

अथ दशाऽध्यायः ॥ ७ ॥

यस्यायुर्यदतो दशास्य च शुभेशोचस्वभांशे तथा-

रोहा नीचपरिच्युतस्य यदि सा कष्टारिनीचांशभे ॥

त्यक्तोच्चै त्ववरोहिणी भवति सा मध्योच्चमित्रस्वभांशे

सहस्रयुतः स्फुरत्स्वल्लिष्टेऽष्टाधिके स्याच्छुभा ॥ २९ ॥

अन्वयः—यस्य ग्रहस्य लग्नस्य वा यदायुस्तावस्य ग्रहस्य दशा स्यात्, शोचस्वभांशे वर्त्तमानस्य शुभा, इष्टस्य मित्रस्य भेदशे वा उच्चगृहे उच्चभांशे वा स्वभांशे वा स्थितस्य ग्रहस्य दशा शुभा स्यात् । तथा नीचपरिच्युतस्य ग्रहस्य दशाऽऽरोहा शुभा स्यात् यदि नीचपरिच्युतग्रहोऽरिभांशे अरेः शत्रोर्नीचस्य वा भांशे तदा तस्य दशा वष्टदा नष्टकृदा । त्यक्तोच्चे ग्रहे तदस्याऽवरोहिणी अशुभा अयुसफलदा, यदि त्यक्तोच्चग्रह उच्चमित्रस्वभांशे स्थितस्तदा तस्य दशाऽशुभाऽपि मध्या स्यात् । सहस्रयुतस्फुरत्स्वल्लिष्टेऽष्टाधिके ग्रहे राति नश्य

दशा शुभा स्यात् । शुभग्रहेदृष्टो युतश्च स्फुटत्करा रश्मियो यस्य स स्फुटत्करः
बलिष्ठेऽधिकबले दशाधिके दृष्टम् दृष्टबलमाधिकं यस्य स दृष्टबलः ॥ २९ ॥

भाषाः—ग्रहका जो आयुर्दाय वही उसकी दशा होती है. ग्रह मित्रगृहमें
उच्चमें वा स्वगृहमें अथवा मित्रांशमें उच्चांशमें वा स्वांशमें होय तो उस ग्रहकी
दशा शुभ होती है ऐसाही यदि ग्रह परमनीचको छोडकर आगे जाय तो दशा
आरोहा शुभ होती है परंतु जो वह ग्रह शत्रुगृहमें वा नीचमें किंवा शत्रुके
अंशमें वा नीचांशमें होय तो आरोहा दशा यह अशुभ होती है और ग्रह परम
उच्च छोडके आगे जाय तो दशा अवरोहिणी अशुभ होती है परंतु ग्रह उच्चमें
मित्रगृहमें वा स्वगृहमें अथवा उच्चांशमें मित्रांशमें वा स्वांशमें होय तो अवरोहिणी
दशा यह मध्यग होती है ग्रह शुभदृष्ट शुभयुक्त, उदित, बलिष्ठ और दृष्टाधिक
कहिये पूर्वमें ले आये जो दृष्ट सो अधिक होय तो दशा शुभ होती है ॥ २९ ॥

इदानीं दशाक्रममाह ।

स्यादाद्या हि दशाऽधिकोजस इहार्केन्दूदयानां तत-
स्तत्केन्द्रादियुजामथ द्विवहवो वीर्यक्रमेणैव हि ॥

चेदोजस्तमतायुषोऽधिकतयायुस्तुल्यता चेद्दशा-

भौठ्यात्स्याद्भूदितक्रमात्क्रमविधौ वीर्यं हि तत्रोच्यते ॥ ३० ॥

अन्वयः—अर्केन्दूदयानां सूर्यचन्द्रलग्नानां मध्ये योऽधिकबलस्तस्यादा
दशा कल्प्या, ततस्तत्केन्द्रादियुजा तद्यथा अर्के बलाधिके प्रथमदशाऽर्कस्य
ततस्तस्य केन्द्रस्थितानाम् अर्थात् द्वितीया दशा रविस्थाने स्थितस्य तृतीया
चतुर्थस्थितस्य, चतुर्थी सप्तमस्थस्य, पंचमी दशमस्थितस्य एवं चन्द्रे वा लग्ने
बलवति सति । ततः पणफरस्थस्य २।५।८।११ तत आपोक्लिमस्था ३।६।
९।१२ नाम यद्येकस्था द्विवहवः संति तदा वक्ष्यमाणबलाधिकस्यादा दशा,
ततो न्यूनस्य द्वितीया, एवं तृतीयाद्या, बलसाम्ये यस्याधिकायुः तन्नाति
न्यूनाधिक्यं योज्यं, तस्यापि साम्ये यो ग्रहोऽस्तात्प्रथमोदितस्तस्यादा दशा
ज्ञेयेति ॥ ३० ॥

भाषाः—सूर्य, चन्द्र और लग्न इसमें जो बली होय उसकी दशा प्रथम जानना और उसके बाद केन्द्र १।४।७।१० स्थकी दशा, अनंतर ११-१२।५।८।११ स्थकी दशा, अनंतर आपोक्लिमस्थ ग्रहकी दशा ऐसा क्रम जानना केन्द्रमें ११फरमें और आपोक्लिमस्थानमें एकसे ज्यादा ग्रह होय तो प्रथम दशा किसकी है तब उसमें जो अधिकबल होय उसकी प्रथम दशा अनंतर न्यूनबल होय उसकी दशा कदाचित् बलकी ही समता होय तो जिसकी आयु अधिक होय उसकी प्रथम दशा, आयुकी ही समता होय तो जो अस्तसे प्रथम उदय हुआ होय उसकी प्रथम दशा होती है ॥ ३० ॥

इदानीं लग्नाद्यदशाप्राप्तबलमाह ।

चेल्लग्न्याद्यदशा स्वभावजफलप्रौजांसि पादक्रमे-

ऽकेन्द्रोश्चेत्प्रथमास्वगोदयबलांघ्रिर्भेऽन्यवर्गेऽद्वितः ॥

स्वैर्वर्गेशबलैर्हतो बलभिर्हैक्यं मूलितैक्यं परे

ऽथैवं रिष्टदभक्तृजेऽधिकबले भक्ता तदा रिष्टहत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः—चेदाद्या लग्नदशा तदा भावफलप्रौजांसि कार्याणि ओजांसि स्वस्वपङ्क्त्ययानि ग्रहाणां भावजफलैर्युण्यानि दशाक्रमे तानि दशा बलानि स्फुटानि भवन्ति चेदकेन्द्रोः प्रथमा दशा, अर्कस्य चंद्रस्य वा प्रथमा दशा तदा ग्रहाणां लग्नस्य च स्वपङ्क्त्ययं तस्यांविश्वतुर्थांशो 'तो गृहस्थाने स्थाप्योऽन्यवर्गं होरादिष्ट चतुर्थांशस्यार्द्धः स्थाप्यः, ते समवर्गस्थितांकाः स्वैर्वर्गेशबलैर्निहत्य गुणयित्वा तेषामैक्यं बलं स्यात् अपरमतं तु अपरे एवं भुवन्ति । तेषां गुणनफलं प्रथमं मूलानि गृहीत्वा तेषामैक्यं बलं स्यात्तदमेकदेशत्वात् स्वगोदयबलांघ्रित्यादिप्रकारेणानीतबले रिष्टदभक्तृजग्रहयोर्यदि रिष्टभक्ता रिष्टद-महापेक्षयाऽधिकबलस्तदा रिष्टहत्स्यात् ॥ ३१ ॥

भाषाः—यदि लग्नकी प्रथम दशा होय तो भावफलसे ग्रहके पङ्क्त्ययको गुण देना तो दशाक्रमसे बल होता है यदि सूर्य वा चन्द्रमाकी प्रथम दशा

होय तो ग्रह और लग्न इनके बलका चतुर्थांश समवर्ग बलके गृहस्थानमें रखना और उसका आधा होरादि ६ स्थानमें रखना और उनको अपने अपने वर्गस्वामीके बलसे गुण देना और सबका योग करना तो बल होता है और कोई आचार्योंका यह मत है कि गुणनफलका मूल लेकर योग करना तो बल होता है यह ठीक नहीं है पूर्वरीतिसे आया जो बल वह यदि रिष्टकर्ता ग्रहके अपेक्षा रिष्टभंगकर्ता ग्रहका बल अधिक होय तो रिष्टको नाश करेगा ॥ ३१ ॥

दशाक्रमोदाहरण ।

यहां सूर्य चन्द्र और लग्न इसमें सूर्य अधिकबल है इसवास्ते पिंडायुमें सूर्यदशा प्रथम लेके उदाहरणक्रम लिखना तथापि ग्रंथक्रमानुरोधसे लक्ष्मणाधिक कल्पना करके अंशायुमें प्रथम लग्नदशा लेके दशाक्रम लिखते हैं प्रथमलग्नदशा अनंतर लग्नसे केन्द्रस्थानमें सूर्य, चंद्र है और पणफरमें शुक्र, मंगल है और आपोक्लिममें गुरु, बुध शनि हैं इनमेंसे प्रथम दशा किसकी है यह समझनेके वास्ते दशाक्रमबल करते हैं ।

दशाक्रमबलचक्रम् ।

सु	च	म	उ	शु	म	श	ग
६	३	२	१	६	-	५	
३	२	२	२	१	१	३	३
६	३	२	२	१	१	३	३

अन्मलग्नम् ।



रविका पड्बलैक्य ७।५१।५३ इसको रवितावफल ०।४६।३३ इससे गुणके ६।३।३६ यह रविका दशाक्रमबल मया इसी रीतिसे चंद्रादिकोंका बल करना यहां केन्द्रमें जो सूर्य चन्द्र हैं इसमें सूर्य अधिकबल है इसकी द्वितीय दशाचन्द्रकी तृतीय दशा, अनंतर पणफरमें शुक्र, मंगल हैं इसमें मंगल अधिकबल है इसकी चतुर्थ दशा, अनंतर शुक्रकी आपोक्लिममें गुरु,

भाषोदाहरणसाहितम् । (२३३)

बुध, शनि है। इसमें गुरु अधिक बल है इसकी दशा अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा इस प्रकार अंशायु करना । उदाहरणार्थ सूर्य अधिक बल कल्पना करके पिंडायुमें दशाक्रम लिखते हैं प्रथम सूर्य दशा अनंतर सूर्यसे केन्द्रस्थागमें लग्न चंद्र है इसमें प्रथम दशा किस्की है यह समझनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं ।

अंशायुचक्रम ।

सप्त	सूर्य	चन्द्र	मंग	गुरु	शुक्र	शनि	बुध	योग
१५	८	९	१	४	११	१३	८	७२
२	१०	११	११	२	२	४	२	११
२४	१७	१२	७	७३	१	८	१३	१९
५२	२९	५५	१९	२५	१०	३४	५५	४४
०	१४	४८	१२	४८	०	४८	१२	१२

चन्द्रका पङ्कलैक्य ७।२०।४ इसका चतुर्थांश १।५०।१ यह गृहस्थानमें बल इसका अर्थ ०।५५।० यह होरावि ६ स्थानमें बल अथ चन्द्रका गृहेश शनि इसका पङ्कलैक्य ६।२।११ इससे चंद्रका बृह बल १।५०।१ इसको गुणके ११ । ४ । ६ यह चन्द्रका होरेश चन्द्र इसका पङ्कलैक्य ७।२०।४ इससे चन्द्रका होराबल ०।५५।० इसको गुणके ६।४३।२४ इस रीतिसे द्रव्यकाणाधिकोका गुणाकार करके सप्तवर्गमेंके गुणाकारका ऐक्य करना तो दशाक्रम बल होता है ।

ग्रह और लग्न इनका बलचतुर्थांश गृह और
तदर्थ होरादि ६ स्थानमें ।

मरा.	सू.	च.	म	भु	बृ	शु	श	क.
गृह	१ ५७ ५८	१ ५० १	१ १७ ४२	१ १८ ६	१ ५३ ५२	१ २२ ५४	१ ३० ३३	१ ५१ २
होरा	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ८१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
द्वेष्माण	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
सप्तमांश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
नवमांश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
द्वादशांश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ०	० ५६ ५६	० ४१ ४१	० ४५ १६	० ५५ ३१
त्रिंशोश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१

वर्गशतके गुणके ।

म.	सू.	च.	म.	बु.	व.	शु.	श.	लग्न
गृह	१०	११	१०	९	९	८	७	१०
	११	४	११	६२	६२	२०	६१	१३
	१०	६	६	६१	६६	२६	३१	४१
होरा	७	६	६	६	६	६	६	७
	४३	४३	६	७	६७	४	६६	१६
	६३	२४	३२	७	३४	१	०	३७
वैष्णवा.	७	६	४	३	४	३	४	६
	४३	३२	६४	२९	६६	४२	१०	६
	६३	०	६४	१९	२८	६	११	६०
सप्त.	७	७	३	३	४	६	३	७
	१२	१२	३४	६६	६४	२६	६६	१
	३७	३४	४३	४३	६८	६९	४३	२६
नवमी	७	६	४	३	७	३	४	७
	१२	३२	४४	६६	१२	३६	३३	१
	३७	०	६६	४३	१०	६०	१६	२६
द्वाद	६	६	४	३	७	६	३	६
	७	६७	६४	२२	१२	१४	६४	३६
	८	३०	६४	१९	१०	३८	३१	७
त्रिंश.	७	४	४	३	४	३	३	६
	२७	४६	६४	६६	६६	४१	६४	३६
	४४	२४	६४	४३	२८	६	३१	७

गुणाकारका ऐक्यदशाक्रमवलचक ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	शुक्रः	शनिः	गुरुः	शनिः	लग्न
६२	४७	३८	३३	४६	३०	३५	४७	३३६
३९	४७	२०	३१	२६	१९	१६	४०	४९
२	८८	८८	४०	२५	१	२०	१०	६९

यहां सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इसमें लग्न अधिक बल है उसकी द्वितीय दशा, अनंतर चन्द्रकी षण्णपरमें मंगल शुक्र इसमें मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा भाषाविलम्बमें बुध, गुरु, शनि हैं, इनमें गुरु अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शनिदशा अनंतर बुधकी दशा

(२३६)

केशवीजातकम् ।

यहां मिश्रायुमें सूर्य अधिक बल है इसवास्ते यही दशाक्रम जानना यह बल पिंडायुमें और निसर्गायुमें लेना अंशायुमें पहले जो बल किया है उसका प्रमाणसे दशा रखना ।

पिंडायुदशाचक्रम् ।

सू.	ल.	च.	मं.	शु.	बु.	श.	बु.	यो.	०
१५	२	१६	३	१९	६	९	६	८०	वर्ष
७	१०	९	११	२	५	७	२	१०	मास
१८	२८	२९	५	२८	२२	१५	१६	१३	दिन
५७	३२	२४	३	३७	१६	८	१०	०	घटी
४०	४८	३५	०	२४	१८	०	३६	२१	पल

उदाहरणार्थ चन्द्रका अधिक बल कल्पना करके निसर्गायुमें दशाक्रम लिखते हैं प्रथम चन्द्रदशा अनंतर चन्द्रसे केन्द्रस्थानमें लग्न और सूर्य हैं इसमें सूर्य अधिकबल है इसकी द्वितीय दशा अनंतर लग्नकी दशा चन्द्रमे पणकरमें शुक्र मंगल है इसमें मंगल अधिकबल है उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा, चन्द्रसे आपोक्लिमस्थानमें बुध गुरु शनि हैं इनमें गुरु अधिक बल है इसकी दशा, अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा पिंडायुमें जो बल किया है उसी बलके प्रमाणसे निसर्गायुमें भी लेना, और जीवायुमें भी लेना ।

निसर्गायुचक्रम् ।

वै.	सू.	ल.	मं.	शु.	बु.	श.	बु.	यो.	०
०	१६	२	०	१८	७	२४	४	७५	वर्ष
२८	५	१०	६	३	९	०	७	४	मास
२	१५	२८	८	२८	८	२५	२७	१९	दिन
२२	१३	२२	४०	४१	४३	२०	७	३१	घटी
३५	२०	४८	२४	२०	३०	०	५७	५४	पल

जीवायुर्दामें सूर्य, चन्द्र लग्नमें हीन बल होय तथापि जो सप्तमें अधिक बल होय उसकी प्रथम दशा कल्पना करके अनंतर उससे जो केन्द्रादि स्थानमें होय उनकी दशा इत्यादि क्रम जानना ॥ ३१ ॥

रिष्टमंगविचारांतरं दशाक्रमबलदाढ्यं

मतांतरनिराकरणं च ।

भंक्त्वा रिष्टकृतो हिताहितशुभासत्त्वं च नीचोच्चभा-
स्ताद्यस्याश्रयतां विचार्य मतिमान् रिष्टस्य भंगं वदेत् ॥

श्रेष्ठं रिष्टहतो दशाक्रम इहोजः श्रीधराद्योदितम्
कष्टेष्टम्वलांतरात्कच कृतं तद्युक्तिशून्यं त्वसत् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—संक्षुरिति । रिष्टभंक्त्वाः रिष्टकृतो रिष्टकारकस्य ग्रहस्य हिताहितं शुभाशुभं विचार्य रिष्टभंगं वदेत् हितं इष्टं, अहितं कष्टं शुभासत्त्वं शुभग्रहं पापग्रहं च उच्चस्थितो नीचस्थितो वा अस्तोदितो वा मित्रगृहे शत्रुगृहे वा स्यादित्यादि सर्वं विचार्य रिष्टस्य भंगं वदेत् मतिमान् । इहास्मिन्स्थले दशाक्रमे श्रीधराद्योदितम् ओजो बलश्रेष्ठं इष्टबलेन गुण्यो दशाविधौ बलं स्यात् । अथ परमतम् । कष्टेष्टमेति । कच केचनाचार्याः कष्टेष्टाभ्यां गुणिते बले तयोरेतरात्साधितं वीर्यं दृक् पृथगिष्टकष्टगुणितमित्यादिना इष्टकष्टगुणितं पङ्कलं तयोरेतरं कार्यं तस्य चतुर्थांशो गृहे, होरादावर्धितः ततः स्वस्ववर्गशबलैर्हतस्तेषामैक्यं स्पष्टबलं स्यात्तदसत् युक्तिशून्यत्वात् ॥ ३२ ॥

भाषा—अरिष्टकर्ता ग्रह और अरिष्टमंगकर्ता ग्रह इनके इष्ट कष्ट वह शुभ हैं किंवा पाप हैं यह और वह नीचमें उच्चमें मित्रगृहमें शत्रुगृहमें और अस्तगत उदित है इत्यादि इनका आश्रयत्वका विचार करके बुद्धिमान् गणकने अरिष्ट-भंग कहना यह ग्रंथमें रिष्टभंगके विषे और दशाक्रमके विषे श्रीधरादिक आचार्योंने कहे प्रमाण बल लानेकी रीति कही है वही श्रेष्ठ है श्रीमति इत्यादि ग्रंथकारने इष्टसे वा कष्टसे पङ्कल गुणके उसके अंतरसे जो बल साधन कथित किया वह अयुक्त है इसवास्ते असत् है ॥ ३२ ॥

अंतर्दशाकरणम् ।

अर्धस्यैकभगद्विकोणगृहगुरुपंशस्य चास्ते नगां-
शस्याग्निश्चतुस्रगो निजगुणैः पंतैकमे स्याद्बली ॥

अंशादौ कुरु रूपमत्र समतां कृत्वा च नाशं छिदा-

मंशघ्नाः स्वदशाः पृथक् खलु लवैक्याताः स्युरंतर्दशाः ॥३३॥

अन्वयः—मूलदशेशगृहस्थो ग्रहो निजगुणैरर्थपक्वा पाचको भवति निज-
गुणैरित्यस्यार्थस्वारोहावरोह उच्चनीचकषादिभिरित्यर्थः । त्रिकोणगो-
नवमपंचमस्थानगद्यंशस्य अस्ते सप्तमस्थे नगांशस्य सप्तमांशस्य चतुरस्रश्चतुर्था-
ष्टमस्थानगोत्रेऽश्चतुर्थांशस्य पक्वा पाचको भवति लग्नस्याप्येवम् । एकमे द्विवहुषु
सत्सु बली एक एव ग्रहः पाचयति न सर्वे, अत्रापि दशाक्रमबलं ज्ञेयम् ।
अंशादौ रूपं कृत्वा ततः प्रथममेकगृहस्थितस्य, ततस्त्रिकोणस्थग्रहस्य, ततो
अस्तगतस्य, ततश्चतुरस्रगतस्य ग्रहस्य भागाः स्थाप्याः ततः समच्छिदीकृत्य
छेदगमं च कृत्वा पृथक् तेषामंशानां योगः कार्यः ग्रहदशा पृथक्चलैर्गुण्या अंश-
योगेन भाज्याः अंतर्दशाः स्युः ॥ ३३ ॥

भाषाः—मूलदशापति अर्थात् महादशापति जित राशिमें होय उसी राशिमें
जो ग्रह होय वह दशापतिके संबंधमें दशापतिके अर्थफलका पाचक होता है ।
दशापतिसे ५।९ स्थानमें रहनेवाला ग्रह दशापतिके तृतीयांश कालका पाचक
होता है और दशापतिसे सप्तम ७ स्थानमेंका ग्रह दशापतिके सप्तमांशका
पाचक होता है और दशापतिसे ४।८ स्थानमेंका ग्रह दशापतिके चतुर्थांश
कालका पाचक होता है, सर्वत्र ग्रह आरोहावरोह उच्चनीचादि पूर्वाक्त स्वगुणसे
शुभाशुभफलका पाचक होता है कहिये अन्य दशामें भी अपने पाककालमें
शुभाशुभ फल देता है एकराशिमें एकसे ज्यादा ग्रह होय तो उनमें जो बलिष्ठ
ग्रह होय उसीको लेना यहां अंशस्थानमें १ लेके उसके नीचे छेद लिखना
अनंतर समच्छेद करके छेदांक त्याग करना अंशांकसे स्वकीय स्वकीय वर्षादि
दशा अलग अलग गुणके गुणाकारको अंशांकके मिलानेसे जुदा जुदा भाग
देना तो अंतर्दशा होती है ।

अंतर्दशाक्रमः ।

प्रथम दशापतिकी अंतर्दशा, अनंतर दशापतिके राशिमें रहनेवाले ग्रहका
अंतर, फिर दशापतिसे ९।५ स्थानमें रहनेवालोंका अंतर, फिर मग्नस्थानक

ग्रहका अंतर, अनंतर ४।८ स्थानके ग्रहका अंतर, कदाचित् पूर्वोक्त स्थानोंमें दो तीन ग्रह होय तो बलके वशसे क्रम जानना जो दशाक्रमके विषे बल है वही अंतर्दशामें भी बल जानना ।

समच्छेद करनेकी रीति ।

जिन संख्याओंका समच्छेद करना होय उनको बराबरसे रखकर एकके हरसे दूसरेके हर अंशको गुण देना और दूसरेके हरसे और सबके हर अंशको गुणना ऐसा परस्पर गुणनेसे सनानच्छेद होता है ।

उदाहरणः—जैसे लग्नदशामें अंतर करना है, ल. १ श. १ सू. १ च. १ इनको समच्छेद करके २५२।८४।८४।३६।६३ अं.

२५२।२५२।२५२।२५२।२५२ ह.

इन अंशोंकी मिलान ५१९ इसको ३ से भागके १७३ अंशोंमें ३ से भाग देनेसे ८४।२८।२८।१२।२१ इसी प्रकार जहां अधिक अंक होय उसको अपवर्तन देके सूक्ष्म अंक करलेना जो काम उस अंकसे होता था वह काम इस अंकसे हो जायगा ॥ ३३ ॥

उदाहरणः—यहां सूर्यबल अधिक है इसवास्ते मिश्रायुमें प्रथम सूर्यदशा १३।७।२७।१३।२८ अब सूर्यदशामें अंतर्दशा विचार, यहां कुंडलीमें सूर्यके साथ कोई ग्रह नहीं सूर्यसे त्रिकोणमें मंगल है सो १ पाचक है और सूर्यसे सप्तममें लग्न है सो १ पाचक, तब सूर्यदशामें मंगल और लग्न पाचक है सूर्य १ मं. १ ल. १ समच्छेद करके सू. १ मं. १ ल. १ इसके छेद त्याग करके सू. २१ मं. ७ ल. ३ यह अंशांक भया यहां सूर्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इसको सूर्यके अंश २१ से गुणके २८६।१०।१।४२।४८ इसको अंशांककी मिलान ३१ से भागके ९।३।१।१।२२ यह सूर्यमें सूर्यकी दशा, सूर्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इसको मंगलके अंश ७ से गुणके ९५।७।१०।३४।१६ इसको अंशांककी मिलान ३१ से

और विदशापति को दशा पति कल्पना करके विदशामें उपदशा ल्पावना यही रीतिसे दशामें अंतर्दशापति अपने गुण प्रमाण फल देते हैं और अंतर्दशामें विदशापति अपने गुणप्रमाण फल देते हैं और विदशामें उपदशापति अपने गुण प्रमाण फल देते हैं ऐसे उपदशामुद्धमकालिक फल जानना ।

यहां १ कलाका अंशायुर्दोष लानेकी रीति प्रमाण आयुर्दोष किया तो १ दिन ४८ घटी आया ऐसा दीखता है ब्रह्म सौर आर्यभट्टादि पक्षसे ग्रहका जागादि अंतर आता है इसकारने आयुर्दोषमें मासादि अंतर आवेगा ।

जब जन्मकालमें पलमात्र अंतर आता है तब लग्नमें ६ कलाका अंतर आता है और ६ कलासे आयुर्दोषमें १० दिनका अंतर आवेगा ऐसा अंतर देखकर भी जो यह दशा प्रवेशादि लग्नफल कथित किया है उन दूर-दर्शीको दण्डवत् है ॥ ३४ ॥

सूर्यमह दशाति- र्गतसूर्यातर्दश- मध्ये विदशाच				सूर्यमह दशानगन- भगलानर्दश मध्ये विदशाचक्रम				सूर्यमहदशातर्गतलग्नो- तर्दशामध्ये विदश- चक्रम						
सु	म	ल	वि	म	सु	शु	बु	शे	ल	शु	श	सु	च	वा
६	२	०	१	१	०	०	०	३	०	०	०	०	०	१
३	१	१०	३	१	७	३	६	१	७	२	२	१	१	३
६	२	२२	१	१३	४	१	१०	०	२१	१७	१७	३	२७	२८
२९	२	२१	१	१३	२४	१३	४८	१०	३	१	१	०	४२	६१
१७	११	२६	२	१६	३८	२६	१२	२८	११	४	४	०	७८	३१

चन्द्रमहादशांत- गतसूर्यांतदेशा- मध्य विदशा- चक्रम्	चन्द्रमहादशांतमे- तचंद्रांतदेशामध्ये विदशाचक्रम्	चन्द्रमहादशांतगत- चन्द्रांतदेशामध्ये विदशाचक्रम्
सू. मं. ल. पो. चं. वृ. सू. मं. य. च. वृ. सू. मं. य.		
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०		
३ १ ० ६ ६ १ १ १ १ ० ८ १ ० ८ ८ १५		
२८ १ १६ २८ १७ २३ ११ ११ ६ २० २६ ६ ६ २७		
५४ ३६ ६७ १७ १९ ४६ १९ ४९ ६ १८ ४६ ५ ४ १३		
६९ ० ६० ६१ ७६ ३७ ६६ ६६ १६ ९ ३ ३२ ३६ १६		

चन्द्रमहादशांतगत- जीवांतदेशामध्ये विदशाचक्रम्	चन्द्रमहादशा- नगतसूर्यान्तदे- शामध्ये विद- शाचक्रम्	चन्द्रमहादशांतगत- मंगलांतदेशामध्ये विदशाचक्रम्
वृ. चं. बु. सू. पो. सू. मं. ल. पो. मं. सू. शु. बु. पो.		
० ० ० ० १ ० ० ० ० १ ० ० ० ० १		
११ ३ १ २ ७ १० ३ १ २ ८ २ १ २ २		
१७ २६ १९ २६ २९ ४ ११ १३ २९ २० २६ ७ ६ २९		
२ ४० ३४ ४६ ४ २२ १७ २८ १८ १७ ४५ ११ ४ १८		
६९ ६० ४३ ३८ २६ ६ २२ ६२ १९ १५ ४५ ३ १८ १९		

भौममहादशांतगत- मंगलांतदेशामध्ये विदशाचक्रम्	भौममहादशा- तगतसूर्यान्त- देशामध्ये विद- शाचक्रम्	भौममहादशांतगत- शुक्रांतदेशामध्ये विदशाचक्रम्
० ० ० ० १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०		
८ २ १ २ २ ३ १ ० ४ १ ० ० ० ० २		
१७ २६ ६ ४ २४ १० ३ १४ २८ ० १० १० ५ १० ३		

मीमहादशातर्गत- बुधान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्					शुक्रमहादशातर्गत- शुक्रान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्					शुक्रमहादशातर्गत- लग्नान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्						
व.	घृ.	ल.	श.	यो.	शु.	उ.	श.	म.	वृ.	यो.	ल.	शु.	अ.	मृ.	च.	यो.
०	०	०	०	०	३	१	१	०	०	६	१	०	०	०	०	२
२	०	०	०	३	३	१	१	६	९	९	१	४	४	१	३	३
७	९	१६	१६	२१	१२	४	४	१८	२६	६	४	११	११	२६	८	१
३७	३९	६४	३६	६	४६	१६	१६	६८	४१	६७	१८	२६	३८	१९	३३	६९
१	३४	१०	१६	६	३९	३३	३३	६	३९	३०	३३	११	११	२२	६३	१८

शुक्रमहादशातर्गत- शनिान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्						शुक्रमहादशातर्गत- तमगणान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्						शुक्रमहादशातर्गत- गुरुान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्					
श	म	अ	च	वृ	यो	म	रू	शु	वृ	यो	वृ	अं	कु	मृ	यो		
१	०	०	०	०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१		
०	४	४	३	३	३	६	२	८	१	११	११	३	१	२	८		
१४	४	४	३	३	१	२१	७	२८	२०	१७	२२	२७	२०	२८	८		

शुक्रमहादशातर्गत- गुरुान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					शुक्रमहादशातर्गत- शुक्रान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्					शुक्रमहादशातर्गत- बुधान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.				
वृ.	च.	ल.	श.	यो.	व.	वृ.	मृ.	म.	यो.	वृ.	ल.	श.	यो.	
२	०	०	०	४	०	०	०	०	१	०	०	०	०	व
१०	११	४	८	१०	१०	३	२	२	७	६	०	१	१	८
३	११	२६	१६	२७	२१	१७	१०	२०	१९	३	२०	८	८	पा
५९	१६	१६	६७	१९	१९	६	११	१९	६	४०	६७	२६	२६	दि.
३८	३३	३९	२४	१४	६२	३७	६८	६८	२६	११	१६	१२	१२	७

गुरुमहादशा- तर्गतसू. म. विदशाचक्रम्.				शनिमहादशातर्गतश- नैरतर्दशामध्ये विद- शाचक्रम्.				शनिमहादशातर्गत- लग्नातर्दशामध्ये विद- शाचक्रम्.							
सू.	मं.	ल.	पा.	श.	ल.	शु.	चं.	बु.	यो.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यो.
०	०	०	१	३	१	१	०	०	७	१	०	०	०	०	२
१	३	१	२	६	२	२	१०	१०	७	२	७	७	२	३	६
२९	१	१२	२१	४	१	१	१६	१६	१०	२३	२७	२७	३	२०	१३
१८	४६	४५	४१	५३	३७	३७	१३	१३	३६	३४	५०	५०	२२	५३	३२
१६	५	२८	४९	४६	५५	५५	२७	२७	३२	०	२०	०	०	३०	१०

शनिमहादशातर्गतशु- क्रातर्दशामध्ये विद- शाचक्रम्.						शनिमहादशातर्ग- तचंद्रातर्दशाविद- शाचक्रम्.						शनिम. व. शुधैत- र्दशामध्ये विद- शाचक्रम्.					
शु.	ल.	श.	मं.	वृ.	यो.	चं.	वृ.	सू.	मं.	यो.	शु.	चं.	बु.	सू.	यो.		
१	०	०	०	०	२	०	०	१	०	१	१	०	०	०	०		
९	४	४	२	३	६	७	२	१	१	१	१	४	१	३	१०		
२३	२७	२७	३	२०	१३	३	११	२३	२३	१	६	१२	२६	९	२५		
३४	५०	५०	२२	५६	३२	३३	१९	२३	२३	३०	५४	१८	४२	१३	९		
०	२०	२०	०	३०	१०	१४	४	१९	१९	५६	२७	१९	१	४४	८		

शुभमहादशातर्गत- शुभातर्दशाविद- शाचक्रम्.					शुभमहादशातर्ग- तर्दशामध्येविद- शाचक्रम्.					शुभमहादशातर्ग- लग्नातर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					
बु.	वृ.	ल.	श.	पा.	वृ.	चं.	बु.	सू.	पा.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	पा.
२	०	०	०	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	७	७	१०	३	१	०	०	६	५	१	१	०	१	११
८	१	२	२	१३	२५	८	१६	२८	१९	१९	२६	२६	२४	१२	१८
७	१	१	१	२१	१८	२६	२८	४२	३	८	२८	२२	१	१७	२०
३५	३२	५४	५५	२	४३	१४	२३	३०	०	६	३२	५२	४४	१	१५

बुधमहादशान्तर्गतशन्यन्तर्दशामध्ये विदशा ।

श.	ल.	शु	चं.	वृ	यो.
०	०	०	०	०	०
५	१	१	१	१	११
१०	२३	२३	१०	१०	१८
१५	३५	३५	११	११	२०
१७	३६	२६	३३	३३	१५

इति विदशा संपूर्ण ।

जिस प्रकारसे विदशा करी है उसी प्रकार उपदशा करना किंचित् उपदशा भागे कहते हैं ।

उपदशा चक्रम् ।

सू. म. व. गू. गीतसु विदशा उपदशा चक्रम्				सू. म. व. सूर्यत भगल धिद उपदश चक्रम्				सू. म. दशा० लग्नत० मध्ये विदशामं उपदशा चक्रम्					
सू.	म.	व.	गू.	म.	सू.	श.	गू.	ल.	श.	श.	सू.	च.	यो.
४	१	०	६	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	४	७	३	२	४	२	३	५	१	१	०	१	१०
२८	२९	८	६	१५	२५	२	१८	६	२२	२२	२२	१	२२

इसी प्रकारसे उपदशा सब करना यहां ग्रंथके
बढनेके भयसे तीनही लिखा ।

जगदीशेन रचिते केशवीग्रंथटिप्पणे ॥

दशाधिकारः पूर्वोऽयं तद्भाषाथप्रकाशकः ॥ ७ ॥

इति दशाध्यायः समप्तः ॥ ७ ॥

अथ दशाकलाध्यायः ॥ ८ ॥

दशाप्रवेशकालसावनाहर्गणसाधनम् ।

शाकोऽब्दा जनि मध्यमार्कभयुतं मासादि तद्युग्दशा- ^{सूर्य}
ऽब्दाद्यं तत्र शके सभादितरणिर्मध्यो दशादौ भवेत् ॥

पक्षीभूतदशा पृथक् त्रिकुहता खांकाष्टतद्युता

सा स्यात्सावनिकाऽद्वयपल्युक्तद्युग् जनिद्युव्रजः ॥ ३५ ॥ ^{दशा}

अन्वयः—शाकोऽब्दा जनि शाक एवाब्दा वत्सरा कल्पाः, जनि मध्यमार्क-
भयुतं मासादि जन्मकालिकमध्यमार्कस्य राश्यादिकं मासादिः कल्पाः, जन्म-
शके एवं प्रथमदशाप्रवेशो ज्ञेयः, द्वितीयस्तु तेन वर्षादिना युक्तं दशाब्दाद्यं
कार्यम्, दशाब्दा शकेषु योज्या अथ मासाद्ये दशामासाद्यं योज्यम् एवं तत्र
शके अधस्थमासाद्यं, सभादि तरणिर्मध्यमो दशादौ भवेत् एवं तृतीयादि दशादौ
मध्यमो रविर्ज्ञेयः । तात्कालिकमासाद्यानयनं पक्षीभूतदशेति दिनीकतदशा
पृथक्स्थाप्या एकत्र त्रयोदश १३ तिगुण्या खांकाष्ट ८९० तिर्भिका लब्धेन
दिनाद्येन पृथक्स्था युक्ता कार्या तदा सावना दशा स्यात् यदा दशाद्वयपल्युक्ता
तदा तद्युग् जनिद्युव्रज इति तथा दशया युक् जनिद्युव्रजो जन्मकालिकाहर्गणः
सावपयः सूर्योदयकालिकोऽहर्गणः सूर्योदयादिष्टेन पक्षीपलेन युक्तस्तदा
सावपयः स्यादिति भावः । स एव दशाऽहर्गणः पूर्वोक्तप्रकारेण युतो वर्षादौ
द्वितीयादिदशाप्रवेशकालिकोऽहर्गणो भवति । एवं तृतीयादि ज्ञेया ॥ ३५ ॥

भाषाः—जन्मकालीन शकको प्रथम दशवर्ष युक्त करना और जन्मकालिक
मध्यमराश्यादि सूर्यको प्रथमदशाका मासादि राश्यादि मानके युक्त करना
तो वह दशवर्षयुक्त किया गया शकमें द्वितीयदशारंभमें मध्यम सूर्य होता है ।
प्रथमदशादिवसादि करके पृथक् रखके एक ठिकाने उसको १३ से गुणके
८९० से भागके जो दिवसादिकल आवेगा सो और दशवर्षतुल्य फल
पृथक् रखे अंक्रमे युक्त करना तो वह प्रथम सावन दशा होती है, अनंतर
वह जन्मकालीन सावपय अहर्गणमें युक्त करना, तो द्वितीय दशारंभका
अहर्गण होता है ।

(२४८)

केशरीजातकम् ।

शकको दशावर्ष युक्त करनेके कालमें सर्वदशा वर्षादि रखना प्रथमदशाके नीचे शक रखना और शकके नीचे जन्मकालीन मध्यम सूर्य रखना अनंतर सूर्यमें प्रथम दशामासादि युक्त करके वर्षशकमें युक्त करना ॥ ३५ ॥

उदाहरण—प्रथम सूर्यदशा वर्षादि १३।७।२७।१३।२८ इसके नीचे जन्मकालीन शक १८०८ यह वर्षमें मध्यम-सूर्य ०।११।११।५६ इसके प्रथमदशामासादि युक्त करके ८।८।२५।२४ और शकमें वर्ष युक्त करके १८२१ यह शकमें ८।८।२५।२४ मध्यम-सूर्य रहते सूर्यदशा पूर्ण होयके लग्न दशा प्रवेश गयी इसी रीतिसे सर्वदशा प्रवेश करना और इसी प्रकारसे विदशा और उपदशा प्रवेश करना, अथवा १५८ सूर्य और संवत् युक्त करना ।

दशाप्रवेशचक्रम् ।

सू.	ह.	घ.	म.	शु.	बृ.	श.	रु.	क्रो.
१३	७	९	२	१३	८	१५	४	७६
७	०	१	१	११	५	८	६	४
२७	७	२४	१७	६	२०	४	९	२७
१३	१२	५४	०	५४	४३	२०	४	२५
२८	३२	१९	५२	५०	५६	५६	३२	२६
१८०८	१८२१	१८२८	१८३७	१८३९	१८२३	१८६२	१८७८	१८८४
०	८	८	१०	११	११	४	०	५
११	८	१५	१०	२७	४	२५	२९	०८
११	२५	३७	३२	३३	२७	११	३२	३७
५६	२४	५६	१५	०७	५८	५४	५०	२२

उदाहरण करनेकी रीति.

प्रथम सूर्यदशा १३।७।२७।१३।२८ यह दिवसादि करके ४९१७-१ १३।२८ यह पृथक् ४३ से गुणके ६३९२३।५५।४ इसके ८९० से भाग के लग्न दिवस ७३, शेष ७३३।५५।४ इसके ६० से गुणके ४४०३५। ५ इसको ८९० से भागके लग्न घटिका ४९ शेष ४२५ । ४ इसको

६० से गुणके २५५०४ इसको ८९० से भाग देके लब्धि पल २८ और दशावर्षतुल्य पल १३ युक्त करके लब्ध दिवसादि ७१ । ४९ । ४१ यह पृथक् रक्खा जो दिवसादि दशा ४९१७ । १३ । २८ इसमें युक्त करके ४९८९ । ३ । ९ यह प्रथम सावन दशा भई जन्मकालिक अहर्गण जन्म कालीन इष्ट घटीसहित ११७८ । ३२ । १ यह सावयव अहर्गण इसके सावनदशा ४९८९ । ३ । ९ युक्त करके ६१६७ । ३५ । १० यह बुधदशारंतसमयमें सावयव अहर्गण भया । परंतु जब यह अहर्गण ४०१६ से ज्यादा आवे तब ४०१६ से भागके शेष रहे सो अहर्गण जानना और लब्धि आवे सो पूर्वमें आया जो चक्र उसमें युक्त करना अब यहां अहर्गण ६१६७ । ३५ । १० यह ४०१६ से अधिक है इसको ४०१६ से भागके लब्ध १ शेष २१५१ । ३५ । १० यह अहर्गण भया पूर्वोक्तचक्र ३३ लब्ध १ युक्त करके ३४ चक्र भया ॥ ३५ ॥

अहर्गणप्रयोजनमाह ।

तस्मात्सावयवाद्गणात्स्वकरणात्साध्या दशादौ खगाः
 क्षेपाज्जन्मखगान्प्रकल्प्य यदि वा साध्या दशा सावनात् ॥
 ते स्पष्टाश्च तिथिश्च संक्रमवशान्मासो दशादौ तनुः
 पूर्वोक्तं जडकर्म चात्र तु मया तल्लाघवं दर्शितम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—तस्मात्सावयवाद्दहर्गणादशादौ स्वकरणाज्जन्मकाले तस्मात्स्व-
 णाद्गणाः साधितास्तेन करणेन दशाप्रवेशाऽहर्गणाद्गणाः साध्याः । यदि जन्मख-
 गान्क्षेपान्प्रकल्प्य दशादौ सावयवात्सावनाऽहर्गणात्साधिता भया जन्मकालज-
 नितग्रहे क्षेप्यास्तदा ते दशादौ खगा भवन्ति एवं कृते सावनादशा भवन्ति अस्मा-
 दहर्गणादानीतोऽर्कः प्रजातेन दशाप्रवेशमध्यमह्येण समस्वदाहर्गणः शुद्धो ज्ञेयो
 नान्यथा । ततो दशादौ साधिता चन्द्रार्कान्यां ज्ञत्वा व्यर्कविधौर्लवा इत्यादिना
 तिथिः साध्या संक्रमवशान्मासो ज्ञेयः शुक्रादिमासेषु यस्मिन्मासे भेषसंक्रांति

भवति स चैत्रो मासो ज्ञेय इत्यादि वृषभादयो ज्ञेयाः । दशाप्रवेशे लग्नमपि साध्यं, स्वेष्टे पूर्वैः पूर्वाचार्यैः श्रीधरायैः सावनीदशानयने जडकर्म महतायासेन कृतमित्यर्थः । अतो मया लाघवं दर्शितम् ॥ ३६ ॥

भाषा:—पूर्वकाथित सावयव अहर्गणसे जन्मकालमें जिस पक्षका ग्रह किया होय उसी पक्षसे दशारंभमें ग्रह करना अथवा सावनदशातुल्य अहर्गणसे ग्रह करके उसमें जन्मकालीन ग्रह क्षेपक कल्पना करके युक्त करना तो वह दशारंभमें ग्रह होते हैं अनंतर वह स्पष्ट करना और सूर्य चन्द्रसे तिथि लाना यह केवल पांडित्य सावनीकरण पूर्वाचार्यने महान् प्रयाससे किया इसवास्ते वह जड कर्म है हमने तो उसकी यहां लाघवता कथन की है ॥ ३६ ॥

उदाहरण—लग्नदशारंभमें १८२१ शकमें सावयव अहर्गण २१५१।३५। १० इससे जो मध्यम सूर्य आवे सो पूर्व सिद्ध दशाप्रवेश कालिक मध्यमसूर्य ८।८।२५।२४ के बराबर होय तो यह अहर्गण शुद्ध है, अन्यथा अशुद्ध ग्रह समझनेके वास्ते पूर्वोक्त रीतिप्रमाण सारणीपरसे मध्यम सूर्य करते हैं:—अहर्गण २१५१ इसको ६० से भागके लब्धि ३५ और शेष ५१ यह शेष कोष्ठकके नीचेका सारणीमेंका अंक १।२०।१५।५७ इसको लब्ध्यंक ३५ इसके नीचेका राशि छोड़के भागादि अंक ४।२९।४६।० इसमेंसे प्रथमांकको ६ से भागके बाकी ४ इसका दूना ८ यह राश्यंक इसवास्ते ८।२९।४६।० यह लब्धि कोष्ठकफल और वक्र ३४ के नीचेका सारणीमेंका अंक ९।१७।४८। ४६ और घटीकोष्ठक ३५ और पलकोष्ठक १० इसके नीचेका अंक ०।०। ३४।३० और ०।०।०।१० यह युक्त करके ८।८।२५।२३ यह मध्यम सूर्य पूर्वमध्यमसूर्यके बराबर है । अथवा दशासावनाहर्गण ४९८९।३।९ इससे चक्रांकफल मिलाये विना मध्यम सूर्य ७।२७।१३।२७ इसको जन्मकालीन मध्यम सूर्य ०।११।११।५६ युक्त करके ८।८।२५।२३ यह वही मध्यम सूर्य आया इसी रीतिसे चन्द्रादि मध्यम करना ।

दशासाधनाहर्गणसे मध्यम ग्रह करते वक्त उसको सारणीमेंके चक्रके नीचेके अंक युक्त नहीं करना कारण उसको चक्रसंस्कृत जन्मकालीन ग्रह युक्त करना होता है। सूर्य मीनराशिके होयके जो सूर्यचन्द्रसे चैत्रमासांतकी तिथि आवे तो शक्यै एक युक्त करना तो अहर्गण बराबर आवेगा।

दशारंभसमये स्पष्टसूर्यादि ।

यहां पूर्वकथितप्रमाण सारणीपरसे दशारंभादिवसमें प्रातःकालीन स्पष्ट सूर्य ८।७।२७।२८ गति ६१।१७ चन्द्र ४।४।१०।२ गति ७३१।४३ इससे आई गततिथि ०४ इसवास्ते धनका सूर्य रहते पौषकृष्णपक्ष गया।

अब दशारंभसमय लिखते हैं ।

संवत् १८५६ शके १८२१ पौष कृष्ण पंचमी शुक्रवार १५ यहां अहर्गण २१५१ इस दिन सूर्योदयके अनंतर घटी ३५ पल १० इस समयमें स्पष्ट सूर्य ८।८।०२।०८ चन्द्र ४।११।५३।२२ लग्न ३।२६।२२।१२ कहिये कर्कलग्नमें २विदशा निवृत्ति (समाप्ति) और लग्नदशा प्रवृत्ति (प्रारंभ) आई इसी रीतिसे सर्वग्रहोंकी दशा, अंतर्दशा, विदशा, उपदशा प्रवृत्ति समयमें स्पष्ट सब ग्रह और लग्न करके दशापतिसे फलका विचार करना ।

सूर्यचन्द्रसे तिथि करण नक्षत्र और योग लानेका प्रकार ।

स्पष्टचन्द्रमेंसे स्पष्ट रवि कम करके जो बाकी रहै उसका अंश करके उसको १२ से भागके जो भागाकार आवे वह गततिथि जानना और जो अंशादिक बाकी रहैगा वह भुक्त तिथि होगी वह १२ अंशमेंसे कम करके जो बाकी रहै सो भोग्य तिथि जानना, अनंतर भुक्त तिथि और भोग्य तिथि इनकी विकला करके उसको क्रमसे ६० से गुणके जो गुणाकार आवै उसको क्रमसे रविचन्द्रस्पष्टगतिके अंतरके विकलासे भागके जो भागाकार घटिकादि आवेगा वही क्रमसे भुक्ततिथि और भोग्यतिथिकी घटी जानना ।

गततिथि जो होय उसको २ से गुणके ७ से भाग देना और बाकी मात्र लेना वह व्यवकरणसे तिथिके पूर्वार्धमें करण होते हैं उसमें १ युक्त करे तो तिथिके उत्तरार्धमें करण होते हैं अनंतर तिथिकी भुक्तभोग्यकी घटीका योग करके उसका अर्ध करना और उसमेंसे भुक्तघटी कम करना तो करणकी घटिका होती है जो तिथिकी भुक्तघटी सुमार ३० से घटिका ऊपर होय तो तिथिकी भुक्तभोग्यघटीमेंसे भुक्तघटी कम करना तो करणकी घटिका होती है, कृष्ण-पक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्धमें राहुनी करण और कृष्ण पक्षकी अमावस्याको पूर्वार्धमें चतुष्पद करण उत्तरार्धमें नाग करण और शुद्धप्रतिपदाको पूर्वार्धमें किंस्तुघ्न करण यह स्थित करण हैं. करणोंके नाम:-बव १ बालव २ कौलव ३ तैतल ४ गर ५ वणिज ६ भद्रा ७ अथवा विष्टि अथवा कल्याणी नाम है ।

स्पष्ट चन्द्रकी कला करके उसको ८०० से भागके जो भागाकार आवे सो गत नक्षत्र जानना और जो बाकी कलादि रहेगा वह गत नक्षत्रके आगेका भुक्त नक्षत्र होता है. वह ८०० कलामेंसे कम करके जो बाकी रहेगा वह भोग्य नक्षत्र जानना. अनंतर भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी विकला करके उसको ६० से क्रमसे गुणना उसको क्रमसे चन्द्रस्पष्टगतिके विकलासे भाग देना जो क्रमसे भागाकर आवे सो घटिकादि आवे वह क्रमसे भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी घटिका जानना ।

४ स्पष्ट सूर्य चन्द्रके योगकी कला करके उसको ८०० से भागके जो भागाकार आवे सो गत योग जानना और जो बाकी कलादि रहेगा सो भुक्त योग तथा सो ८०० कलामेंसे कम करके जो बाकी रहेगा सो गत योगके आगेका भोग्य योग जानना । अनंतर भुक्त योग और भोग्य योग इनकी विकला करके उसको क्रमसे ६० से गुणना और जो अनुक्रमसे गुणाकार आवे उसको सूर्यचन्द्रके स्पष्टगतिके अंक विकलासे भाग देना जो अनुक्रमसे भागाकार आवे वह घटिकादि आवेंगे वह क्रमसे भुक्त योग और भोग्य इनकी घटिका जानना ।

उदाहरणः—जन्मकालीन स्पष्ट चन्द्र ९।५।२२।३५ इसमेंसे स्पष्टरवि ०।१३।१०।४२ कम करके ९।२२।११।५३ इसके अंश २६२।११।५३ इसमें अंशको १२ से भागके २१ गत तिथि शेष १०।११।५३ यह भुक्त तिथि ७ शेषको १२ मेंसे कम करके १ । ४८ । ७ यह भोग्य तिथि सप्तमी अब भुक्त तिथिकी विकला ३६७।१३ इसको ६० से गुणके २२०२७८० इसको चन्द्रगति ७३१।४३ रविगति ५८ । १४ का अंतर ६७३।२९ की विकला ४०४०९ से भागके ५४ घटी ३० पल यह सप्तमीकी भुक्त घटिका भई । अनंतर भोग्य तिथिकी विकला ६४८७ को ६० से गुणके ३८९२२० स्पष्ट रविचंद्र गतिके अंतरकी विकला ४०४०९ से भागके ९ घटी ३८ पल यह सप्तमीकी भोग्य घटिका भई ।

गत तिथि ६ को २ से गुणके १२ इसको ७ से भागके शेष ५ इसवास्ते सप्तमीके पूर्वाद्धमें गरकरण और उत्तरार्धमें वणिजकरण अब तिथिकी भुक्त घटी ५४।३० और भोग्य घटी ९।३८ युक्त करके ६४।८ इसमें भुक्त घटी ५४।३० कम करके ९।३८ यह गर करणकी घटिका भई ।

चन्द्र ९।५।२२।३५ इसकी कला १६५२२ विकला ३५ इसको ८०० से भागके २० गत नक्षत्र बाकी ५२२ । ३५ यह भुक्त नक्षत्र उत्तराषाढा बाकीके अंकको ८०० आठ सौ कलामेंसे कम करके शेष २७७ । २५ यह भोग्य नक्षत्र उत्तराषाढ भया ।

अब भुक्त नक्षत्रकी विकला ३१३५५ इसको ६० से गुणके १८८१।३०० इसको चन्द्रगति विकला ४३९०३ इससे भागके ४२ घटी ५१ पल यह उत्तराषाढा नक्षत्रकी भुक्त घटिका भई अनंतर भोग्य नक्षत्रकी विकला १६६४५ इसको ६० से गुणके ९९८७०० इसको चन्द्रगतिकी विकला ६३९०३ से भागके २२ घटी ४५ पल यह उत्तराषाढाकी भोग्य घटिका भई ।

स्पष्ट सूर्य० १३१० १४२ चन्द्र ९।५।२२।३५ इनका योग ९।१८।
 ३३।१७ इसकी कला १७३१३।१७ इसको ८०० से भागके २१ गतयोग
 बाकी ५१३।१७ साध्य भुक्त योग शेष ८०० आठसौमेंसे कम करके २८६।
 ४३ यह साध्य योग भोग्य अब भुक्त योगकी विकला ३०७९७ इसको ६०
 से गुणके १८४७८२० इसको रविगति ५८।१४ चन्द्रगति ७३१।४३
 इनका योग ७८९।५७ इसकी विकला ४७३९७ इससे भागके ३८ घटी
 ५९ पल यह साध्ययोगकी भुक्त घटिका भई ।

अनंतर भोग्य योगकी विकला १७२०३ इसको ६० से गुणके
 १०३२१८० इसको रविचन्द्रकी स्पष्टगतिकी विकला ४७३९७ इससे
 भागके २१ घटी ४७ पल यह साध्य योगकी भोग्य भोग्य घटिका भई इस
 प्रकारसे तिथि नक्षत्र योग करणकी भुक्त योग्य घटी करना ।

यहां जन्मदिनमें भोग्य तिथि, नक्षत्र योग इनकी घटिका और ज-
 न्मकालिक भुक्त नक्षत्रयोग इनकी घटिका युक्त करके जन्म समय ३२
 घटिका बराबर मिलते हैं ॥ ३६ ॥

ग्रहदशायां प्रतिदिनचन्द्रफलम् ।

चन्द्रः प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृदुच्चस्वर्क्षसंस्थो दशा-

नार्थाद्धीनवसप्तमोपचयगो दद्याच्छुभानीति च ॥

यस्मिन् भेऽत्र विधुः स जन्मनि तनुस्वायादिभावो यदा

तत्तद्वृद्धिकरोऽयं तत्क्षयकरः प्रोक्तेतरस्थानगः ॥ ३७ ॥

अन्वयः—प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृदे तदुच्चे तत्स्वांशे भवति चन्द्रस्तदा च पुन-
 र्दशेश्वात्वं च मनवमसप्तमवृत्तीयपञ्चदशैकादशस्थानस्थचन्द्रो भवति । तदा चन्द्रः
 शुभानि दद्यात् एवं शुभफलप्रदश्चन्द्रो दशायां यस्मिन् भावे वर्तते स राशिज-
 न्मकाले यस्मिन् भावे वर्तते तद्भावं शुभं करोति यदि चन्द्रराशिस्तनुभावे
 स्यात् तदा तनुसौख्यकरः स्यादेवं धनादिभावेऽपि । यदि कथितेतरस्थानमस्तदा

क्षयकरो हानिकरः स्यात् । प्राक्तेतरस्थानस्यायमर्थः—चन्द्रः प्रातदशेश्वरस्य
सुहृदादिस्थानादितरस्थानगः वैरिनीचादिस्थित इति ॥ ३७ ॥

भाषाः—जिस ग्रहकी दशा होय उस ग्रहके मित्रग्रहमें उच्चग्रहमें वा स्वग्रहमें
होकर दशापतिसे ५।९।७।३।६।१०।११ इन स्थानमें चन्द्र होय तो शुभफल
देता है सो ऐसी दशामें जिस राशिका चन्द्र होय वह राशि जन्मकालमें तनु-
भाव होय तो शरीरवृद्धिकारक, वह राशि धनभाव होय तो धनवृद्धिकारक,
आयभाव होय तो लाभकारक और आदि शब्दसे सहज भाव होय तो भ्रातृ-
मुख, सुहृद्भाव होय तो मित्रमुख सुतभाव होय तो पुत्रमुख, रिपुभाव
होय तो वैरिनाशकारक, जायाभाव होय तो स्त्रीमुख, मृत्युभाव होय तो मृत्यु-
नाशकारक, धर्मभाव होय तो धर्मभाग्यकारक, दशम भाव होय तो कर्मफल-
कारक, व्ययभाव होय तो व्यय नाशकारक सहजादिभावोंका . भ्रातृमुखादि
फल कथन किया है तैसाहि पराकमादि मुखभी जानना यहां शुभसूचन कथित
है, इसवास्ते और मृत्यु व्यय इन भावोंके फल विपरीत जानना पूर्वकथित
स्थानसे इतर स्थानमें कहिये दशेश्वरके शत्रुग्रहमें किंवा नीचमें चन्द्र होयके
दशापतिसे १।२।४।८।१२ इन स्थानमें होय तो भावक्षय, फलकारक होताहै
कहिये दशामें जिस राशिको ऐसा चन्द्र है । वह राशि . जन्मकालमें तनुभाव
होय तो शरीरहेशकारक, धनभाव होय तो धनहानिकारक, इसी प्रमाण
सहजादि भावफल योजना करना यहां विपरीत शत्रु, मित्र, व्ययभाव होय
तो वह भाव शत्रु मृत्यु . व्ययकारक ही होता है ॥ ३७ ॥

दशाफलदशारिष्टदशारिष्टभंगः ।

यद्द्रव्यं स्वचरस्य भावग्रहद्वयोर्भागादि सर्व फलं
योज्यं वृत्तिकृतिर्वलादिह दशायां चाय यो वैरियुक् ॥
पापः पापदशां विशेषतः च विपत्कर्ताथ तद्भगद-
स्तत्काले बलवान् स्वगः शुभसुहृद्विष्टदशार्थः ॥ ३८ ॥

अन्वयः—यस्य ग्रहस्य यद्व्यं ताग्रं स्यादित्यादि भावफलं राशिफलं दृष्टि-
फलं योगफलम् आदिशब्दादुचनीचमूलत्रिकोणं, वृत्तिरुतिर्जीविका इति सर्वं
तस्य ग्रहस्य दशायां वाच्यं बलादिति सबले यथोक्तं पूर्णफलं भवति, मध्ये
मध्ये, हीनबले हीनं फलम् । अथो यो ग्रहो वैरियुक् शत्रुयुगित्यर्थः, पापग्रहः
पापदशायां विशति अर्थात्पापदशायां पापस्यांतरे प्राप्ते स पापो विपत्कर्ता हानि-
कर्ता स्यात् । यदि कश्चिद्ग्रहो बलवान् शुभमित्रेण दृष्टेऽथवा मित्रपद्वर्गो वा
ब्रह्माधिकः स तद्रंगदः स्यात् ॥ ३८ ॥

भाषाः—जिस ग्रहका जो ताम्रादि द्रव्य और भावफल राशिफल, शत्रु, नीच
मूलत्रिकोणादि, जीविकाकर्म इत्यादि सब फल दशामें वह ग्रह देता है बल-
सदृश अधिक बली होय तो पूर्णफल, मध्यममें मध्य फल, हीनबलमें न्यून फल
होता है । पापग्रहोंके दशामें शत्रुयुक्त पापग्रहका अंतर आवे तो विपत्कर्ता मरण
जानना परंतु यदि उस समय कोई शुभग्रह बली होयके देखता होय या मित्र-
ग्रह देखता होय वा शुभ मित्रोंके गृहादि वर्गोंमें रहनेवाला ग्रह देखता होय तो
भंगकर्ता होता है ॥ ३८ ॥

अथाष्टकवर्गफलमाह ।

खेटस्तस्य यदष्टवर्गजफलं पूर्णं शुभं जन्मत-

न्विन्दोर्वृद्धिषु च स्वभोजमसुहृदे स्वत्रिकोणेऽस्ति यः ॥

दुष्टं मध्यफलं विपर्ययगतस्थानिष्टमप्युत्कर्तं

शस्ते स्वल्पतरं खगस्य च वदेज्ज्ञात्वा बलं तत्त्वतः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—जन्मनि तन्विन्दोर्लघुचन्द्राभ्यामित्यर्थः । वृद्धिषु उपचयस्थानेषु
३।६।१०।११ स्वभो स्वोच्चे सुहृदे स्वमूलत्रिकोणेऽस्ति यो ग्रहस्तस्य यदष्टकवर्ग-
जफलं शुभं तत्संपूर्णं दुष्टं फलं मध्यमम्; एवमनुपचयस्थानगो ग्रहः शत्रुनीचादिग-
स्तस्याशुभं अप्युत्कर्तमशुभं स्यात्तथा शुभं फलं स्वल्पतरं स्यादित्यादि सर्वग्रहस्य
पदवर्गबलं ज्ञात्वा तत्त्वतः फलं वदेत् यथा पूर्णबले ग्रहे पूर्णं शुभाशुभफलं मध्ये
मध्यं हीने हीनमित्यर्थः ॥ ३९ ॥

भाषाः—जो ग्रह जन्मलग्न और जन्मके चन्द्रसे ३।६।१०।११ इन स्थानोंमें होकर स्वगृहमें स्वोच्चमें वा स्वमूल त्रिकोणमें होता है उसका अष्टवर्गजफल शुभ जानना, अशुभफल स्वल्प जानना और पूर्वस्थानसे भिन्न स्थानोंमें अर्थात् ३।२।४।५।७।८।११।१२ इन स्थानोंमें होकर शत्रुगृहमें वा नीच राशिमें रहता है, उसको अष्टवर्गजफल अशुभफल पूर्ण जानना और शुभफल स्वल्प जानना जन्मलग्नसे और जन्मराशिसे उचयस्थानमें और शत्रुगृहमें वा नीचमें जो ग्रह रहता है उसका अष्टवर्गज शुभफल मध्यम और अशुभ फल किंचित् न्यून जानना । अथवा इतर स्थानमें होके स्वगृहोच्चादिरिच्यत रहते अशुभ फल मध्यम और शुभफल किंचित् न्यून जानना वह अष्टवर्गजफल यहाँके पङ्क्त्यल प्रमाण जानना ग्रह पूर्ण बल होय तो यथोक्त फल न्यून बल होय तो न्यून फल और अन्तर्गत होय तो फल नहीं ऐसा जानना ॥ ६९ ॥

अथ कचिज्जातकफलव्यभिचारे कर्तव्यतामाह ।

जीवेत्कापि विभंगरिष्टजशिशू रिष्टं विना मीयतेऽ-

थाद्योद्दः शिशुदुस्तरोऽपि च परो कार्येषु नो पत्रिका ॥

कार्या प्रश्ननिमित्तपूर्वशकुने रक्षन्स्वमानं धिया

होराज्ञेन सुबुद्धिना हि बहुधोदकंश्च कालो बली ॥ ४० ॥

अन्वयः—कापि कचित्स्थले विभंगजो रिष्टमंगरहित इत्यर्थः जीवेत् क्वापि रिष्टं विना मीयते (म्रियते इति व्यभिचारः । चाद्योद्दः प्रथमोद्दः शिशोर्दुस्तरः प्रसवज्वरादितयादित्यर्थः । तथाऽऽरौ द्वितीयतृतीयाद्यौ दुस्तरौ दन्तजननं यावत् अत एव त्रिषु वर्षेषु पत्रिका नो कार्या भंगादिकं विचारयित्वा वर्षत्रयमध्येऽपि पत्रिका कार्या कैः प्रश्ननिमित्तपूर्वशकुनैः प्रश्ने निमित्तपूर्वर्द्धमैर्बलोपश्रुताद्यैस्तथा शकुनैः शुभशकुनैः शुभवस्तु यदि श्रुतिदर्शनगम इत्यादिभिः शुभं ज्ञात्वा पत्रिका कार्या । किं कुर्वन्स्वमानं रक्षन् गणकेनेत्यध्याहारः । किं विशिष्टेन होराविज्ञेन पुनः सुबुद्धिना हि यस्मात् उदकीं भावी कालो बली स्यात् ॥ ४० ॥

भाषाः—कभी कभी अरिष्ट भंग रहते विना बालक जीता है और कभी कभी अरिष्टयोग न रहते भी मरण पाता है ऐसा जातकफलमें व्यभिचार देखते

अन्वयः—यस्य ग्रहस्य यद्व्यं ताम्रं स्यादित्यादि भावफलं राशिफलं दृष्टि-
फलं योगफलम् आदिशब्दादुच्चनीचमूलत्रिकोणं, वृत्तिकृतिर्जीविका इति सर्वं
तस्य ग्रहस्य दशायां वाच्यं बलमिति सबले यथोक्तं पूर्णफलं भवति, मध्ये
मध्यं, हीनबले हीनं फलम् । अथो यो ग्रहो वैरियुक् शत्रुयुगित्यर्थः, पापग्रहः
पापदशायां विशति अर्थात्पापदशायां पापस्यांतरे प्राप्ते स पापो विपत्कर्ता हानि-
कर्ता स्यात् । यदि कश्चिद्ग्रहो बलवान् शुभमित्रेण दृष्टेऽथवा मित्रपद्वर्गगो वा
इष्टाधिकः स तद्गदः स्यात् ॥ ३८ ॥

भाषाः—जिस ग्रहका जो ताम्रादि द्रव्य और भावफल राशिफल, शत्रु, नीच
मूलत्रिकोणादि, जीविकाकर्म इत्यादि सब फल दशामें वह ग्रह देता है बल-
सदृश अधिक बली होय तो पूर्णफल, मध्यममें मध्य फल, हीनबलमें न्यून फल
होता है । पापग्रहोंके दशामें शत्रुयुक्त पापग्रहका अंतर आवे तो विपत्कर्ता मरण
जानना परंतु यदि उस समय कोई शुभग्रह बली होयके देखता होय या मित्र-
ग्रह देखता होय वा शुभ मित्रोंके गृहादि वर्गोंमें रहनेवाला ग्रह देखता होय तो
भंगकर्ता होता है ॥ ३८ ॥

अथाष्टकवर्गफलमाह ।

खेटस्तस्य यदष्टवर्गजफलं पूर्णं शुभं जन्मत-

न्विन्दोर्बुद्धिषु च स्वभोचभसुहृदे स्वत्रिकोणेऽस्ति यः ॥

दुष्टं मध्यफलं विपर्ययगतस्थानिष्टमप्युत्कटं

शस्तिं स्वल्पतरं खगस्य च वदेज्ज्ञात्वा बलं तत्त्वतः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—जन्मानि तन्विन्दोर्बुद्धिषु च स्वभोचभसुहृदे स्वत्रिकोणेऽस्ति यो ग्रहस्तस्य यदष्टकवर्ग-
जफलं शुभं तत्तत्पूर्णं दुष्टं फलं मध्यमम् । एवमनुपचयस्थानगो ग्रहः शत्रुनीचादिग-
स्तस्याशुभं अप्युत्कटमशुभं स्यात्तथा शुभं फलं स्वल्पतरं स्यादित्यादि सर्वग्रहस्य
पञ्चवर्गबलं ज्ञात्वा तत्त्वतः फलं वदेत् यथा पूर्णबले ग्रहे पूर्णं शुभाशुभफलं मध्ये
मध्यं हीने हीनमित्यर्थः ॥ ३९ ॥

भाषाः—जो ग्रह जन्मलग्न और जन्मके चन्द्रसे ३।६।१०।११ इन स्थानोंमें होकर स्वगृहमें स्वोच्चमें वा स्वमूल त्रिकोणमें होता है उसका अष्टवर्गजफल शुभ जानना, अशुभफल स्वल्प जानना और पूर्वस्थानसे भिन्न स्थानोंमें अर्थात् १।२।४।५।७।८।११।१२ इन स्थानोंमें होकर शत्रुगृहमें वा नीच राशिमें रहता है, उसको अष्टवर्गजफल अशुभफल पूर्ण जानना और शुभफल स्वल्प जानना जन्मलग्नसे और जन्मराशिसे उच्चवस्थानमें और शत्रुगृहमें वा नीचमें जो ग्रह रहता है उसका अष्टवर्गज शुभफल मध्यम और अशुभ फल किंचित् न्यून जानना । अथवा इतर स्थानमें होके स्वगृहोच्चादिरिथित रहते अशुभ फल मध्यम और शुभफल किंचित् न्यून जानना वह अष्टवर्गजफल ग्रहोंके पङ्चम प्रमाण जानना ग्रह पूर्ण बल होय तो यथोक्त फल न्यून बल होय तो न्यून फल और अमृतगत होय तो फल नहीं ऐसा जानना ॥ १९ ॥

अथ कचिज्जातकफलव्याभिचारे कर्तव्यतामाह ।

जीवेत्कापि विभंगारिष्टजशिशू रिष्टं विना मीयतेऽ-

थाद्योऽब्दः शिशुदुस्तरोऽपि च परो कार्येषु नो पत्रिका ॥

कार्या प्रश्ननिमित्तपूर्वशकुनै रक्षन्स्वमानं धिपा

होराज्ञेन सुबुद्धिना हि बहुषोदकंश्च कालो बली ॥ ४० ॥

अन्वयः—कापि कचित्स्थले विभंगजो रिष्टमंगरहित इत्यर्थः जीवेत् क्वापि रिष्टं विना मीयते (म्रियते इति व्याभिचारः । चाद्योऽब्दः प्रथमोऽब्दः शिशोर्दुस्तरः प्रसवज्वरादिभयादित्यर्थः । तथाऽपरौ द्वितीयतृतीयाद्यौ दुस्तरौ दन्तजननं यावत् अत एव त्रिषु वर्षेषु पत्रिका नो कार्या भंगादिकं विचारयित्वा वर्षत्रयमध्येऽपि पत्रिका कार्या कैः प्रश्ननिमित्तपूर्वशकुनैः यश्चे निमित्तपूर्वैर्लघ्वैर्घोषश्रुताद्यैस्तथा शकुनैः शुभशकुनैः शुभवस्तु यदि श्रुतिदर्शनगम इत्यादिभिः शुभं ज्ञात्वा पत्रिका कार्या । किं कुर्वन्स्वमानं रक्षन् गणकेनेत्यध्याहारः । किं विगिष्टेन होराज्ञेन पुनः सुबुद्धिना हि यस्मात् उदको भावी कालो बली स्यात् ॥ ४० ॥

भाषाः—कभी कभी अरिष्ट मंग रहते विना बालक जीता है और कभी कभी अरिष्टयोग न रहते भी मरण पाता है ऐसा जातकफलमें व्याभिचार देखते

हैं तैसाही प्रथमवर्ष बालकको दुरतर है और आगेको दो वर्ष इस बालकके दुरतर हैं इसवास्ते ३ वर्षतक पत्रिका नहीं करना कारण भावी फल बहुत प्रकारका है और कालभी दुर्विज्ञेय है, बुद्धिमान् गणकने तात्कालिक लग्न-बलोपश्रुत्यादि शकुनमे शुभफल जानके बुद्धिके योगसे अपनी प्रतिष्ठा रखके सर्वदा यह तीन वर्षमें और आगे भी जन्मपत्रिका करना ॥ ४० ॥

ग्रंथोपसंहारः ।

नंदिग्रामे केशवो विप्रवर्यो योऽभृद्धोराशास्त्रसंघं विलोक्य ॥

तेनोक्तेयं पद्धतिर्जातकीया चत्वारिंशद्वृत्तबद्धा सुबोधा ॥ ४१ ॥

अन्वयः—यः केशवो विप्रवर्यो नंदिग्रामे आसीत् तेन होराशास्त्रसंघं विलो-
क्य होरा एव शास्त्रं होराशास्त्रं होराशास्त्रसमूहं विलोक्य जातकीया पद्धतिरुक्ता
किं विरिष्टा चत्वारिंशद्वृत्तबद्धा पुनः कथंभूता सुबोधा ॥ ४१ ॥

भाषाः—दक्षिणदेशप्रसिद्ध नंदिग्राममें केशव यह नाम करके ब्राह्मणश्रेष्ठ
रहता रहा उसने जातकशास्त्रसमूह देखकर उसमें सदुक्त असदुक्त भांत्सुक्त
बहुमत अल्पमत क्या है इसका विचार करके चालीस श्लोककी सुगम पंक्ती
यह जातकपद्धति रचना किया ॥ ४१ ॥

ग्रंथप्रशंसामाह ।

ये सुबोधा पठन्तीमामग्यां जातकपद्धतिम् ॥

होरावित्पदवीं याति लोके मानं यशश्च ते ॥ ४२ ॥

अन्वयः—ये गणका इमां सुबोधां जातकपद्धतिं पठन्ति किंभूतामग्यां ते
लोकं होरावित्पदवीं याति मानं यशश्च लभन्ते ॥ ४२ ॥

भाषाः—जो ज्योतिषी इस जातकपद्धतिको अध्ययन करेंगे वह लोकमें
देवतादवी और गौरव कीर्ति यशको प्राप्त होंगें ॥ ४२ ॥

जगदीशेन विदुषा नारनौलनिवासिना ।

नृगिरा केशवीं कृत्वा केशवायार्पिता मुदा ॥ ८ ॥

इति दशाफलाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥

इति केशवीजातकं समाप्तम् ।

चरसारिणीप्रवेशपत्रम् ।

मंदस्पष्ट सूर्यको अयनांश युक्त करके उसका भुज करके भुजका भाग करना यहां सारणीमें ३० अंशके अंतरसे ३ ठिकाने ९० अंशकोष्ठक लिखके वह कोष्ठकके नीचे प्रत्येक अंशका फल विकलादि लिखा है उसमेंसे जो अंशोष्ठ अंश होय उसके नीचेका फल लेके इष्टांशके नीचे जो कला विकला होय उसको अंशकोष्ठकके सामने दहने तरफ जो गुण लिखा है उसमें गुणके जो गुणाकार आवे उसको गुणके नीचे जो हर लिखा है उससे भागके जो फल प्रतिकलात्मक आवे वह लेके पूर्वफलमें युक्त करना तो चर होता है वह चरसायनसूर्य मेपादि ६ राशिको होय तो कर्ण और तुलादि ६ राशिको होय तो धन जानना ।

उदाहरणः—जन्मकालिक मन्दस्पष्ट रवि ०।१३।१२।३ इसमें अयनांशा २२।४४।३ यह युक्त करके १।५।५६।६ यह सायन रवि, इसका भुज १।५।५६।६ इसके अंश ३५।५६।६ यहां ३५ अंश हैं इसवास्ते ३५ अंशकोष्ठकका नीचेका विकलादिफल ७९।२० इसको अंशके नीचे कला ५६ और विकला ६ है इसको अंशकोष्ठकके सामने गुण २८ है इससे गुणक १५७०।४८ इसको गुणके नीचे हर १५ इसमें भागके १०४ प्रति कला युक्त करके ८१।४ यह सायन सूर्य वृषराशिका है इसवास्ते कर्ण जानना ।

बहुविधदेशोंकी अक्षता ।

नगरनाम	घ.	प.	नगरनाम	घ.	प.	नगरनाम	घ.	प.	नगरनाम	घ.	प.
भलवर	६	१६	केदार	७	८	जिछेई	५	३६	नाशिक	४	२५
भमवाबाद	५	२	कोरुआपुर	३	३०	जवनपुर	५	४७	नागपुर	४	३९
सहभदनगर	५	०	कोरुग्राम	४	२५	जवूमर	४	४८	नागो	४	५१
भजमेव	५	४५	कोकण	३	१५	जरालाबाद	५	१०	नारनख	६	१४
भयोध्या	६	७	कृष्णगढ	६	०	जालथर	६	५१	नेपल	५	२५
भमकोट	५	२५	खंभाहत	४	५१	जुनागढ	५	३१	नेमिप्यारण्य	५	५५
भपस्टेला	६	२५	खंधार	०	०	जुनर	५	०	पटियाला	४	१
भवरगावाव	४	३१	खमात	४	५१	जोधपुर	५	४८	पटारपुर	४	०
भयपटण	५	४०	गंगासागर	४	५६	झापी	५	४३	प्रयाग	५	४२
भजमेर	२	६	गढा	६	६	ठकारा	५	३५	प्रकासा	४	४०
भतिवग	५	१	गंगोठ	५	६	टोधा	५	१७	प्रकाण	४	५
भभनसर	७	२४	गहौरा	५	४५	ठडा	५	३६	पाणिपत	६	१०
भाया	६	७	गेषा	५	१०	ठगनपुर	५	३	पाथर्या	४	३०
भाजमगढ	५	५२	गणशुक्र	६	४	तंजावर	२	७	पाडव	५	१
इंदार	५	३०	गाजीपुर	५	०१	तोरला	६	३६	पुणे	४	०
इटावा	६	०	गाल्हेर	५	५४	ताजपुर	५	४३	पुरवोत्तमक्षेत्र	५	४२
सजनी	५	६	गुवापुर	५	१०	तैलंग	४	४	पुष्कर	५	५२
सखनगढ	५	१०	गुजरात	४	४८	दरभंगा	५	५३	पठण	४	३०
उदेपुर	५	३०	गोमांरक	३	२०	दामरक	५	०	बडोदा	४	५४
उरकळ	५	४३	गोपाठ	३	३०	दामनपुर	५	४५	बलसाड	४	४०
उमरावती	४	३४	गोल्कुडा	३	४५	हारका	६	५	बरहान	५	१
सोतकमंडु	२	२५	गोलग्राम	४	०	दिल्ली	६	३४	बन्हाणपुर	४	३०
सोहडा	५	४५	गोरखपुर	६	८	देवगढ	६	४	ब्रह्मपुरी	५	२०
सोट	४	६	गोरुठ	५	५५	देवग्राम	४	४०	बजवाडा	६	५७
कलवत्ता	४	५७	पनदनी	४	४०	दौलताबाद	३	३०	बाणपुर	४	३०
कपिश	६	१६	चदेली	५	०	धवरपुर	५	१२	बागमंगा	४	३०
कटक	४	२८	चाटसुपुर	५	४५	घालक	५	२	बितिषा	६	२
काशिक्षेत्र	५	४५	चिन्नेड	५	३०	धामोनिगढ	५	१०	विजापुर	३	३०

कानपुर	५ २१	चित्ररूट	५ ३०	नगसरी	४ ४२	बिकानेर	६ २१
काशिमर	७ ५५	छपरा	५ ४७	नगाकोट	७ २०	बूदीकोदा	६ ९
काबिल	८ ३०	जयपुर	६ ४	नडोबाद	५ २	भाविपुर	४ ५२
काची	२ ३०	जन्म	७ ४०	नरवर	५ ४५	भरतपुर	६ १९
कान्पुञ्ज	६ ०	जन्मपुर	५ ८	नयनीताल	६ ४५	भृगुक्षेत्र	४ ८
कुरुक्षेत्र	६ ४५	जगन्नाथ	५ ३०	नर्मदा	४ ४७	भोजपुर	५ ४५
भागलपुर	५ ३०	झेंसूर	२ ३६	बघवनगर	५ २७	सिंहज	५ ०
मन्मूदाबाद	५ २४	भूषाळ	५ १०	दलय	८ ७	सिंघपुर	४ ४०
मडी	७ २४	रत्नागिरा	३ ४१	पट्टीपुर	४ ३	सिंहगढ	७ ३०
मद्रास	२ ४७	रनथम	५ ३०	बटेश्वर	५ ४८	सुरत	४ ३९
मराठा वडा	६ ९	रनद	६ ६	बटल	७ ३	सोलापुर	३ ४९
मथुरा	६ ०	रामेश्वर	१ ५०	विजयनगर	४ १२	सामनाथ	५ ३९
महल	६ ४६	रामनगर	५ ०	बेठगाँव	३ २५	सौमपय	६ ४०
माढा	४ ५०	राजो	५ ३६	बैठ	६ २७	सगमनेर	४ २०
मंडभावल	४ ४७	राजाधिल	४ ४४	शरगपुर	४ ४६	समल	६ ३
मालपुर	५ ४५	राजपुर	५ ३०	खासगढ	४ २८	सगापुर	५ १४
मंडिया	५ १	रायपुर	४ ३६	शाराज	४ ४८	हरितनापुर	६ ३०
मलवा	५ ३०	राजमहाल	५ ४५	शातपुर	४ २०	हरद्वार	६ ५६
मंडागढ	४ ५७	गिवा	५ ३०	श्रीनगर	६ ४६	हरदा	४ ४९
मिथल	६ ८	गवा	४ ४४	खुम्मा	१० ३	हैद्राबादसिध	५ ४१
मराज	३ ३७	राहितक	६ २९	सगा	७ १५	मद्राबादनेजा	३ ४६
मिरजापुर	५ ३५	गहिद श	५ २८	समबाबाद	६ ५०	बल यत छडन	१५ ६
मुबई	४ ७	लखनऊ	५ ४८	सद्वारा	५ १७	शरगपट्टण	२ ३९
मुल्तान	६ ४५	लखगपुर	५ ३०	सातारा	३ ५१	मनुचणामेश्वर	२ ६
मुगरी	५ ५६	लक्ष्मणतो	५ ४८	सागर	५ १८	छाती	६ २५
मुरार	७ ३०	लक्ष्मणवास	३ २०	सवतवाडा	३ ३६	पटव	५ ४५
मेरता	५ ५५	लहो	७ २३	सिरी	५ १८	पने रो	६ १८

माषोदाहरणसहितम् ।

(२६३)

दशसारेणचक्र ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

दशमज्ञावसारिणीचक्र ।

[illegible]

लग्नसारणीप्रवेश अयनांशः २२.

सारणीमें दहने तरफ मेवादि मीनतक १२ राशि लिखी हैं और ऊपरके तरफ ३० अंशकोष्ठक लिखा है उसमेंसे तत्कालस्पष्टसूर्य जिस राशिका होय उस राशिके सामने सूर्यके द्वांशकोष्ठकके नीचे अंककलादि फल लेके उसको इष्ट घंटी पल युक्त करना वह युक्त करनेके अनंतर घटी ६० से ज्यादा होय तो ६० में कम करना । अनंतर जो घटी पल बाकी रहै वह कला विकला भया अनंतर तन्मित कला विकला सारणीमें जिस अंशकोष्ठकके नीचे होंगे वह अंश और वह कला विकलाके दहने तरफ जो राशि होय तो लग्नकी राशि जानना यह स्थूल मान है परंतु स्वस्थदेशीय देशांतर रेखा धन क्षणादि देखके सारणीसे लग्न करना ।

उदाहरणः—तत्कालिक सूर्य ०।११।११।५६ यहां सूर्य मेघराशिका है इसवास्ते मेघराशिके ११ अंश कोष्ठकका फल ४।३ इसको इष्टघटी ३२ ५. १ युक्त करके ३६।४ यहां ३६।१ कला विकला यह तुलराशिके १० अंश-कोष्ठकके नीचे लिखा है इसवास्ते लग्न ६।१०।३६।१ यह स्थूल मानका लग्न जानना ।

दशमभावसारणीप्रवेश ।

केशवीमें कथित प्रमाण नतसाधनकरके सारणीमें बायें तरफ मेवादि राशिसे मीनतक १२ राशि लिखी हैं और ऊपरके तरफ ३० अंशकोष्ठक लिखे हैं उसमेंसे स्पष्ट सूर्य जिस राशिका होय उस राशिके सामने सूर्यके द्वांशकोष्ठकके नीचेका कलादि फल लेके उसको नतघटी और पल पश्चिम होय तो युक्त करना और वह घटी ६० से अधिक होय तो उसमेंसे ६० कम करना और नतघटी और पल पूर्व होय तो लिया जो अंश फल उसमेंसे कमती करना और वह अंशफलसे अधिक होय तो अंशफलके कलामें ६० युक्त करके उसमें पूर्वनतघटी पल कमती करना अनंतर जो घटी पल बाकी रहै वह कला और विकला भई अनंतर तन्मित कला विकला सारणीमें जिस

अंशकोष्ठके नीचे होय वह अंश और कला विकलाके वाम तरफ जो राशि होय वह दशम भावकी राशि जानना यह सर्वदेशोंका मध्यम मान है ।

उदाहरण:—जन्मकालिक स्पष्ट रवि ०।१३।१०। ४२ यह सूर्य मेषराशिका है इसवास्ते मेषराशिके १३ अंशकोष्ठकका फल ५।२८ इसमें जन्मकालिक पश्चिम नतघटी १५ फल ४० युक्त करके २१।८ यहां कलाविकला २१।३ यह कर्क राशिके १२ अंशके नीचे लिखा है इसवास्ते दशम यह ३।१२।२१।८ भया इसमें ६ राशि युक्त करी तो ९।१२।२१।८ यह चतुर्थ भाव भया ।

अष्टोत्तरीमहादशा ।

आर्द्रासे प्रारंभ करके मृगशिरातक २८ नक्षत्र और सूर्य चन्द्र जौम बुध शनि गुरु राहु शुक्र यह ८ ग्रहोंका कोष्ठक पृथक् पृथक् किया है उसमें महादशाकी वर्षसंख्या पापग्रहनक्षत्र ४ और शुभग्रहनक्षत्र ३ जानना दशाकी वर्षसंख्या नक्षत्रोंके विभागसे सो यह सूर्य ४ नक्षत्रोंका ६ वर्ष, इसवास्ते १ नक्षत्रका १ वर्ष ६ महीने इस प्रकारका जानना और जन्मकालिक जो दशा सो प्रथम मानके जन्मनक्षत्रकी जन्मकालतक भुक्त घटिका जो होय उसको नक्षत्रके वर्षसे गुणके गुणाकारको जन्मनक्षत्रका भुक्त भोग्य युक्त करके सर्वघटीसे भागके जो भागाकार आवे सो वर्ष और शेष रहै सो १२ से गुणके पूर्ववत् भागके भागाकार आवे सो मास और शेष रहै सो ३० से गुणके पूर्वप्रमाण भागके भागाकार आवे सो दिवस और शेष रहै सो ६० से गुणके पूर्ववत् भागके भागाकार आवे सो घटी जानना अनंतर आया जो वर्षादि भुक्तकाल और जन्मनक्षत्रके पूर्वके दशापतिके गतनक्षत्र होय तो उसकाभी भुक्तकालदशापतिके दशावर्षमेंसे कम करके शेष रहै सो वर्षादि भोग्यदशा है ऐसा जानना ।

अंतर्दशा बनानेका क्रम ।

जिस ग्रहके दशामें अन्य ग्रहकी अंतर्दशा करना है उन दोनोंके परस्पर दशावर्षोंके गुणाकारको ९ से भागके जो भागाकार आवे सो मास जानना

राहुकी महादशा वर्ष १२ अंत- र्दशा उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी.										शुक्रकी महादशा वर्ष २१ अंत- र्दशा कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर.									
रा	शु	सू	च	म	बु	श	वृ	यो		शु	सू	च	म	बु	श	वृ	रा	यो	
१	२	०	१	०	१	१	२	१२	४	१	२	१	३	१	३	२	२१		
४	४	८	८	१०	१०	१	१	०	१	२	११	६	३	११	८	४	०		
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		

इत्यष्टोत्तरीदशांस्तर्दशाचक्रम् ।

विंशोत्तरीमहादशाकरणम् ।

जन्मनक्षत्र जो होय उसकी संख्यामें २ कम करके ९ से भाग लेना शेष १।२।३।४।५।६।७।८।० तक रहेगा तब क्रमसे सूर्य, चंद्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र यह दशापति जानना और उनकी क्रमसे ६-१०-७-१८-१६-१९-१७-७-२० यह दशाकी वर्षसंख्या जानना जन्मनक्षत्रकी जन्मकालतक जो भुक्त घटी होय उसको अष्टोत्तरीमें कथित रीतिसे दशापतिके वर्षसंख्यासे गुणके और नक्षत्रका भुक्तभोग्य युक्त करके सर्वघटीसे भागके भागाकार वर्ष मास दिन घटी पल आवेगा सो दशापतिके वर्षसंख्यामेंसे कम करके शेष रहै सो वर्षादिसंख्या भोग्य है ऐसा जानना इसमें अंतर्दशा बनानेका प्रकार अष्टोत्तरीमें कहाहै सो जानना । कृत्तिकासे भरणीतक २७ नक्षत्र और दशा अंतर्दशा और प्रत्यंतर्दशाके अधिपतिके नाम और उनकी वर्षादि संख्या इनके जुदे जुदे कोष्ठक आगे लिखे हैं ।

उदाहरणः—जन्मनक्षत्र यहां उत्तराषाढ है इसकी संख्या २१ इसमें २ कम करके शेष १९ इसमें ९ से भागके शेष १ इसवास्ते सूर्यकी दशा भई अब नक्षत्रकी घटी ४७।३६ इसको ६० में कम करके १२।२४ यह १६घटी ३२ पल १ युक्त करके ४४।२५ यह भुक्त घटी भई और ७। नक्षत्र उत्तराषाढ नक्षत्रकी घटीपल ५३।३३ इसमें १२।२४ यह

युक्त करके ६५।५७ यह भोग्य भया अब भुक्त और भोग्यकी पल क्रमसे २६६५।३९५७ भुक्त पलको सूर्यका वर्ष ६ इससे गुणके १५९९० इसमें भोग्यकी पलसे भागके लब्धि ४ वर्ष, शेष १६२ इसको १२ से गुणके १९४४ यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके लब्धि ० मास, शेष १९४४ इसको ३० से गुणके ५८३२० यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके लब्धि दिन १४, शेष २८२२ इसको ६० से गुणके १७५३२० इसमें भोग्यपलसे भागके लब्धि घटी ४४, शेष १२१२ इसको ६० से गुणके ७२७२० इसमें भोग्यपलसे भागके लब्धिपल १८, एवं वर्षादि रविदशा ४।०।१४।४४।१८ भुक्त भई अथ इसको सूर्यका वर्ष ६ में कम किया तो १।११।१५।१५।४२ यह भोग्यदशा भई इसी प्रकारसे विंशोत्तरी दशा करना ।

टिप्पण—जिस दिन जन्म होय उस दिन अथवा वर्षप्रवेश होय उस दिन जो नक्षत्रकी घटी पल अभीष्ट घटी पलसे कमती होय तो उसी नक्षत्रकी घटी पलको ६० में कम करके दो जगह रसना एक स्थानमें इष्ट घटीपल युक्त करना तो भुक्त घटी हो जाय, दूसरी जगह अगले नक्षत्रकी घटीपल युक्त करे तो भोग्य होता है ।

दशाका उदाहरण ।

प्रथम रविदशा वर्षादि भोग्य १।११।१५।१५।४२ इसके नीचे जन्म-कालीन संवत् १९४३ यह वर्षमें स्पष्ट सूर्य ०।१३।१०।४२ इसको प्रथमदशा मासादि युक्त करके ११।२८।२६।२४ और संवत्में वर्ष युक्त करके १९४४ यह संवत्में ११।२८।२६।२४ यह स्पष्ट सूर्य रहते रवि-दशा पूर्ण होयके चन्द्रदशा प्रवेश भई इसी रीतिसे सब दशा प्रवेश करना तथा अंतर्दशा प्रत्यंतर्दशा करना ।

[illegible][illegible][illegible][illegible]

गुरुमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० चक्र									गुरुमध्ये शुक्रस्तन्मध्ये वि० चक्र								
के	शु	सू	च	म	रा	वृ	श	बु	शु	सू	च	म	रा	वृ	श	बु	के
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	०	०	१	१	१	१	५	१	२	१	४	४	५	४	१
१९	२६	१६	२०	१९	२०	१४	२३	१७	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	२६	२६
३६	०	०	०	२६	२४	८	१९	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये शिस्तन्मध्ये वि० चक्रम्									गुरुमध्ये अश्वस्त० वि० शा० चक्रम्								
मू	च	म	रा	वृ	श	बु	के	शु	च	म	रा	वृ	श	बु	के	शु	मू
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	१	१	१	१	०	१	२	०	०	२	२	२	०	२	०
१४	२४	१६	१६	८	१५	१०	१६	१८	१०	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	२४
१४	०	४८	१२	२०	३१	४८	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये भीमस्तन्मध्ये वि० चक्रम्									गुरुमध्ये राहुस्तन्मध्ये वि० चक्रम्								
म	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	च	र	च	श	बु	के	शु	सू	च	म
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	०	१	०	०	४	३	४	४	१	४	१	२	१
१०	४०	२४	२३	१७	१९	१६	१६	०	१	५	१०	२०	२०	१४	१०	०	०
३६	२४	४८	४८	३६	३६	०	४०	०	५	१२	४८	२४	२४	०	१०	०	२४

शानिमध्ये उत्तर्दशाचक्रम्									शानिमध्ये शानिस्तन्मध्ये वि० शा० चक्रम्								
श	बु	च	श	र	च	म	रा	वृ	श	बु	च	श	र	च	म	रा	वृ
३	८	१	३	०	१	१	२	५	२	०	०	०	०	०	०	०	०
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	०	५	०	६	१	३	२	५	४
३	९	९	०	१२	०	२	६	१	१	३	३	०	२४	०	३	१२	१४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२५	१०	३	९	१५	१०	२४	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३	३	३	०	०	३	०	०	०

शनिमध्ये बुधरतन्मध्ये विदशाष०								शनिमध्ये केतुतन्मध्ये विदशाष०									
बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
०	०	०	१	२	१	४	४	६	०	२	०	१	०	१	१	२	१
४	१	६	१	२	१	४	४	६	०	२	०	१	०	१	१	२	१
१७	२६	११	१८	२०	२६	२६	१	३	२३	६	१	१	२३	२९	२३	३	२६
१६	३१	३०	२७	४६	३१	२१	१२	२५	१६	३०	६७	१६	१६	६१	१२	१०	३१
३०	३९	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०

शनिमध्ये मृगस्तन्मध्ये विवशाच०									शनिमध्ये रविस्त० शिदशाचक्रम.								
शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	शु.	बु.	के.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	शु.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१	३	५	५	५	५	५	५	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	१७
१०	२७	५	५	२१	२	०	११	५	५	३०	५७	१८	३५	१	२७	५७	०
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	५	३०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्ये चन्द्रस्तम्भध्ये वि० च०									शनिमध्ये भौमस्तम्भध्ये वि० च०								
च.	मं.	रा.	वृ.	श.	पु.	के.	शु.	सु.	मं.	रा.	वृ.	श.	वृ.	क.	शु.	र.	च.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	३	२	१	३	०	०	१	१	२	१	०	०	०	१
१७	३	२७	१६	२०	२०	५	५	०	२३	२९	२३	३	२६	२३	५	१९	३
३०	१६	३०	०	१६	४६	१६	०	३	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०

[illegible]

बुधमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च०									बुधमध्ये शनिस्तन्मध्ये वि० च०								
वृ.	श.	वृ.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	श.	वृ.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	३	१	४	१	२	१	४	५	४	१	५	१	२	१	४	४
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३८	३०	०	०	०	३०	०	०

केतुमध्येऽतदंशचक्रम्.									केतुमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च०								
क.	शु.	१.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	वृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	वृ.
०	१	०	०	०	१	०	१	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	२	४	७	४	०	११	१	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
०	०	१	०	०	०	०	०	०	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३१

केतुमध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० च०									केतुमध्ये रविस्तन्मध्ये वि० च०								
शु.	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	वृ.	के.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	वृ.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	२१	५	२४	३	१६	६	२९	२४	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०									केतुमध्ये भौमस्तन्मध्ये वि० च०								
चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	वृ.	के.	शु.	सू.	मं.	रा.	वृ.	श.	वृ.	के.	शु.	१.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	०	१	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	८	२५	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३४	६	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	०	३०	३०	०	०	०

[illegible]

श्वेतुमध्ये ज्ञानिस्तन्मध्ये वि० च०								श्वेतुमध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० च०								
श	सु	के	शु	र	च	म	रा	बु	के	शु	सु	पं	म	रा	बु	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	०	०	१	०	१	१	१	०	१	१	०	०	१	१	१
३	२६	०	६	१२	३	२३	२९	२०	२०	२९	१७	०९	२०	२३	१७	२६
१०	३१	१	३०	६७	१६	१६	३१	३७	६९	३०	६१	१६	६१	३७	३६	३१
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

भृगुमध्येऽनर्द्धश चक्षु								भृगुमध्ये भृगुस्तन्मध्ये विदशाच.							
शु	सू	ष	म	रा	वृ	श	कु	शु	सू	ष	म	रा	वृ	श	कु
३	१	१	१	३	२	३	१	०	०	०	०	०	०	०	०
४	०	८	२	०	८	२	०	६	२	३	२	६	५	६	९
०	०	०	०	०	०	०	०	२०	०	१०	१०	०	१०	२०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये रविस्तन्मध्ये वि० च०							शुक्रमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०							
र.	व.	म.	रा.	बृ.	श.	कु.	थ.	म.	रा.	बृ.	श.	कु.	के.	सु.
१८	१		१	१	१	२	१	१	३	२	३	२	१	३
		२१	२४	१८	२७	२१	२०	६		२०	९	२५	६	१०

शुक्रमध्ये भौमस्तन्मध्ये वि० च०									शुक्रमध्ये राहस्तन्मध्ये वि० च०								
मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सु.	चं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सु.	चं.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	१	२	१	०	२	०	१	६	४	६	६	२	६	१	३	२
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	६	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये शुहस्तन्मध्ये वि० च०									शुक्रमध्ये शनिस्तन्मध्ये वि० च०								
वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सु.	चं.	मं.	रा.	श.	बु.	के.	शु.	सु.	चं.	मं.	रा.	वृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	६	४	१	६	१	२	१	४	६	६	२	६	१	३	२	६	६
८	९	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	०	११	६	१०	२४	६	६	२१	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० च०									शुक्रमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च०								
बु.	के.	शु.	सु.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	के.	शु.	सु.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	६	१	२	१	६	४	६	०	२	०	१	२	१	२	१	१
२४	२९	२०	२१	२६	२९	३	१६	११	२४	१०	२१	६	२४	३	२६	६	२९
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

योगिनीदशाक्रम ।

जन्मनक्षत्र जो होय उसमें ३ अंक युक्त करके ८ से भाग देना रोष अंक १।२।३।४।५।६।७।८ तक रहेगा तब क्रमसे मंगला पिंगला धाम्या भामरी भद्रिका उल्का सिद्धा संकटा यह योगिनीके नाम जानना और उनकी क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ यह वर्षसंख्या जानना और जन्मनक्षत्रके भुक्तभोग्यघटीप्रमाण जन्मकालिक दशावर्षसंख्यामेंसे अष्टोत्तरीमें लिखे प्रमाण भुक्त और भोग्य दशा बनाना ।

सिद्धादशमध्योऽतर्दशाचक्रम् ।												संवत्सामध्योऽतर्दशाचक्रम् ।											
सि.	सं.	मं.	पि.	घा.	आ.	म.	उ.	सं.	मं.	पि.	घा.	आ.	म.	उ.	सि.								
१	१	०	०	०	०	०	१	१	०	०	०	०	१	१	१								
४	६	२	४	७	९	११	२	९	२	६	८	१०	१	४	६								
१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	३								
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०								
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०								

जन्मपत्रिका लिखनेका क्रम ।

प्रथम मंगलश्लोक, आशीर्वादश्लोक, रक्षार्थ श्रीरामचन्द्रजन्मकुंडली तथा कृष्णचन्द्रजन्मकुंडली, अनंतर संवत्, शक, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, दिनमान, रात्रिमान, इष्टकाल घटीपल इस प्रकारसे जन्मसमय लिखना अनंतर मध्यमादि स्पष्टग्रह और लग्न लिखना अनंतर जन्मकुंडली ग्रहस्थापनपूर्वक लिखके संवत्सरादिफल लिखना अनंतर चन्द्रा-शिकुंडली लिखके फल लिखना तन्वादि द्वादशभाव संधिसहित लिखके ग्रहोंका क्षय चय फल लिखना भावकुंडली लिखके भावगत ग्रहफल और भावस्वामि-गत फल और भावलग्रफल और लग्नस्वामिफल लिखना सप्तवर्गचक्र फलसहित लिखना ग्रहोंकी परस्परदृष्टि और भावोंपर ग्रहदृष्टि लिखना अनंतर पञ्चवर्गकुं-डली ग्रहसहित लिखना नैसर्गिक तात्कालिक पंचधामैत्री लिखना और ग्रह-भाव सप्तवर्गचक्र और ग्रहोंके स्थान, दिक्, काल, नित्यगंचेष्टा, द्युबल और भावबलभौ लिखना तन्वाद्विद्वादशभाव विचारफल और ग्रहदृष्टि फल और रिष्टा-रिष्टभंग, राजयोग, राजयोगभंगादि, सुनफा, अनफा, दुरधरा, केमद्रुम, नामस योगादिसंभव योगफल और सर्वतोभद्र चक्र, सूर्यकालानल, चन्द्रकालानल, अष्टवर्गादिचक्र और यमदंष्ट्राचक्र और फल और राशिफल और दीपादि और बालादि जाग्रतादि ग्रहोंकी अवस्थाफलसहित और इष्टकलादि और इष्टकष्टदृष्टि और इष्टकष्टबल और ग्रहदृष्टिकष्ट और आयुर्दृश्य दशाविभाग फलसहित और दशांग अंतर्दशा और विदशा और उपदशा फलसहित लिखना अनंतर विंशो-

चरीदशा फलसहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फलसहित लिखना और योगिनी-
दशा अंतर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोचरी दशा लिखना ।

कविवंशप्रशंसा स्रग्धराछन्दसा ।

आदौ ब्रह्मा ततो दिग्द्विजनिष्करभवा ब्राह्मणा गोडवर्पा-
स्तद्भारद्वाजगोत्रे प्रथितगुणगणः सुन्दरो लाटयुक्तः ॥

आसीत्तस्यापि पुत्रो प्रकटसमुद्रयावासतुर्लब्धकीर्तिं
यच्छोशील्यादियुक्तं शुभगुणनिचयं भूरि लोका गृणन्ति ॥ १ ॥

भाषा:—(अब कविके वंशकी प्रशंसा कही जाती है स्रग्धराछन्दसे)
पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दश प्रकारके ब्राह्मण भये तिनमें गौड द्विजश्रेष्ठ भये
तिनके शुभ भारद्वाजगोत्रमें विख्यात गुणगणवान् सुन्दरलाटर्जा भये और
तिनके पुत्र जो प्रकटित भाग्योदयवाले और लब्धकीर्तिवान् जिनके सुशीलपन
आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतमे लोग गान कर रहे हैं ॥ १ ॥

शिवो दयालुयुक् शिवः सहायवान् सुताबुभौ

तदीयपुत्रतां गतौ सुयुग्मको तु पंडितो ॥

महद्गरीयगौरवो त्रिकालवाचकाबुभौ

समापतुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिकं यशः ॥ २ ॥

भाषा:—ऐसे शिवश्यालुजी शिवसहायजी दोनों पुत्र तिनके पुत्र युग्मक
बोडीवाले पंडित प्रसिद्ध भये, जो महाभारो गौरववान् और त्रिकालवक्ता
ज्योतिर्विद जिन्होंने पट्टालपाथीय श्रीमन्नरेन्द्रसिंह महाराजके राज्यसे बहुत
यश कीर्ति यथा महान् आजोवनोदय पाया ॥ २ ॥

दुर्गाप्रसादश्च तथा भवानीसहाय एतौ महदात्तकामौ ॥

जनाभिरामो नृपतिप्रधानौ ज्योतिर्विदावाप्तवरात्तमानौ ॥ ३ ॥

भाषा:—सो दुर्गाप्रसाद और भवानीसहाय ये दोनों परिपूर्णकामें भये जो
जनोंको अभिराम आनंद देनेवाला जो राज्यमें प्रधान मुख्य ज्योतिषी प्राप्तमान
सन्मान अर्थात् भारी प्रतिष्ठित भये ॥ ३ ॥

अथो शिवसहायस्य सुतावेतौ महामती ॥

लक्ष्मीनारायणश्चाथ ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥ ४ ॥

भाषा:—फिर तिन शिवसहायनीके महान् बुद्धिवान् लक्ष्मीनारायण और ज्योतिर्विज्जगदीशसभां पुत्र हैं ॥ ४ ॥

ज्योतिर्विज्जगदीशोऽसौ जगदीशप्रतोपदम् ॥

केशवाधार्यपरकृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥ ५ ॥

भाषा:—ज्योतिर्विज्जगदीशप्रसाद शर्माने जगदीश (नारायण) को सुष्टि (प्रसन्नता) देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्य भाषासे विभूषित करके केशवभगवान्के अर्थ समर्पण किया अथवा केशव-देवतावर्यकी पूजामें अर्पण किया यह भी श्लेष है ॥ ५ ॥

त्रिपंचाकेन्दुवर्षे सदैकमीये नभस्सिते ॥

मृगिरोदाहतिः पूर्णा पूर्णिमायां खेदिने ॥ ६ ॥

भाषा:—संवत् १९५३ आषण शुद्ध पूर्णिमा रविवारको शुभ भारतभूमिमण्डलांतर्गत प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थ नगरसे पश्चिमकोणस्थ आर्चिक शैलतलपर्वि-नन्दप्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्यायकुलोद्भव ज्योतिर्विज्जगदीशप्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण मनुष्य भाषासे विभूषित समान भया सो समको सदा सुखादि देवो ॥ ६ ॥

मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलम् ॥

मंगलं सर्वलोकानां भूयोभूयोस्तु मंगलम् ॥ ७ ॥

मंगलं भगवान् विष्णुर्मंगलं गरुडवजः ॥

मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलापवनो हरिः ॥ ८ ॥

चरीदशा फलसहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फलसहित लिखना और योगिनी-
दशा अंतर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोत्तरी दशा लिखना ।

कविवंशप्रशंसा स्रग्धराछन्दसा ।

आदौ ब्रह्मा ततो दिग्द्विजनिष्करभवा ब्राह्मणा गोडवर्था-
स्तद्भारद्वाजगोत्रे प्रथितगुणगणः सुन्दरो लालयुक्तः ॥

आसीत्तस्यापि पुत्रो प्रकटसमुद्रयावासनुर्लब्धकीर्ती
यच्छोशील्यादियुक्तं शुभगुणनिचयं भूरि लोका गृणन्ति ॥ १ ॥

भाषा:—(अब कविके वंशकी प्रशंसा कही जाती है स्रग्धराछन्दसे)
पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दश प्रकारके ब्राह्मण भये तिनमें गौड द्विजश्रेष्ठ भये
तिनके शुभ भारद्वाजगोत्रमें विख्यात गुणगणवान् सुन्दरलालजी भये और
तिनके पुत्र जो प्रकटित भाग्योदयवाले और लब्धकीर्तिवान् जिनके सुशीलपन
आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतसे लोग गान कर रहे हैं ॥ १ ॥

शिवो दयालुयुक्त शिवः सहायवान् सुताबुभौ

तदीयपुत्रतां गतो सुयुग्मको तु पंडितो ॥

महद्वरीयगौरवो त्रिकाटवाचकाबुभौ

समापसुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिकं यशः ॥ २ ॥

भाषा:—ऐसे शिवस्यालजी शिवसहायजी दोनों पुत्र तिनके पुत्र युग्मक
बोडीवाले पंडित प्रसिद्ध भये, जो महाभारत गौरववान् और त्रिकाटवाक्का
ज्योतिर्वित् जिन्होंने पट्टालयाधेश श्रीमन्नरेन्द्रसिंह महाराजके राज्यसे बहुत
यश कीर्ति यथा महान् आज्ञावनोदय पाया ॥ २ ॥

दुर्गाप्रसादश्च तथा भवानीसहाय एतो महदाप्तकामो ॥

जनाभिरामो नृपतिप्रधानो ज्योतिर्विदावास्तुरात्तमानो ॥ ३ ॥

भाषा:—सो दुर्गाप्रसाद और भवानीसहाय ये दोनों परिपूर्णकाम भये जो
जनोंको अतिराम आनंद देनेवाला जो राज्यमें प्रधान मुख्य ज्योतिषी मानमान
सन्मान धर्मात् भारी पतिष्ठित भये ॥ ३ ॥

अथो शिवसहायस्य सुतावेतौ महामती ॥

लक्ष्मीनारायणश्चाथ ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥ ४ ॥

भाषा:—फिर तिन शिवसहायजीके महान् बुद्धिवान् लक्ष्मीनारायण और ज्योतिर्वित् जगदीशशर्मा पुत्र हैं ॥ ४ ॥

ज्योतिर्विज्जगदीशोऽसौ जगदीशप्रतोपदम् ॥

केशवापार्षयस्कृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥ ५ ॥

भाषा:—ज्योतिर्वित् जगदीशप्रसाद शर्मणे जगदीश (नारायण) को तुष्टि (प्रसन्नता) देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्य भाषासे विभूषित करके केशवजगवान्के अर्थ समर्पण किया अथवा केशव-रक्षकवर्यकी पूजामें अर्पण किया यह भी श्लेष है ॥ ५ ॥

त्रिपंचाकेन्दुवर्षे सदैकमीये नभस्सिते ॥

तृगिरोदाहृतिः पूर्णा पूर्णिमायां रवेर्दिने ॥ ६ ॥

भाषा:—संवत् १९५३ आवण शुक्ल पूर्णिमा रविवारको शुभ भारतभू-मिमण्डलांतर्गत प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थ नगरसे पश्चिमकोणस्थ आर्षिक शैलतल्लयति-नन्दप्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्यायकुलोद्भव ज्योतिर्वित् जगदीशप्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण मनुष्य भाषासे विभूषित समाप्त भाषा से सबको सदा सुखादि देवो ॥ ६ ॥

मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलम् ॥

मंगलं सर्वलोकानां भूयोभूयोस्तु मंगलम् ॥ ७ ॥

मंगलं भगवान् विष्णुर्मंगलं गरुडध्वजः ॥

मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ॥ ८ ॥

अब सूर्यसे लग्नसे इष्टकाल करनेकी रीति ।

अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो ।

युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥ १ ॥

भाषा:—स्वष्ट सूर्यमें अयनांशा युक्त करके उसको राशिविना ३० अंशमें कम करके जो राशि ऊपर होय उसके प्रमाण स्वदेशीय लग्नमानसे गुणके भोग्य पल करना और लग्नमें अयनांश युक्त करके उसके ऊपर जो राशि होय उसके प्रमाणसे भुक्त पल करके फिर लग्नकी राशिसे सायनसूर्यकी राशितक स्वदेशीय लग्नमानका ऐक्य करके उसमें भुक्त और भोग्य पल युक्त करके ६० से भाग देना तो इष्टकालचदीपल स्वष्ट होता है ।

टिप्पण:—जो सायन सूर्यकी राशिसे सायनलग्नकी राशितक स्वदेशीय लग्नका ऐक्य करे तो सूधा लग्न लेना और सायन लग्नकी राशिसे और सायन सूर्यकी राशितक लग्नका ऐक्य करे तो उलट लग्न लेना ।

उदाहरण:—स्वष्ट सूर्य ०।१३।१०।४२ इसमें अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके १।५।५४।४५ इसको ३० अंशमें कम करके १।२४।५।१५ इससे ऊपरके कहे प्रमाण भोग्य साधन किया तो १९५ अब लग्न ६।९।४२। २६ इसमें अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके ७।२।२६।२९ इससे भुक्त पल साधन किया तो २८ अब सायन सूर्य वृष राशिका है इसवास्ते मिथुन लग्नका ३०० कर्कका ३४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ तुलका ३४८ इनका ऐक्य १६९७ इसमें भुक्त भोग्य पल युक्त करी और इसको ६० का भाग दिया तो लब्ध ३२ शेष ० यह पल पूर्वतुल्य इष्ट भया इसी प्रमाणसे सूर्य लग्नसे इष्टकाल करना ।

जो सायन सूर्य और सायन लग्न एक राशिमें होय तो इनका अंतर करके उसको सायन सूर्यके उदयसे गुणके ३० से भाग देना जो भागाकार आवे सो पलान्तमक अतीष्टकाल होता है जो सायनसूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होय तो पूर्वप्रमाण साधन किया जो कला सो ६० मेंसे कम करना तो इष्टकाल होता है ।

अथ रवेष्टवर्गीकाः ४८.								चन्द्रस्याष्टवर्गीकाः ४९.							
सू.	च.	मं.	वृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	म.	वृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.
१	३	१	३	५	६	१	३	१	२	१	१	३	५	३	३
२	६	२	५	६	७	२	६	३	३	३	५	७	६	६	६
४	१०	४	६	११	४	६	६	६	५	४	७	५	६	१०	७
७	११	७	९	११	७	७	१०	७	६	५	८	७	११	११	८
८	०	८	१०	०	८	११	१०	१०	९	७	१०	९	०	०	१०
९	०	९	११	०	९	१२	११	११	१०	८	११	१०	०	०	११
१०	०	१०	१२	०	१०	०	०	११	१०	१२	११	०	०	०	११
११	०	११	०	०	११	०	०	०	११	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भीमस्याष्टवर्गीकाः ३९.								बुधस्याष्टवर्गीकाः ५२.							
मं.	वृ.	शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	वृ.	शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	वृ.
१	३	६	६	१	१	३	३	१	६	१	१	५	७	१	३
२	६	१०	८	४	५	६	६	३	८	२	२	६	५	२	६
४	६	११	११	७	६	६	११	५	११	३	४	९	६	४	७
७	१२	१२	१२	८	१०	१०	०	६	१२	४	७	११	८	७	८
८	०	०	०	९	११	११	०	९	०	५	८	११	१०	८	९
१०	०	०	०	१०	०	०	०	१०	०	८	९	११	०	०	१०
११	०	०	०	११	०	०	०	११	०	९	१०	१२	०	०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	१२	०	११	११	०	०	०	११
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरोरष्टवर्गीकाः ५६								शुक्रस्याष्टवर्गीकाः ३९.							
वृ.	शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	वृ.	शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	वृ.	वृ.
१	२	३	१	१	२	१	१	१	३	२	८	१	३	३	५
२	५	५	२	२	५	२	२	२	४	३	११	२	५	५	८
३	६	६	३	३	७	३	३	३	५	४	१२	३	६	६	९
४	९	१२	५	४	९	७	५	४	८	५	०	४	९	९	१०
७	१०	०	६	७	११	८	६	५	९	८	०	५	११	११	११
८	११	०	७	८	०	१०	९	८	१०	९	०	८	१२	०	०
१०	०	०	९	९	०	११	१०	९	११	११	०	९	०	०	०
११	०	०	१०	१०	०	०	११	१०	०	०	०	११	०	०	०
०	०	०	११	११	०	०	०	०	०	०	०	१२	०	०	०

शनेष्टर्गिकाः ३९.								लग्नस्याष्टर्गिकाः ४८.							
श.	छ.	सू.	च.	म.	बु.	वृ.	शु.	छ.	सू.	च.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.
३	३	१	३	३	६	६	६	३	१	३	१	३	६	६	१
६	५	३	६	६	८	६	११	४	२	६	२	६	६	७	२
६	६	४	११	६	९	११	१२	८	४	१०	४	६	९	१२	४
११	९	७	०	१०	१०	१२	०	१०	७	११	७	९	११	०	७
०	१०	८	०	११	१२	०	०	११	८	०	८	१०	०	०	८
०	११	१०	०	१२	०	०	०	१२	९	०	९	११	०	०	९
०	०	११	०	०	०	०	०	१०	०	१०	१२	०	०	०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	१२	०	११	०	०	०	०	११

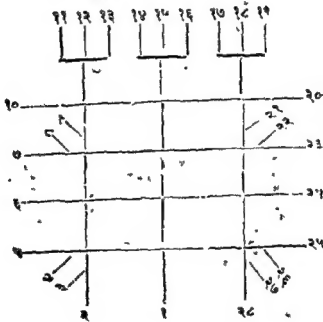
अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अ.	छ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.	आ.
म.	छ.	अ.	घ	क.	ह.	छ.	ऊ.	म.
अ.	छ.	ल.	२	३	४	ल.	म.	पु.
२.	च.	१	ओ.	न.	ओ.	६	ट.	छ.
४.	द.	१२	रि.	पु.	म.	६	प.	ह.
पू	स.	११	अः	ज.	अं.	७	१.	वि.
श.	ग.	९.	१०	९	८	ए.	त.	स्वा.
घ	म.	ख.	ज.	म.	य.	न.	.	वि.
ह.	श्र.	अ.	छ.	पू.	मू.	ज्ये.	अ.	ह.

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ॥ विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः
 मरणप्रकारकम् ॥ १ ॥ यान्योत्तराः भागपराश्च कीदृशा नवान्न चक्रे सुधिया
 विधेयाः ॥ स्वरक्षणादिकर्मत्र लेख्यं प्रसिद्धमावाच मया निरुक्तम् ॥ २ ॥
 भूमौ भवेद्रेऽक्षरजे च हानिवर्षाधिः स्वरे भीत्य तिथौ निरुक्ता ॥ राशौ च वेधे
 सति विघ्नमेव जंतुः कथं जीवति पंचविधे ॥ ३ ॥ भारण्यकारौ वृषभं च नृदां
 भद्रां तकारं भवणं विशाखाम् । तुलां च विद्धेद्वनलक्षसंस्थो ग्रहोक्तचक्रे गदितं
 स्वरक्षैः ॥ ४ ॥ वकारमौकारमुकारदाक्षे स्वातीरकारं मियुनं च कन्याम् ॥
 तथाभिजितसंज्ञकं च विद्धे ब्रह्मसंस्थो हि नभश्चरेन्द्रः ॥ ५ ॥ कर्क ककारं

च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारम् । अकारकं वैश्वभमत्र विद्धेदलं
नभोमंडलगो मृगस्थः ॥ ६ ॥ एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वक्षयश्चिन्तनीयः
सुधीभिः ॥ दद्याद्वेधः सत्फलं सौम्यजातोऽत्यंतं-कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥
यस्मिन्वृक्षे संस्थितो वेधकर्ता पापः खेदः सोऽत्यंतं याति यस्मिन् ॥ बाले
तस्मिन् मंगलं पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

॥ सूर्यकालानलचक्रम् ॥

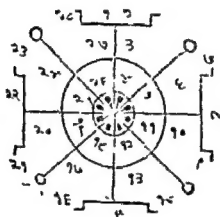


सूर्यकालानलचक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत् ॥ तदहं विशदं वक्ष्ये च परकृतिकरं
परम् ॥ १ ॥ त्रिशुलकाशाः सरलाश्च तिस्रः किलोर्ध्वरेखाः परिकल्पनीयाः ॥
रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च कोणोपरिगे विधेये ॥ २ ॥ त्रिशुलकोणांतर-
गान्यरेखा तदप्रयोः शृंगयुता विधेयम् ॥ मध्ये त्रिशुलस्य च देडमूलात्मध्येन
आन्पर्कजनोऽभिजिच्च ॥ ३ ॥ स्वनामभे यत्र गतं च तत्र परलनीयं
सदसत्फलं हि । तल्लेख्यञ्ज्ञातये क्रमेण चिन्ता चक्षुःप्रतिबिम्बानि ॥ ४ ॥

श्रीपदमे रक् च भवेति ज्ञं शृलेषु मूलं परित्यनीयम् मेपेष्ट धिष्णेष्ट जयश्च
 स्त्रानोऽभीष्टार्थमिद्विर्बहुधामराणाम् ॥ ५ ॥ श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्वदे च वादे
 चरणे प्रयाणे ॥ प्रयत्नपूर्वं ननु चिन्तनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥

इति सूर्यकालानलचक्रम् ।

अथ चन्द्रकालानलचक्रम् ।



रुकोऽके प्रविशोऽव वृत्तं तस्मिन् पूर्वापरमाग्नसौम्यैः ॥ वृत्ताद्वह्निःसं-
 चालिते विधेये रेखात्रिशुभाश्च तदक्षकेषु ॥ १ ॥ कोणश्च रेखाद्वितियेन साध्या
 पूर्वत्रिशुले क्लिप्त मध्यसंस्थम् ॥ चान्द्रं लिखेद्रं तदनुक्रमेण सधयेन धिष्णानि
 चहिस्तदने ॥ २ ॥ कालानलं चक्रमिदं हि चान्द्रं रणप्रयाणादिषु जन्मभं चेत् ।
 त्रिशुलपंस्थं निधनाय नूतनमर्धहस्तं त्वशुतमर्धं हि ॥ ३ ॥

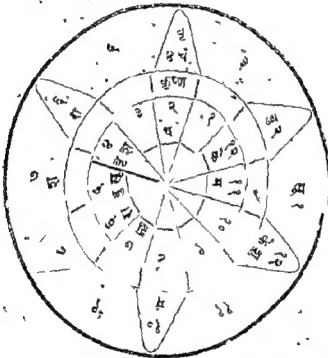
श्रीरामचन्द्रस्य जन्मकुण्डली ।

हिमांशोर्भेऽङ्गेऽञ्जसुरगुरुरिपौ राहुरनुजे-
 ऽन्धिगो मन्दः पुण्ये शिखियुगुशनास्तेऽवनिमुतः ॥
 रवो स्वस्थे सौम्ये शिवभवनगे मासि मधुके
 सिते मध्याह्नेऽभूद्रघुवरजनिर्विश्वसुखदा ॥ १ ॥

श्रीकृष्णचन्द्रस्य जन्मकुण्डला ।

भाद्रे मासि सिते तरे वसुतिथौ ब्राह्मे वृषेऽब्धौ विधौ
लग्नस्थे सशनौ गुरौ सदजगेऽम्बुस्थे स्वौ सेन्दुजे ॥
राहो पंचमगे भृगौ रिपुगते भौमे नृपस्थे ध्वजे
लाभे रात्रिदले बभूव कमलाधीशवतारो बुधे ॥ २ ॥

उत्तपोर्जन्मलघ्ने ।



इति भाषोदाहरणसहितं केशवीजातकं समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
“लक्ष्मीविकटेश्वर” स्टीम प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
“श्रीविकटेश्वर” स्टीम प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.

जाहिरात:

ज्योतिष-ग्रन्थ.

की. ह. आ.

अयोध्याजातक-भाषाटीकासमेत ... ०-४

अर्धप्रकाश-भाषाटीकासमेत । इसमें तेजी मन्दी वस्तु देखनेका विचार भलीभाँति लिखा गया है. ... ०-२

ध्यानन्दप्रकाश-भाषाटीकासमेत । यह ग्रन्थ ज्योतिषियोंको अतीव उपयोगी है । इसमें-रोगकी स्थिति, असाध्यरोग किसप्रकार शान्त होगा तथा रोगमुक्ति, स्नानदानादि कितनेही उत्तम विषय लिखे गये हैं. ... ०-३

भार्गवटीय-(ज्योतिषशास्त्र) संस्कृतटीका भाषाटीकासमेत ... १-०

कर्णकुतूहल-सटीक तथा उदाहरणसहित । ब्रह्मपक्षीय गणित ग्रन्थ ... ०-१०

करणेन्दुशेखर-इसमें रव्यादि ग्रहोंकी सारणी भलीभाँति दी गई है । तथा सिद्धांतोक्त सब विषय संक्षेपमें इसमें आगये हैं ... ०-३

क्रीडाकौशल्य-भाषाटीकासमेत । इसमें-मुहूर्त, प्रश्न, मन्त्र-यन्त्रादि साधन पाँशे, गँजीफे, ताश, दशावली, ज्ञानपद, श्मशानदूत, साक्षिक्रीडा, विधिक्रीडा, इष्टदेवतादर्शन, शतरंजके अनेक प्रकारके विचित्र खेल और बालक्रीडा, रासक्रीडा आदिका वर्णन चित्रोंसमेत है ग्लेज कागज ... २-०

" तथा रफ कागज ... १-१२

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीविकटेश्वर" छापाखाना,

फाल्गुण-मुंबई.